सम्पादक—
श्रीवासुदेव "दैवज्ञवाचस्पति"

श्रीः

भूमिका (प्रवेश पद्धति)

संसार में कहीं अन्धकार, कहीं प्रकाश, कहीं शीत, कहीं ताप, कहीं दिन, कहीं रात, कहीं सुभिक्ष, कहीं दुर्भिक्ष, कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि, कहीं सुख कहीं दुःख इत्यादि वस्तु मात्र में प्रतिद्वन्दिता और उत्पत्ति विनाश को देखकर हमारे पूर्वज महर्षि (वैज्ञानिक) जनों ने इन सब विषयों के कारण का पता लगाया कि—आकाशस्थ सूर्य चन्द्र आदि ग्रहों और अनेक तारा पुञ्जों के परिभ्रमण वश उनके विभिन्न रश्मियों के संयोग से ही ऊपर कहे हुए संसारी पदार्थों में प्रतिक्षण विलक्षणता होती रहती है। और भी स्पष्ट पता लगाया कि—ग्रहों और नक्षत्रों में कुछ अमृतरश्मि और कुछ विषरश्मि हैं। पृथ्वी पर जहाँ अमृत रश्मि पड़ते हैं वहाँ सुवृष्टि, सुभिक्ष, सुख और जहाँ विषरश्मि पड़ते हैं वहाँ अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, दुःख होते हैं।

यह बात तो आपामर प्रत्यक्ष है कि—सूर्य के परिभ्रमण वश ही दिन रात, अन्धकार, प्रकाश, शीत और ताप आदि का चक्रवत् परिभ्रमण होता रहता है। तथा समय में भी प्रतिक्षण विलक्षणता (विभिन्नता) होती रहती है। फिर भी प्रतिचक्र (प्रतिवर्ष) सूर्य की रश्मियों में भी समानता नहीं रहती, इसका कारण भी अन्य (चन्द्र, मङ्गल आदि) ग्रहों एवं विभिन्नताराओं के किरणों का सम्पर्क होना है।

ग्रह और नक्षत्रों की स्थिति—

आकाश में जितने ज्योतिषपिण्ड (ग्रह नक्षत्र) देखने में आते हैं उनमें नक्षत्रों की कक्षा अनन्त दूरी पर है। पृथ्वी से उसकी दूरी के प्रमाण का पता लगाना-गणितादि क्रिया द्वारा असम्भव है। नक्षत्र कक्षा के नीचे ग्रहों की

तिक्तरस प्रिय, पशुओं की भूमि में रहनेवाला, पित्तप्रकृति, धूम्र-पाटल (श्वेत रक्त मिला) वर्ण, मूल (धान्य आदि) का अधिष्ठाता तथा वनचरों का स्वामी है।

चन्द्र स्वरूप

वैश्यः शशी स्त्री जलभूस्तपस्वी गौरोऽपराह्णाम्बुगधातुसत्त्वम्।
वायव्यदिक्श्लेष्मभुजङ्गरूप्यस्थूलो युवा क्षारशुभः सिताभः॥

भावार्थः—चन्द्रमा-वैश्य, स्त्री, जलार्द्रभूमिचारी, तपस्वी, गौरवर्ण, अपराह्ण में बली, जलचरों का स्वामी, धातु (गैरिकादि) का स्वामी, सत्वगुणी, वायव्य, दिशा का स्वामी, कफप्रकृति, सर्पों का स्वामी, रूपा (चाँदी) का स्वामी, अत्यन्त पुष्ट, युवा, लवणरस प्रिय, शुभग्रह और श्वेत वर्ण है।

मङ्गल स्वरूप

भौमस्तमः पित्तयुवोग्रवन्यो मध्याह्नधातुर्यमदिक् चतुष्पात्।
ना राट् चतुष्कोणसुवर्णकारो दग्धाऽवनीव्यङ्गकटुश्च रक्तः॥

भावार्थः—मङ्गल-तमोगुणी, पित्तप्रकृति, युवा, उग्र पापग्रह, वनचरों का स्वामी, मध्याह्न में बली, धातु, दक्षिण दिशा का स्वामी, पुरुष, राट् (क्षत्रिय), चतुष्कोण आकृति, सुनारों का स्वामी, दग्धभूमि में रहनेवाला, अङ्गरहित, कटु-रसप्रिय और रक्त वर्ण है।

बुध स्वरूप

ग्राम्यः शुभो नीलसुवर्णवृत्तः शिश्विष्टकोच्चः समधातुजीवः।
श्मशानयोषोत्तरदिक्प्रभातं शूद्रः खगः सर्वरसो रजो ज्ञः॥

भावार्थः—बुध-ग्राम में रहनेवाला, शुभग्रह, नीलवर्ण, सुवर्ण द्रव्य का स्वामी, गोलाकृति, बाल्यावस्थावाला, उच्च स्थान प्रिय, समधातु (तुल्य कफ-पित्त-वातवाला) जीवों का स्वामी, श्मशान भूमिचारी, स्त्री-ग्रह, उत्तरदिशा का स्वामी प्रातःकाल में बली, शूद्रवर्ण, पक्षियों का स्वामी, सर्वरसप्रिय और रजोगुणी है।

बृहस्पति स्वरूप

गुरुः प्रभाते नृ-शुभैशदिग्द्विजः पीतो द्विपाद्-ग्राम्यसुवृत्तजीवः ।
वाणिज्यमाधुर्यसुरालयेशो वृद्धः सुरत्नं समधातु-सत्त्वम् ।

भावार्थः—बृहस्पति-प्रातःकाल में बली, पुरुष, शुभग्रह, ईशानदिक् स्वामी, ब्राह्मण, पीतवर्ण, द्विपद, ग्राम में रहनेवाला, सुवृत्त (गोल आकृति), जीवों का स्वामी, व्यापार करनेवाला, मधुर-रसप्रिय, देवालय का स्वामी, वृद्ध, रत्नों का स्वामी, समधातु (तुल्य कफ-पित्त-वात), और सत्त्वगुणी है ।

शुक्र स्वरूप

शुक्रः शुभः स्त्री जलगोऽपरान्हः श्वेतः कफी रूप्यरजोऽम्लमूलम् ।
विप्रोऽग्निदिङ्मध्यवयो रतीशो जलावनीस्निग्धरुचिर्द्विपाच्च ॥

भावार्थः—शुक्र शुभग्रह, स्त्री, जलचारी, अपराह्न में बली, श्वेतवर्ण, कफ-प्रकृतिवाला, रूपों का स्वामी, रजोगुणी, अम्ल (खट्टा) रसप्रिय, मूलों का स्वामी, ब्राह्मण, अग्निदिशा का स्वामी, मध्यम आयुवाला, रतीश (क्रीडा प्रिय), जल भूमि में रहनेवाला, स्निग्ध रुचिवाला और द्विपद है ।

शनि स्वरूप

शनिर्विहङ्गोऽनिलवन्यसन्ध्याशूद्राङ्गनाधातुसमः स्थिरश्च ।
क्रूरः प्रतीची तुवरोऽतिवृद्धोत्करक्षितीट् दीर्घसुनीललोहम् ॥

भावार्थः—शनि-पक्षियों का स्वामी, अनिल, (वायु तत्त्व), वन जन्तुओं का स्वामी, सन्ध्या काल में बली, शूद्र, स्त्रीग्रह, धातुसम, स्थिर, पापग्रह, पश्चिम-दिशा का स्वामी, कषाय रसप्रिय, अत्यन्त वृद्धावस्था, निकृष्टभूमि का स्वामी, लम्बा आकारवाला, नीलवर्ण और लोहे का स्वामी है ।

राहु स्वरूप

राहुस्वरूपं शनिवन्निषादजातिर्भुजङ्गोऽस्थिपनैऋतीशः ।
केतुः शिखी तद्वदनेकरूपः खगस्वरूपात्फलमूह्यमित्थम् ॥

भावार्थः—राहु का स्वरूप शनि के सदृश ही है, निषाद जाति औ सर्प, हड्डी, तथा नैऋत दिशा का स्वामी है। केतु भी उसी प्रकार है विशेष— शिखावान् और अनेक प्रकार के रूप वाला है। ग्रहों के स्वरूप से ही जन्म, वर्ष और प्रश्नकाल में फल विचार करना चाहिये। उदाहरण आगे स्पष्ट देखिये।

संक्षिप्त ग्रहबल—

साधारणतया ग्रहों के बल ४ प्रकार के होते हैं। यथा—

(१) स्थानबल, (२) दिग्बल, (३) कालबल और (४) नैसर्गिक बल।

स्थानबल—"स्वोच्च सुहृत स्वत्रिकोण नवांशै :
स्थान बलं स्वगृहोपगतैश्च।"

अपने उच्च, मित्र की राशि, अपने मूलत्रिकोण, नवांश (अपने नवांश आदि वर्ग), और अपनी राशि में ग्रह स्थान बली होते हैं।

बलों के कलात्मक प्रमाण—

परमोच्चस्थान में—६०, अपने मूलत्रिकोण में ४५, अपने गृह आदि में ३०, अधिमित्र में २०, मित्र में १५, सम में १०, शत्रु ५, अधिशत्रु में ० होता है।

उच्च बल—(चक्र नं १)

उच्चस्थान में पूर्णबल ६० होता है उसके आगे पीछे क्रमशः ह्रास होकर नीच से ० शून्य हो जाता है।

उच्च	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
६०	५०	४०	३०	२०	१०	०	१०	२०	३०	४०	५०

ग्रहादि षडवर्गबल–(चक्र नं० २)

स्वत्रिको	स्वगृह	अधि.मि	मित्र	सम	शत्रु	अधि.श.
४५	३०	२०	१५	१०	५	०

इसी प्रकार—राशि, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, और त्रिंशांश से भी बल लेना चाहिए। सामान्यतया केवल राशिबल से ही बल लेने की परिपाटी है।

दिग्बल—(चक्र नं० ३)

"दिक्षु बुधांगिरसौ रविभौमौ
सूर्यसुतः सितशीतकरौ च ॥"

बुध और गुरु पूर्वदिशा (१२, लग्न, २ भावों में), सूर्य और मङ्गल दक्षिण दिशा (९, १०, ११ भावों) में, शनि पश्चिम दिशा (६, ७, ८ भावों) में दिशा चन्द्र और शुक्र ये उत्तर दिशा (३, ४, ५ भावों) में बली होते हैं। अपनी २ दिशा के मध्य भाव में पूर्णबल उसके आगे-पीछे के स्थानों में क्रमशः बल में अल्पता समझनी चाहिए।

बु० गु०		सू० मं०		श०		चं० शु०		बल
१ लग्न		१० भाव		७ भाव		४ भाव		६०
१२	२	११	९	८	६	५	३	५०
११	३	१२	८	९	५	६	२	४०
१०	४	१	७	१०	४	७	१	३०
९	५	२	६	११	३	८	१२	२०
८	६	३	५	१२	२	९	११	१०
७		४		१		१०		०

कालबल—(चक्र नं० ४)

निशायां बलिनश्चन्द्र-कुज-सौरा भवन्ति हि।
सर्वदा ज्ञो बली ज्ञेयो दिने शेषा द्विजोत्तम ॥

बु०	चं० मं० श०	सू० गु० शु०	ग्रह
६०	०	६०	मध्यदिन में
६०	६०	०	मध्यरात्रि में

नैसर्गिक बल—(चक्र नं० ५)

सू०	चं०	शु०	गु०	बु०	मं०	श०
६०	५२	४३	३५	२६	१७	८

इस प्रकार जन्मकालिक स्पष्ट ग्रहों के राश्यादि से ४ चारों बल का योग कर प्रत्येक ग्रह का बल समझकर तदनुसार फलादेश करना चाहिये। सब ग्रह अपनी अपनी दशा अन्तर्दशादि का फल पाकसमय में अपने बल के अनुसार ही फल भी देते हैं।

ग्रहों की राशि (गृह) (चक्र नं० ६)

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
५	४	१/८	३/६	९/१२	२/७	१०/११
सिंह	कर्क	मेष० वृश्च	मि० कन्या	ध० मीन	वृष तु०	म० कुं०

ग्रहों के उच्च नीच राशि अंश—(चक्र नं० ७)

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०
उच्च	मे०	वृ०	म०	कं०	क०	मी०	तु०	मि०	ध०
राशि	०	१	९	५	३	११	६		
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०		
नीच	तु०	वृश्च	क०	मी०	म०	कं०	मे०	ध०	मि०
राशि	६	७	३	११	९	५	०		
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०		

ग्रहों के मूलत्रिकोण—(चक्र नं० ८)

सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
सि० ५	वृ० २	मे० १	कं० ६	ध० ९	तु० ७	कु० ११
२० अंश तक त्रिकोण पश्चात स्वराशि	३ अंश तक उच्च पश्चात मूल-त्रि०	१२ अंश तक मूल-त्रि० पश्चात स्वराशि	१५ अंश तक उच्च उसके बाद ५ तक त्रि० फिर १० तक स्वराशि	१० अंश तक त्रिकोण आगे स्वराशि	१५ अंश त्रि० आगे १५ अंश तक स्वराशि	२० अंश त्रि० पश्चात् स्वराशि

ग्रहों के नैसर्गिक मित्र-सम शत्रु—(चक्र नं० ९)

त्रिकोणात् स्वात् सुख-स्वाऽन्त्यधीधर्मायुः स्वतुङ्गपाः ।
सुहृदो रिपवश्चान्ये समाश्चोभयलक्षणाः ॥

अर्थात् अपने अपने मूल त्रिकोण से ४, २, १२, ५, ९, ८ स्थान और अपने उच्च स्थान के स्वामी मित्र और इनसे भिन्न स्थानों के स्वामी शत्रु होते हैं। जिन ग्रहों में दोनों लक्षण (मित्र-शत्रु) प्राप्त हों वे सम (उदासीन) होते हैं।

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
मित्र	चं० मं० गु०	सू० बु०	सू० चं० गु०	सू० शु०	सू० चं० मं०	बु० श०	बु० शु०
सम	बु०	मं० गु० शु० श०	शु० श०	मं० गु०	श०	मं० गु०	गु०
शत्रु	शु० श०	×	बु०	चं०	बु० शु०	सू० चं०	सू० चं० मं०

ग्रहों के तात्कालिक मित्र-शत्रु—(चक्र नं० १०)

दशबन्ध्वाय सहज-स्वान्त्यस्थास्ते परस्परम् ।
तत्काले मित्रतां यान्ति रिपवोऽन्यत्र संस्थिताः ॥

अर्थात् सूर्य आदि सब ग्रह तत्काल में अपने-अपने आश्रित स्थान से परस्पर १, ४, ११, ३ और १२, २, में स्थित होने से परस्पर मित्र, अन्य स्थान में शत्रु होते हैं ।

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
मित्र	बु०गु० शु०श०	मं०	चं०बु० गु०शु०	मं०सू० श०	सू०मं० श०	सू०मं० श०	सू०बु० गु०शु०
शत्रु	चं०मं०	सू०बु० शु०गु० श०	सू०श०	चं०गु० शु०	चं०बु० शु०	चं०बु० गु०	चं०म०

पञ्चधा मैत्री कथन-(चक्र नं० ११)

तत्काले च निसर्गे च मित्रं चेदधिमित्रकम् ।
मित्रं मित्रसमत्वे तु शत्रुः शत्रुसमत्वके ॥१॥

समो मित्ररिपुत्वे तु शत्रुत्वे त्वधिशत्रुता ।
एवं विविच्य दैवज्ञो जातकस्य फलंवदेत् ॥२॥

अर्थात् यदि निसर्ग और तात्कालिक दोनों प्रकार से मित्र हो वह ग्रह अधिमित्र, एक जगह मित्र और एक जगह सम हो तो मित्र, एक स्थान में शत्रु और दूसरे में सम हो तो शत्रु और यदि दोनों प्रकार से शत्रु हो तो अधिशत्रु

कहलाता है। इस प्रकार मित्रादि का विचार कर जातक का फल कहना चाहिए।

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०
अ०मि	गु०	×	चं०गु०	सू०	सू०मं०	श०	बु०शु०
मित्र	बु०	मं०	शु०	श०मं०	श०	मं०	गु०
सम	चं०मं० शु०श०	सू०बु०	सू०	शु०	चं०	बु०	सू०
शत्रु	×	गु०शु० श०	श०	गु०	×	गु०	×
अ०श	×	×	×	चं०	बु०शु०	चं०	चं०मं०

ग्रहों के पूर्ण-मध्य-अल्पफल बोधकचक्र—(चक्र नं० १२)

	उच्च	मू०त्रि०	स्व०गृ०	मित्र	सम	शत्रु०	अस्त	नीच
शुभफल चरण	४	३	२	१	१/२	१/४	०	०
अशुभफल चरण	०	०	१/४	१/२	१	२	३	४

स्थानवश शुभग्रहों में भी अशुभत्व, और अशुभग्रहों में भी शुभत्व आ जाता है यह प्रत्यक्ष लोक में भी देखा जाता है। इसलिये शुभग्रह उच्चस्थान में अति शुभ होता है और अधिमित्रादि गृह में क्रमशः ह्रास होकर नीच स्थान में शुभत्व का नाश हो जाता है। इसी प्रकार पापग्रह—नीच स्थानों में अति पाप हो जाता है तथा क्रमशः उच्चस्थानों में शुभत्व को प्राप्त होने लगता है। अर्थात् शुभग्रह भी नीच में पड़ने से अपने शुभफल को नहीं देता है और अशुभग्रह उच्चस्थान में होने से अपने पाप फल को नहीं देता है॥

ग्रहों की दृष्टि बोधक चक्र—(चक्र नं० १३)

ग्रह	सू० चं० बु० शु०	मं०	गु०	श०
एक चरण	३/१०	३/१०	३/१०	×
दो चरण	५/९	५/९	×	५/९
तीन चरण	४/८	×	४/८	४/८
संपूर्ण दृष्टि	७	४/८/७	५/९/७	३/१०/७

कोई भी ग्रह—किसी भावपर अपनी दृष्टि के अनुसार ही शुभ या अशुभफल को देता है। इसका ध्यान रखना भी आवश्यक है।

फल कथनार्थ उदाहरण—

सं० १९८२ माघ शुक्ल ११ शनिवार सूर्योदय से इष्टघट्यादि ३/२५ समय में किसी का जन्म हुआ। उस समय के स्पष्ट ग्रह और जन्माङ्ग नीचे देखिये—
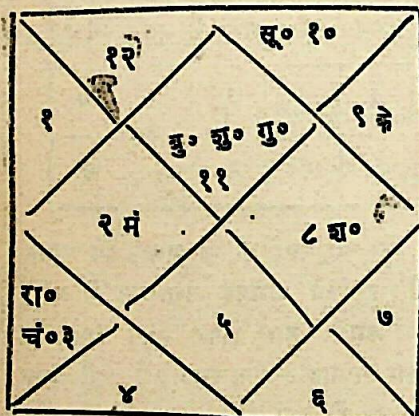
सू०	चं०	मं०	बु	गु	शु	श	रा
१	२	१	१०	१०	१०	७	२
२९	६	०	१३	१३	२०	१३	१३
३६	२२	५६	९	४१	४	२४	५५
५३	५८	२०	२६	१८	२	२७	३४
६०	८०६	३०	८०	१३	७४	३	३
४४	३०	५५	५३	४०	३१	१३	११

जन्माङ्ग के फल कथन समय इस बात का ध्यान अवश्य रहे कि जिस—भाव का फल विचार करना हो उस भाव में किस ग्रह का योग और दृष्टि है, साधारणतया—उस भाव पर यदि अपने स्वामी और शुभग्रह का योग या दृष्टि है

तो उस भाव के फल पुष्ट (पूर्ण) होते हैं। और पापग्रहों या अपने स्वामी के शत्रुओं का योग या दृष्टि हो तो उस भाव सम्बन्धी फलों की हानि होती है। यथा—उपरोक्त कुण्डली में—लग्नभाव सम्बन्धी (शरीर सुखादि) का विचार करना है तो—लग्नभाव में बुध, गुरु और शुक्र तीनों शुभग्रह का योग और चन्द्रमा की २ चरण दृष्टि हैं। इस प्रकार सब शुभग्रहों में योग तथा दृष्टिहोने के कारण इस जातक को शरीर सम्बन्धी सब फल उत्तम कहना चाहिये। किन्तु लग्न पर मङ्गल की १ चरण और शनि की ३ चरण दृष्टि है (चक्र नं० १३) इसलिये मङ्गल और शनि किञ्चत् कष्ट कारक भी होंगे तथापि शुभग्रहों की अधिकता होने के कारण कदाचित् शनि और मङ्गल की दशा, अन्तरदशा समय में ही कष्ट होने की सम्भावना होगी। वह भी शीघ्र निवृत्त हो जायगा।

अब यह देखना है कि—लग्न में बुध, गुरु और शुक्र हैं अतः आगे इस ग्रन्थ में (पृष्ठ नं० ३८, ५० और ६२ में) लिखे हुए फल—देनेवाले हैं तो वह अपने बल की मात्रा के अनुसार ही दे सकते हैं। इसलिये ग्रहों के बल की मात्रा देखना आवश्यक है। ऊपर कहे हुए सब बलों का पूर्ण योग ३०० होता है, उसमें १०० से कम अधमबल, १०१ से २०० तक मध्यम बल, २०० से ऊपर उत्तम बल समझा जाता है। यथा बुध का उच्च बल—

बुध अपने उच्चस्थान (कन्या) से छठे स्थान में है अतः उसका उच्चबल १० (चक्र नं० १ देखिये) गृहबल—बुध शनि के गृह में है—शनि उसका अधिमित्र है (चक्र नं० ११) इसलिये गृहबल=२० (चक्र नं० २) से हुआ। कालबल—बुध सर्वदा बली होता है अतः कालबल=६० (चक्र नं० ४)। दिग्बल—बुध लग्न में है अतः दिग्बल ६० (चक्र नं० ३)। नैसर्गिक बल= २६ (चक्र नं० ५) सब बलों का योग = १० + २० + ६० + ६० + २६= १७६। इसलिये यह मध्यम बली है अतः बुध अपना फल मध्यम मान से देगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का बल—गुरु को १८०, शुक्र को २०३, शनि को ९३ मङ्गल को ५२, चन्द्रमा को १५२ और सूर्य को २०० बल प्राप्त है। अर्थात् शुक्र ही सब ग्रहों में बली हुआ और उत्तम भी (२०० से अधिक बलवाला)

है अतः इस बालक का स्वभावादि पहिले कहे हुए 'ग्रह स्वरूप निरूपण' में अधिकतया शुक्र के तुल्य प्रकृतिवाला होगा और शुक्र अपनी दशादि में उत्तम फल अधिक से अधिक मात्रा में देनेवाला होगा। पश्चात् सूर्य, गुरु, बुध और चन्द्रमा हैं ये भी शुभग्रह एवं मध्यबली होने के कारण अपना अपना फल मध्यम मात्रा से देगें। किन्तु शनि और मङ्गल पापग्रह हैं और दसवें तथा चौथे भाव में स्थित होने से एक दूसरे को पूर्णदृष्टि से देखते हैं तथा पञ्चधा मैत्री के अनुसार दोनों ही ग्रह एक दूसरे के शत्रु भी हैं एवं लग्न भाव (१) पर चरण दृष्टि है। तथापि आगे ग्रन्थ में कहे गये अपने अशुभफलों को पूर्णरूप से नहीं दे सकेंगे—कारण ये दोनों ग्रह (शनि और मङ्गल) सब ग्रहों में निर्बल तथा अधमबली (१०० से अल्पबल) भी है अतः यह बालक माता-पिता के रहते हुए भी उनकी भक्ति से विमुख रहकर क्लेश से कष्ट पहुँचानेवाला होगा। इत्यादि अन्य ग्रहों के भी तारतम्य से फल समझना।

इसप्रकार ग्रह स्थितियों को समझकर एवं उनके फलों में तारतम्य कर लेने के पश्चात् किसी भी जातक के प्रति कहे जानेवाले फल अवश्य ही अकाट्य होंगे इसमें सन्देह नहीं।

यद्यपि इस ग्रन्थ में सम्पादक ने अधिक सावधानी से अर्थ लगाने का यत्न किया है, तथापि मानव धर्मवश अथवा मुद्रणयन्त्र या दृष्टिदोष से कुछ त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन सूचित करने की कृपा करेंगे, जिससे अगले संस्करण में सुधार कर दिया जाय। इति।

श्री सीताराम झा

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ ग्रहफलदर्पण

ज्यौतिष ।

मङ्गलाचरण—

गणेशं शारदां नत्वा ग्रहाणामृषिभाषितम् ।
संगृह्यते मया स्पष्टं जन्माङ्गाद्भावजं फलम् ॥१॥
तथैव वर्षलग्नाच्च हिन्दीभावार्थसंयुतम् ।
सन्मुदे वासुदेवेन पुंसां स्त्रीणां पृथक् पृथक् ॥२॥

भावार्थः—मैं श्री गणेशजी एवं श्रीसरस्वतीजी को नमस्कार करके पुरुषों और स्त्रियों की जन्मलग्न एव वर्षलग्न से महर्षियों द्वारा कहे हुए समस्त ग्रहों के भावफलों को हिन्दी भाषा भावार्थ सहित सज्जनों के उपकारार्थ संग्रहीत करता हूँ ॥ १+२ ॥

वि०—इस ग्रन्थ में जन्मलग्न और वर्षलग्न द्वादशभावस्थ-सूर्यादिग्रहों के फल ऋषिभाषित पद्यों में कहे गये हैं। सप्तम भाव का फल जो पुरुष कुण्डली में स्त्री के विषय में कहा गया है। वह स्त्री कुण्डली में पति के लिये समझना चाहिये।

प्रथम भावस्थ सूर्यफल—

तनुस्थो रविस्तुङ्गयष्टिं विधत्ते मनः संतपेद्दारदायादवर्गात्।
वपुः पीड्यते वातापित्तेन नित्यं स वै पर्यटन् ह्रासवृद्धिं प्रयाति ॥
सवितरि तनुसंस्थे शैशवे व्याधियुक्तो नयनगदसुदुःखो नीचसेवानुरक्त
न भवति गृहमेधी दैवयुक्तो मनुष्यो भ्रमतिविकलमुर्तिः पुत्रपौत्रैर्विहीनः
लग्नगः सम्सखेटस्तदा लागरः कामिनीदूषितो दुष्प्रजो वै यदा।
पण्यरामारतो राशिमीजान्गतो मानहीनोथ ह्रीर्षी विदृष्टिः पुमान्॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न (तनुभाव) में सूर्य हो तो वह—ऊँचे शरीर वाला, दुर्बल, बाल्यावस्था में रोगी, आँख में रोगवाला, नीचजनों का सेवक होता है। स्त्री और दायादों से मन में सन्ताप, वात तथा पित्त से शरीर में पीड़ा होती है। घूमकर व्यापार करने से कभी हानि और कभी लाभ करनेवाला, स्त्री से अपमानित, वेश्यागामी और प्रारब्धवादी होता है, यदि अपनी राशि या उच्च में हो तो सुखी और यशस्वी होता है॥ १–३ ॥

लग्नेऽर्के रोगिणी बाल्ये रुङ्नेत्रा नीचसेविका।
धनपुत्रसुखैर्हीना स्वभोच्चस्थे सुखान्विता ॥४॥

भावार्थः—लग्न में सूर्य हो तो वह स्त्री बाल्यावस्था में रोगिणी, आँख में कष्टवाली, नीचजनों की सेविका, धन तथा पुत्र सुख से वञ्चित रहती है। यदि अपनी राशि या उच्च का सूर्य लग्न में हो तो वह सुख से युक्ता होती है ॥४॥

रविर्लग्नगो वातपित्तं करोति कलत्राङ्गपीडां शिरःश्लेष्मरोगम्।
विवादं जनानां भवेद्गुप्तचिन्ता दशा नेष्टकर्त्री तथा हायनेऽस्य ॥

भावार्थः—यदि वर्षप्रवेशकालिक लग्न में सूर्य हो तो उसे—वात, पित्त से रोग तथा स्त्री के शरीर में पीडा तथा मस्तक में कफ विकार से रोग होता है। अपने सम्बन्धियों में विवाद और गुप्तचिन्ता रहती है, उस वर्ष सूर्य की दशा, अन्तर्दशा अनिष्ट होती है ॥५॥

द्वितीयभावस्थ सूर्यफल—

धने यस्य भानुः स भाग्याधिकः स्याच्चतुष्पात्सुखं सद्व्यये स्वं च याति ।
कुटुम्बे कलिर्जायते जायतेऽपि क्रिया निष्फला याति लाभस्य हेतोः ॥

धनगतदिननाथे पुत्रदारैर्विहीनः कृशतनुरतिदीनो रक्तनेत्रः कुकेशः ।
भवति च धनयुक्तो लोहताम्रेण सत्यं न भवति गृहमेधी मानवो दुःखभागी॥

यदा चश्मखाने भवेदाफताबस्तदा ज्ञानहीनोथ गुस्सर्वंमुद्दाम् ।
सदा तङ्गदिल्शख्तगो द्रव्यहीनः कुवेषो गदी स्याद्बेहोशोदिवासाम् ॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वितीय भाव में सूर्य हो तो वह—स्त्री और सन्तान से हीन, कुटुम्बियों से विरोध करने वाला, कृश शरीर, क्रोधी, लाल नेत्र वाला, भाग्यवान, गाय, भैंस, बकरी आदि का सुख, द्रव्यलाभ के निमित्त जो कार्य करता वह उसका व्यर्थ होता है, फिर भी उसका धन अच्छे कार्यों में खर्च होता है। लोहे और ताँबे का कार्य करने से धनी, रोगी और बेहोश (विस्मरण शक्ति वाला) होता है ॥ १–३॥

धनस्थेऽर्के सरोगाक्षी परिवारसुखोज्झिता ।
नारी मध्यधना स्वोच्चे स्वभे च सुखभागिनी ॥४॥

भावार्थः—द्वितीय भाव में सूर्य हो तो नेत्र में रोगवाली, परिवार सुख से रहित, मध्यम प्रकार के धनवाली होती है। यदि अपनी उच्च राशि का सूर्य हो तो सुख की भागिनी होती है ॥४॥

कुटुम्बाद्विरोधो नृपाद् भीतिकष्टं धनार्तिर्धनस्थे रवौ मानवानाम् ।
पशूनां प्रपीडोदरे चापदः स्युः स सौम्यान्वितो द्रव्यलाभं करोति ॥

भावार्थः—सूर्य वर्षलग्न से द्वितीयभाव में हो तो कुटुम्बों से विरोध, राजा से भय और कष्ट, धन की कमी और पशुओं को पीड़ा, तथा उदर में व्यथा रहती है। यदि सूर्य शुभग्रह से युत हो तो उस मनुष्य को द्रव्य लाभ होता है ॥५॥

तृतीयभावस्थ सूर्यफल—

तृतीये यदाहर्मणिर्जन्मकाले प्रतापाधिक्यं विक्रमं चातनोति।
तदा सोदरैस्तप्यते तीर्थचारी सदारिक्षयः सङ्गरे शं नरेशात्॥

सहजभवनसंस्थे भास्करे भ्रातृनाशः प्रियजनहितकारी पुत्रदाराभियुक्तः।
भवति च धनयुक्तो धैर्ययुक्तः सहिष्णुर्विपुलजनविहारी नागरीप्रीतिकारी।

यदा सम्शखेटस्तृतीयस्थितो नेककर्दानिरोगों हि शीरींसुखुन्।
सदामोदते रम्यसीमन्तिनीभिः सवारो धनाढ्यो हि निःकोपशन्॥

भावार्थः—जिसके जन्मकाल से तृतीय भाव में सूर्य हो तो वह बड़ा प्रतापी तथा पराक्रमी होता है। सहोदर से कष्टी अपने मित्रों का हितकारी, स्त्री पुत्रादि से युक्त, धनी, क्षमाशील, युद्ध में सर्वदा उसके शत्रुओं का नाश होता है। तथा मधुर-भाषी, सर्वदा सुन्दरी स्त्रियों के संग विहार करने वाला, सवारी पर चलने वाला होता है ॥१—३॥

सहजे सहजैर्हीना पतिपुत्रसुखान्विता।
धन-धैर्य-बलोपेता जनरक्षणतत्परा ॥४॥

भावार्थः—तृतीय भाव में सूर्य हो तो बन्धु सुख से रहित और पति पुत्रादि सुख से युक्त, धन धैर्य और शक्ति से सम्पन्न होकर दूसरों की रक्षा करने वाली होती है ॥४॥

तृतीयगोऽर्कोऽपि सहोदराणां पीडां करोत्यस्स वै वर्षलग्ने।
प्रराक्रमो राजकृपा च लक्ष्मी रिपुक्षयः कीर्तिविवर्धनं स्यात्॥

भावार्थः—यदि वर्षलग्न से सूर्य तृतीय स्थान में हो तो उस मनुष्य के सहोदर भइयों को पीड़ा होती है और पराक्रमी तथा राजा की कृपा, धन की प्राप्ति, शत्रु का नाश और कीर्ति की वृद्धि होती है ॥५॥

चतुर्थ भावस्थ सूर्यफल—

तुरीये दिनेशेऽतिशोभाधिकारी जनः सँल्लभेद्विग्रहं बन्धुतोऽपि ।
प्रवासी पिपक्षाहवे मानभङ्गं कदाचिन्न शान्तं भवेत्तस्य चेतः ॥

विविधजनविहारी बन्धुसंस्थो दिनेशो भवति च मृदुचेता गीतवाद्यानुरक्तः
समरशिरसि युद्धे नास्ति भङ्गः कदाचित् प्रचुरधनकलत्री पार्थिवानां प्रियश्च ॥

यदा मादरागारगः सम्शखेटः सुखी नो हि शंसः परेशानकः स्यात् ।
सदा म्लानचित्तोथ वेश्यारतो वा तथा जायते वेखुशी ह्दिजंगर्दः ॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थभाव में सूर्य हो तो वह अत्यन्त सुन्दर, बान्धवों से कलह करने वाला, शत्रु से अपमानित, परदेश सेवन करने वाला, चित्त शान्त नहीं रहता, मलिन स्वभाव वाला, कोमल हृदय, गीत वाद्य में निपुण तथा स्त्री से सुखी रहता है और राजा का प्रिय होता है ॥१–३॥

सुखस्थेऽर्के सुखोपेता सुचिता च सुभर्तिकाः ।
गीतशिल्पकलाभिज्ञा प्रसन्ना भूपतिप्रिया ॥४॥

भावार्थः—जन्म समय में चतुर्थ स्थान में सूर्य हो तो वह स्त्री सर्वदा सुखयुक्ता, कोमल हृदय और सुन्दर पतिवाली, संगीत, शिल्प और कला जानने वाली, प्रसन्न रहने वाली और राजा की पत्नी होती है ॥४॥

पशोः पीडनं तुर्यसंस्थे रवौ च कृषेः कर्मणो हानिरत्यन्तपीडा ।
नृपाद् भीतिकष्टं भवेन्मातृपीडोदरे गुह्यकेऽपि प्रपीडाऽब्दमध्ये ॥

भावार्थः—यदि सूर्य वर्षलग्न से चतुर्थ भाव में हो तो पशुओं को पीड़ा, कृषि कर्म में हानि, अत्यन्तकष्ट, राजा का भय, तथा मातृकष्ट और पेट तथा गुह्याङ्गों में पीड़ा होती है ॥ ५ ॥

पञ्चम भावस्थ सूर्यफल—

सुतस्थानगे पूर्वजापत्यतापी कुशाग्रा मतिर्भास्करे मन्त्रविद्या।
रविर्वञ्चने संचकोऽपि प्रमादी मृतिः क्रोडरोगादिजा भावनीया॥
तनयगतदिनेशे शैशवे दुःखभागी न भवति धनभागी यौवने व्याधियुक्तः।
जनयति सुतमेकं चाऽन्यगेहश्च शूरश्चपलमतिविलासी क्रूरकर्मा कुचेताः॥
अक्लखाने यदा शम्शखेटस्तदा मानवो मानहीनः सदा जाहिलः।
स्वल्पसङ्गप्रजश्चचौर्यचिन्ताधियुग् गुस्स्वरो धर्मकार्ये सदा काहिलः॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से पञ्चमभाव में सूर्य हो तो वह—बाल्यावस्था में दुखी, युवावस्था में धनी, प्रथम पुत्र से कष्ट पाता है, वह बड़ा भारी बुद्धिमान तथा मंत्रशास्त्र का विद्वान, एक पुत्र वाला उसकी बुद्धि दूसरों की ठगने की रहती है, द्रव्य का संचय करने वाला, धर्मकार्य से विमुख, चञ्चल, क्रोधी, मानहीन, परघरवासी और कलेजे (फेफड़े) की बिमारी वाला होता है॥१–४॥

सुतस्थेऽर्के सरुग् बाल्ये काकवन्ध्या च निर्धना।
स्वभोच्चेऽर्के तु पुत्रस्थे धनपुत्रसुखान्विता॥४॥

भावार्थः—मेष और सिंह से भिन्न राशिस्थ सूर्य यदि पञ्चम स्थान में हो तो वह स्त्री बाल्यावस्था में रोगिणी, एक सन्तानवाली और निर्धना होती है। यदि—मेष या सिंह का रवि सुतभाव में हो तो वह धन पुत्र आदि के सुख से युक्ता होती है॥४॥

दिनेशे सुतस्थे सुतस्याङ्गपीड़ा स्वबुद्धेश्च हानिर्विवादो जनानाम्॥
भवेच्छोकमोहादि चाङ्गेषु रोगो धनार्तिश्च भूपाद् भयं तद्दशायाम्॥

भावार्थः—यदि पञ्चमभाव मे सूर्य हो तो उस मनुष्य के पुत्रों के शरीर में पीड़ा, अपनी बुद्धि की हानि, परिजनों में विवाद, दुःख और अङ्ग में पीड़ा, धन की हानि और राजा से भय होता है। विशेष कर उस वर्ष सूर्य की दशा, अन्तर्दशा में यह फल समझें॥५॥

षष्ठभावस्थ सूर्यफल—

रिपुध्वंसकृद्भास्करो यस्य षष्ठे तनोति व्ययं राजतो मित्रतो वा।
कुले मातुरापच्चतुष्पादतो वा प्रयाणे निषादैर्विषादं करोति॥
अरिगृहगतभानौ योगशीली मतिस्थो निजजनहितकारी ज्ञातिवर्गप्रमोदी।
कृशतनुगृहमेधी चारुमूर्तिर्विलासी भवति च रिपुजेता कर्मपूज्यो दृढाङ्गः॥
यदा मर्जखाने भवेदाफताबो जलीलो गनी खूबरोहं अवाचः।
सदा मातृपक्षोद्धृतस्यायलब्धिर्निरोगो नरः शत्रुमर्दी तदा स्यात्॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से षष्ठभाव में सूर्य हो तो वह—शत्रुओं का नाश करता है। उसका द्रव्य राजकीय कारणों तथा मित्रों में विशेष खर्च होता है। वह अपने परिजन का पोषक, ज्ञानियों में श्रेष्ठ, कृशदेह, गृहसुख के युक्त, उत्तमरूप, विलासी और दृढ़देह वाला, मितभाषी, मातृपक्ष (ननिहाल) से धनलाभ करता है॥१–३॥

रिपुहन्त्री रिपुस्थेऽर्के चार्वङ्गी जनवाक्किका।
धनपुत्रसुखोपेता सुमतिर्जनपूजिता॥८॥

भावार्थः—षष्ठभाव में सूर्य हो तो शत्रु को पराजित करने वाली सुन्दर शरीर वाली, अपने कुटुम्ब की रक्षा करने वाली, धन पुत्रादि सुख से युक्ता, उत्तम स्वभाव वाली और लोक में मान्य होती है॥४॥

रिपूणां विनाशो रुजो मातृपक्षे रवौ षष्ठसंस्थे सुखाप्तिर्जनानाम्।
नृपान्मित्रपक्षाच्च लाभो जयः स्याद् भवेद्‌द्रव्यलाभः क्रये विक्रयेऽपि॥

भावार्थः—यदि सूर्य वर्षलग्न से षष्ठभाव में हो तो शत्रुओं का नाश होता है, किन्तु मातृपक्ष में रोग भय होता है, राजा और मित्रों से लाभ क्रय, विक्रय में भी द्रव्यलाभ होता है॥५॥

सप्तम भावस्थ सूर्यफल—

द्युनाथो यदा द्यूनजातो नरस्य प्रियातापनं पिण्डपीडा च चिन्ता।
भवेत्तुच्छलब्धिः क्रये विक्रयेऽपि प्रतिस्पर्धया नैति निद्रां कदाचित्॥

युवतिभवनसंस्थे भास्करे स्त्रीविलासी
न भवति सुखभागी चञ्चलः पापशीलः।
उदरसमशरीरो नातिदीर्घो न ह्रस्वो
कपिलनयनरूपः पिङ्गकेशः कुमूर्तिः॥

यदा सप्तखेटःस्मरस्थानगश्चिन्तया व्याकुलो ना भवेत्कामुकः।
सदा क्षीयते कामिनीभिर्महावञ्चको युद्धभूमौ चलोऽजम्बरः॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से सप्तमभाव में सूर्य हो तो वह—न लम्बा न छोटा, कपिलवर्ण नेत्र, पिंगलवर्ण केशवाला और कुरूप होता है, उसे स्त्री क्लेश, शरीर पीड़ा और मानसिक चिन्ता बराबर बनी रहती है, व्यापार में उसे बहुत थोड़ा लाभ होता है। मन में सर्वदा लोगों को डाह रहने से सुख से निद्रा भी नहीं आती, कामी, स्त्री से विजित, ठगनेवाला होता है॥१-३॥

पतिभागवते सूर्ये जाता पतिसुखोज्झिता।
पापशीला कुरूपा च चञ्चला कपिलेक्षणा॥४॥

भावार्थः—सप्तम भाव में सूर्य हो तो वह पति सुख से रहिता, पापिनी, कुरूपा, चञ्चला और कपिल नेत्र वाली होती है॥४॥

कलत्रेऽर्कयुक्ते कलत्राङ्गपीड़ा स्वकीयाङ्गपीडा तथाऽन्तर्दशायाम्।
शिरोऽर्तिश्च मार्गाद् भयं वै विवादो गुदे पादयोः पीडनं वर्षमध्ये॥

भावार्थः—यदि वर्षलग्न से सप्तम भाव में सूर्य रहे तो उस वर्ष में उसकी स्त्री को शरीर पीड़ा होती है, तथा सूर्य की दशा, अन्तर्दशा में अपने अङ्ग में भी पीड़ा होती है और शिरोरोग, मार्ग में भय, लोगों से विवाद और गुदा तथा चरण में पीड़ा होती है॥५॥

अष्टमभावस्थ सूर्यफल—

क्रियालम्पटं त्वष्टमे कष्टभाजं विदेशीयदारान् भजेद्वाप्यवस्तु ।
वसुक्षीणता दस्युता नाविलम्बाद्विपद्गुह्यतां भानुरुग्रां विधत्ते ॥

निधनगतदिनेशे चञ्चलस्त्यागशीलः किलबुधगणसेवी सर्वदा रोगयुक्तः ।
वितथबहुलभाषी भाग्यहीनो विशीलो रतिविहितकुचैलो नीचसेवी प्रवासी॥

यदा सम्भखेटो भवेन्मौतस्थाने मुधार्फिर्विशेक्षुत्तृषापीडितो हि ।
सदोद्योगहीनो महालागरः स्वीयदेशं विहायान्यदेशाटनः स्यात् ॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से अष्टम भाव में सूर्य हो तो वह—चञ्चल, त्यागी, विद्वान का आदर करने वाला, सदा रोग से पीड़ित, व्यर्थ अधिक बोलने वाला, अग्राह्य वस्तुओं का सेवन करने वाला, काम में आसक्त, विदेशीय स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है । भाग्यहीन, शीलरहित, कुवस्त्रधारी, नीच का सेवन तथा परदेश में रह कर कष्ट पाने वाला होता है ॥१—३॥

चलचित्ताष्टमस्थेऽर्के त्यागशीला च रोगिणी ।
कुशीला मलिना दीना हीना पत्या प्रजायते ॥४॥

भावार्थः—अष्टम भाव में सूर्य हो तो चञ्चल स्वभाववाली, त्याग करने वाली, रोगिणी, दुःशीला, मलिन चित्तवाली और पति के सुख से विमुख रहती है ॥४॥

रवौ चाऽष्टमे बन्धुदुःखं च कष्टं क्षयोपद्रवौ व्याधिशोकोधनार्तिः ।
कलत्राङ्गपीडा सुतस्याऽङ्गरोगो व्रणं वातपीडा भवेद्वर्षमध्ये ॥

भावार्थः—यदि सूर्य अष्टमभाव में हो तो उस वर्ष में उसके बन्धुओं को कष्ट तथा अपने अङ्ग में पीड़ा, अनेक उपद्रव, व्याधि, धन का क्षय, शोक, स्त्री के शरीर में पीड़ा, पुत्र के अङ्ग में रोग, व्रण और वात पीड़ा होती है ॥५॥

नवमभावस्य सूर्यफल—

दिवानायके दुष्टता कोणयाते न चाप्नोति चिन्ताविरामोऽस्य चेतः।
तपश्चर्ययाऽनिच्छयापि प्रयाति क्रियातुङ्गतां तप्यते सोदरेण॥

ग्रहगतदिननाथे सत्यवादी सुकेशी कुलजनहितकारी देवविप्रानुरक्तः।
प्रथमवयसिरोगी यौवने स्थैर्ययुक्तो बहुतरधनयुक्तो दीर्घजीवी सुमुर्विः॥

रवौ बेषखाने प्रसिद्धः सुखी मानवश्चान्यवित्तैरलं शोभते।
विघ्नवृन्दैर्युतो मातृपक्षात्सुखं नो धनाढ्यो यदा जायते वोच्चगः॥

भावार्थः—जिस मनुष्य के जन्मलग्न से नवमभाव में सूर्य हो तो वह दुष्ट प्रकृतिवाला होता है। उसकी चित्त की चिन्ता की समाप्ति नहीं होती है। व तपश्चर्या द्वारा अनिच्छा से ही उच्चकर्म को प्राप्त होता है। सगे भाइयों से कष्ट पाता है। हमेशा सत्यवक्ता, सुन्दर केशवाला, दीर्घायु, धनवान, सुखी और दूसरों के धन से आनन्द करने वाला होता है ॥१–३॥

धर्मस्थेऽर्के धनैर्युक्ता सुकेशी सत्यवादिनी।
बाल्ये रोगयुता मध्ये सुखिताऽन्त्ये च दुःखिता ॥४॥

भावार्थः—जिसके नवम भाव में सूर्य हो वह धन-धान्य से युक्ता, सुन्दर केशवाली, सत्य बोलने वाली, बाल्यावस्था में दुःख पाती है। मध्यावस्था में सुखी किन्तु वृद्धावस्था में पुनः रोगिणी हो जाती है ॥४॥

धर्मस्थितोऽर्कश्च सहोदराणं पीडाकरः क्लेशविवर्धकश्च।
धर्मप्रदो राज्ययशःप्रदः स्यात्तद्वर्षमध्ये स्वदशां गतश्च ॥५॥

भावार्थः—यदि वर्ष लग्न से सूर्य नवमभाव में हो तो उस वर्ष में अपनी दशा में उस मनुष्य के बन्धुवों के लिए पीड़ा कारक होते हैं और क्लेश को बढ़ाते हैं तथा धर्म, राज्य और यश को देते हैं ॥५॥

दशमभावस्थ सूर्यफल—

प्रयातोंऽशुमान् यस्य मेषूरणेऽस्य श्रमः सिद्धिदो राजतुल्यो नरस्य।
जनन्यास्तथा यायनामातनोति क्लमः संक्रमेद्वल्लभैर्विप्रयोगः ॥

दशमभवनसंस्थे तीव्रभानौ मनुष्यो गुणगणसुखभागी दानशीलोऽभिमानी।
मृदुलघुशुचियुक्तो नृत्यगीतानुरागी नरपतिरतिपूज्यः शेषकाले च रोगी ॥

रवौ शाहखाने धनाढ्यो वफारस्तदा मोदते वाजिवृन्दैः सुखी च।
महीपान्तिकी नेककिर्दा सुशीलो जमीले पितुः सौख्यमल्पं भवेद्वै ॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से दशवें स्थान में सूर्य हो तो वह उद्योग करने वाला, राजा के समान सहज में सफल होने वाला किन्तु माता से कष्ट पाता है, और प्रेमी लोगों से उसका वियोग रहता है, चित्त में ग्लानि रहती है। गुणवान, अभिमानी, नृत्य और गीत में प्रेम रखने वाला और अन्तिम वयस में रोगी होता है। यदि सूर्य नीच राशि (तुला) का होकर दशम भाव में हो तो पिता से अल्प सुख पाता है ॥१—३॥

कर्मस्थेऽर्के गुणैर्युक्ता दानशीलाभिमानिनी।
धनपुत्रसुखैर्युक्ता नृत्यगीतानुरागिणी ॥४॥

भावार्थः—दशम भाव में सूर्य हो तो वह स्त्री सब गुणों से युक्ता, दान करने वाली, अभिमान वाली, धन-पुत्र और सुख से युक्ता और नाच-गान में प्रेम रखने वाली होती है ॥४॥

यदा दिनेशो गगनाश्रितः स्यात् राज्यार्थदो मानविवर्धकश्च।
हिरण्य-गो-भूवरलाभकारी चतुष्पदाङ्गेषु रुजो विवृद्धि ॥

भावार्थ :—सूर्य यदि वर्ष में दशमभाव में हो तो राज्य और धन को देते हैं मान बढ़ाते हैं, सुवर्ण, गौ, पृथ्वी का लाभ कराते हैं। उस वर्ष में पशुओं के अङ्ग में रोग की वृद्धि होती है ॥५॥

एकादशभावस्थ सूर्यफल—

रवौ सँल्लभेत् स्व च लाभोपयाते नृपद्वारतो राजमुद्राधिकारात् ।
प्रतापानले शत्रवः संपतन्ति श्रियोऽनेकधा दुःखमङ्गोद्भवानाम् ॥
बहुतरधनभागी चायसंस्थे दिनेशे नरपतिगृहसेवी भोगही नो गुणज्ञः ।
कृशतनुधनयुक्त कामिनीचित्तहारी भवति चपलमूर्तिर्जातिवर्गप्रमोदी ॥
यदा याफ्तिखाने भवेत्सम्शखेटः सुवेषो धनी बाहनाढ्योऽल्पशीलः ।
सुघोषः शुमौकाः सिपाही सलाही सविगीतगाने सुनेत्रोऽपि शिर्दारं ॥

भावार्थ—जिसके जन्मलग्न से ग्यारहवें स्थान में सूर्य हो तो उसे राज्य से उत्तम अधिकार प्राप्त होता है और अनेक प्रकार से द्रव्य लाभ होता है । उसके प्रताप से शत्रु नष्ट हो जाते हैं किंतु सन्तान पक्ष से दुःखी रहता है । वह बहु धनवान होता है, गुणग्राही, कृशदेहवाला, चंचल, सुंदर नेत्र वाला, गानविद्या में प्रेम रखनेवाला, वाहन इत्यादि के सुख से युक्त तथा स्त्रियों का प्रिय होता है ॥१–३॥

भूपप्रिया भवस्थेऽर्के सदा लाभसुखान्विता ।
गुणज्ञा रूपशीलाढ्या धनपुत्रसमन्विता ॥४॥

भावार्थ—एकादश भाव में सूर्य हो तो वह स्त्री सदा धन लाभ और सुख से युक्ता, दूसरे के गुणों का अनुकरण करने वाली, सुन्दरी सुशीला, धन और पुत्र से सुखी रहती है ॥४॥

रवौ लाभगे लाभकारी नृपात्स्याद्धनाप्तिश्चधान्याम्बरं वै हिरण्यम् ।
विलासादि सौख्यं रिपूणां विनाशः सुतस्याऽङ्गपीडा भवेत्तत्र वर्षे ।

भावार्थः—यदि सूर्य वर्ष लग्न से ग्यारहवें स्थान में हो तो लाभकारी तथा उस वर्ष में राजा से धन की प्राप्ति, धान्य, वस्त्र, सुवर्ण लाभ, विलास, सुख तथा शत्रुओं का नाश और पुत्र के अंग में पीड़ा होती है । शुभग्रह की दृष्टि सूर्य पर रहे तो पुत्र सुख होता है ॥५॥

द्वादशभावस्थ सूर्यफल—

रविर्द्वादशे नेत्रदोषं करोति विपक्षाहवे जायतेऽसौ जयश्रीः।
स्थितिर्लभ्यते क्षीयते देहदुःखं पितृव्यापदो हानिरध्वप्रदेशे ॥
जडमतिरतिकामी चाऽन्ययोषिद्विलासी विहगगणविघाती दुष्टचेताःकुमूर्तिः।
नरपतिधनयुक्तो द्वादशस्थे दिनेशे कथकजनविरोधी जङ्घरोगी कृशाङ्गः ॥
यदा खर्चस्थाने भवेत्सम्रखेटस्तदा कर्म्मनिर्माणहीनो नरः स्यात्।
अहल्खर्चकः सत्क्रियो वा शरीरत्पनाहः सदा पीड्यतेऽङ्गेषुरोगैः ॥

भावार्थः—जिसके जन्म लग्न से बारहवें स्थान में सूर्य हो तो वह नेत्र रोग से पीड़ित, शत्रु को जीतने वाला, शरीर से स्वस्थ रहता है। पितृपक्ष (चाचा इत्यादि) से आपत्तियाँ रहती हैं। उसकी बुद्धिहीन रहती है, पक्षियों को मारने वाला, दुष्ट हृदय, कुरूप, कामी, पर स्त्री गामी, कथावाचकों का विरोधी, व्यर्थ विवाद करने वाला और फजूल खर्ची होता है ॥१—३॥

विकलाक्षी व्ययस्थेऽर्के कृशाङ्गी मदनाधिका।
कुबुद्धिरन्यसंसक्ता जाता परधनान्विता ॥

भावार्थः—व्ययभाव में सूर्य हो तो आँख में रोगवाली, दुबली, कामातुरा, मलिनबुद्धिवाली, पर पुरुष में आसक्त और परधन प्राप्त करने वाली होती है ॥४॥

व्ययस्थितश्चेत् खलु भास्करोऽसौ स्त्रीविग्रहोद्वेगकृदङ्घ्रिरोगम्।
व्ययं च शीर्षोदरनेत्रपीडां करोति चिन्तां रिपुभिर्विवादम् ॥

भावार्थः—यदि सूर्य द्वादश भाव में हो तो उस वर्ष स्त्री से विग्रह और उद्वेग कराते हैं, पैर में रोग, निरर्थक व्यय तथा नेत्र, उदर मस्तक में पीड़ा कारक होते हैं। उस वर्ष अनेक प्रकार की चिन्ता और शत्रुओं से विवाद रहता है ॥५॥

प्रथम भावस्थ चन्द्रफल—

विधुर्गोकुलीराजगः सन् वपुस्थो धनाढ्यश्चलावण्यमानन्दपूर्णम् ।
विधत्ते धनं क्षीणदेहं दरिद्रं जडं श्रोत्रहीनं नरं शेषलग्ने ॥
तनुगतकुमुदेशे वित्तपूर्णः सुखी स्याद्बहुतरधनभोगी वीर्ययुक्तः सदेही।
भवति च यदि नीचश्चन्द्रमाः पापगो वा जडमतिरतिहीनः स्यात्तदा वित्तहीनः

जवकर्गार्येदाङ्गगस्तवङ्गरः सुरूपवान् ।
सुधीः सुखी नरो भवेद्विलोमगश्च तन्नहि ॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न में बली चन्द्रमा (वृष, कर्क और मेष) हो तो वह कुबेर के समान धनवाला, बलवान, रूपवान, सुखी और सर्वगुण सम्पन्न पूर्ण आनन्द को प्राप्त होता है। यदि अपनी नीच या शत्रु राशि का होकर जन्मलग्न में बैठा हो तो अशुभफल दायक होता है। यदि चन्द्रमा क्षीण (कृष्ण ११ से शुक्ल ५ तक) हो तो विशेष अनिष्ट कारक होता है ॥१—३॥

तनुस्थेन्दौ गुणैर्युक्ता सुन्दरी धनसंयुता ।
पूर्णे, क्षीणे कृशाङ्गी सा स्वभोच्चे च सुखान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि स्त्री के जन्मलग्न में बली चन्द्र हो तो वह सब गुणों से तथा धन-धान्य से युक्ता अति रूपवती होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण हो तो दुबली तथा अल्प सुखवाली और यदि अपने गृह या उच्च में हो तो अत्यन्त सुखी होती है ॥४॥

तनुगतो ननु चेद्रजनीकरो विकलता च कफक्षयपीडितम् ।
भवति पापखगान्वितदृग् यदा तनुविनाशकरश्च बहुव्ययः ॥५॥

भावार्थः—जिसके वर्षप्रवेश कालिकलग्न में चन्द्रमा हो तो उस वर्ष में विकलता, कफ, क्षय रोग से पीड़ा होती है। यदि पाप ग्रह से युक्त हो या पाप ग्रह की दृष्टि हो तो नाश और बहुत खर्च होता है ॥५॥

द्वितीय भावस्थ चन्द्रफल—

हिमांशौ वसुस्थानगे धान्यलाभः शरीरेऽतिसौख्यं विलासोऽङ्गनानाम् ।
कुटुम्बे रतिर्जायते तस्य तुच्छं वशं दर्शने याति देवाङ्गनापिः ॥
धनगतहरिणाङ्के त्यागशीलो मतिज्ञो निधिरिव धनपूर्णो चंचलात्मासुदुष्टः ।
जनयति बहुसौख्यं कीर्तिशाली सहिष्णुर्युवतिजनविलासी चन्द्रतुल्यस्वरूप

कमर्यदा धनालये धनी दमी प्रियंवदः ।
विदूषको नरो भवेद्बलान्वितोयकी नरः ॥

भावार्थ :—यदि जन्मलग्न से द्वितीय भाव में चन्द्रमा हो तो वह धनी, शरीर से सुखी और सबको प्रसन्न करने वाला, मीठी वचन बोलने वाला स्त्रियों के साथ विलास करने वाला होता है। वह बलवान, सुन्दर देह वाला होता है। अपने कुटुम्ब में उसका प्रेम रहता है। यदि चन्द्रमा अपने बीच (वृश्चिक) का या पापयुक्त हो तो निर्बुद्धि, दुःखी और धनहीन होता है। यदि चन्द्रमा बलवान हो तो वह अत्यन्त ही सुंदर, अप्सराओं को भी मोहित कर देने वाला, बलवान और विश्वासी होता है ॥१–३॥

धनस्थेन्दौ धनैः पूर्णा सुखकीर्तिसमन्विता ।
सुरूपा शुभशीला च दानव्रतपरायणा ॥४॥

भावार्थः—द्वितीय भाव में चन्द्रमा हो तो धन, सुख, कीर्ति, सुन्दरता और सुशीलता से युक्त तथा दानादि व्रतादि करने वाली होती है ॥४॥

कुटुम्बाज्जयं मित्रपक्षाच्च लाभं धनाढ्यं धने वैशशाङ्कःप्रकुर्यात् ।
रिपूणां विनाशस्तथा नेत्रपीडा भवेदब्दमध्ये नृपात्सौख्यलाभः ॥५॥

भावार्थः—यदि चन्द्रमा धनभाव में हो तो कुटुम्बों से जय, मित्रों से लाभ तथा धन की प्राप्ति होती है। शत्रुओं का नाश, नेत्र में पीड़ा होती है। उस वर्ष मे विशेष करके चन्द्रमा की दशा में राजा से सुख का लाभ होता है ॥५॥

तृतीय भावस्थ चन्द्र फल—

विधौ विक्रमे विक्रमेणैति वित्तं तपस्वी भवेद्भ्रामिनीरञ्जितोऽपि ।
कियच्चिन्तयेत्साहजं तस्य शर्म प्रतापोज्ज्वलो भीषणो वैजयन्त्या ॥

शशिनि सहजसंस्थे पापगेहे च नित्यं न भवति बहुभाषी भ्रातृहर्ताऽरिमूर्तिः।
भवति च सुखभोगी सौम्यगे रात्रिनाथे सकलधननिधानं शास्त्रकाव्यप्रमोदी

कमविंलाधशालये नरो हि वा सुरौवतः ।
सदा बली च साविरः सुकर्मकृच्चता भवेत् ॥

भावार्थः—यदि जन्मलग्न से तृतीय स्थान में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य अपने पराक्रम से द्रव्यलाभ करता है। उसे भाइयों का प्रेम प्राप्त रहता है किन्तु स्वयं भाइयों से शत्रुता करता है। भोगी होते हुए भी तपस्वी के समान, तथा धर्म की रक्षा करने वाला स्वभाव से अत्यन्त सुखी रहता है। धर्म कार्यों में उसकी कीर्ति उज्वल होती है ॥१–३॥

सहजस्थे विधौ जाता बल-बन्धु-सुखान्विता ।
क्षीणेऽल्पसोदरा नारी धनपुत्रादिसंयुता ॥४॥

भावार्थः—तृतीय भाव में चन्द्र हो तो स्त्री, बन्धुबल के सुख से युक्त यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो थोड़े सहोदर वाली और धन पुत्रादि से युक्ता होती है ॥४॥

तृतीयस्थितः शीतरश्मिर्यदा स्यात् तदा सोदराणां भवेत्सौख्यकारी ।
धनाप्तिं च पुण्योदयं गुप्तसौख्यं प्रतिष्ठाविवृद्धिं करोतीह वर्षे ॥

भावार्थः—यदि चन्द्रमा वर्ष में तृतीय भाव में हो तो उस वर्ष में सहोदरों को सौख्य देते हैं और धन की प्राप्ति, पुण्य का उदय, गुप्त सौख्य तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होतीहै ॥५॥

चतुर्थ भावस्थ चन्द्रफल—

यदा बन्धुगो बान्धवैरत्रिजन्मा नृपद्वारि सर्वाधिकारी सदैव।
वयस्यादिमे तादृशं नैव सौख्यं सुतस्त्रीगणात्तोषमायाति सम्यक् ॥१॥

बहुतरवसुपूर्णो रात्रिनाथे चतुर्थे प्रियजनहितकारी योषितां प्रीतिकारी।
सततमिह स रोगी मांसमत्स्यादिभोगी गजतुरगसमेतः क्रीडते हर्म्यपृष्ठे ॥

कमर्यदाम्बुगेहगः सखो मुकरंवः प्रभुः।
भवेन्नरश्रमञ्जिसी तदा बुधः सुभाग्यवान् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य अपने बन्धुओं में श्रेष्ठ, दानी, प्रभावशाली, पुण्य करनेवाला, स्त्रियों को प्रसन्न करने वाला, विद्वान और भाग्यवान् होता है। बाल्यावस्था में उसे उत्तम सुख नहीं मिलता, मत्स्य–मांस का भोगी हाथी, घोड़े आदि सवारी रखने वाला, पुत्र, स्त्री आदि कुटुम्बों से उसको पूर्ण सुख मिलता है ॥१–३॥

चन्द्रे सुखे सखैर्युक्ता सुरूपा प्रियवादिनी।
मत्स्यमांसरुचिर्जाता क्षीणे रोगभयान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि चतुर्थ भाव में चन्द्रमा हो तो वह सब सुखों से युक्ता सुन्दरी, मधुरभाषिणी, मत्स्य, मांस में रुचि रखने वाली यदि चन्द्रमा क्षीण हो तो रोग युक्ता, निर्बल तथा दुखी रहती है ॥४॥

शशाङ्के चतुर्थे च भूपाज्जयः स्यात् कृषेःकर्मणो लाभवान् स्यात्सुखी च।
धनाप्तिः क्रये विक्रये चाऽब्दमध्ये सुखं वाहनानां रिपोर्नाशनं च ॥५॥

भावार्थः—चन्द्रमा चतुर्थ भाव में हो तो राजा से जय, कृषि कर्म में लाभ, सुख, धनकी प्राप्ति और क्रय विक्रय से लाभ होता है। वाहनों का सुख तथा उस वर्ष में शत्रु का नाश होता है ॥५॥

पंचम भावस्थ चन्द्रफल—

यदा पञ्चमे यस्य नक्षत्रनाथो ददातीह सन्तानसंतोषमेव। रिपं
मतिं निर्मलां रत्नलाभं च भूमिं कुसीदेन नानामयो व्यावसायात् ॥१॥

तनयगतशशाङ्के विम्बपूर्णः सुखीस्याद्बहुतरसुतयुक्तो वश्यनारीसमे
यदिभवति शशाङ्कः क्षीणकायोऽरिगेहे युवतिसुखसमूहैः पुत्रपौत्रैर्विहीनः

कसर्यदेन्नगेहगः स गुल्फरू भवेन्नरः।
बलान्वितो हि पादकी नदिल्पिधर्मकानगः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से पञ्चभाव में चन्द्रमा हो तो उसे निश्च
सन्तान सुख उत्तम रहता है। उसे निर्मल बुद्धि, रत्नलाभ और भूमिलाभ भी हो
है। व्यापार से तथा व्याज द्वारा अनेक प्रकार से उसे द्रव्यलाभ होता है
वह विशेष तेजयुक्त, शरीर वाला, बलवान् सवारी पर चलने वाला और लज्जाव
होता है। यदि पूर्ण चन्द्रमा हो तो समस्त सुख और पतिव्रता स्त्री से युक्त हो
है। क्षीण चन्द्रमा पञ्चमभाव में स्थित हो तो स्त्री तथा सुख से हीन हो
है ॥१-३॥

सबीयन्दौ सुते जाता सुतसम्पत्सुखान्विता।
सुशीला सुमुखी तत्र क्षीणेन्दावन्यथा फलम् ॥४॥

भावार्थः—यदि पञ्चमभाव में सबल चन्द्रमा हो तो पति, पुत्र-धन और सु
से युक्त, सुशीला और सुन्दरी होती है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो फल विपर
होता है ॥४॥

सुतस्थानगो रात्रिनाथः स्वबुद्ध्या जयं शत्रुपक्षाच्च लाभं करोति।
सुतस्याऽङ्गपीडा भवेत्पापदृष्टः सुतस्याऽङ्गसौख्यं सदा सौम्यदृष्टः ॥५

भावार्थः—यदि वर्ष लग्न से पञ्चमभाव में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य बु
द्वारा शत्रुओं से जय-लाभ करता है। यदि पापग्रह की दृष्टि हो तो पुत्र के अङ्ग
पीड़ा, यदि शुभग्रह से दृष्ट हो तो पुत्र को सर्वदा शरीर सुख होता है ॥ ५ ॥

षष्ठ भावस्थ चन्द्रफल—

रिपौ राजते विग्रहेणापि राजा जितास्तेऽपि भूयो विधौ सम्भवन्ति।
तदग्रेऽरयो निष्प्रभा भूयसोऽपि प्रतापोज्ज्वलो मातृशीलो न तद्वत् ॥१॥

रिपुगृहगशशाङ्कः क्षीणकायो यदि स्यान्-
न भवति बहुभोगी व्याधिदुःखस्य दाता।
यदि गृहमथ तुङ्गः पूर्णदेहः शशाङ्को
बहुतरसुखदाता स्यात्तदा मानवानाम् ॥२॥
काललो विपक्षपक्षपीडितो हि वदुशकल्ं
लागरः क्रमर्मवेद्रिपौ यदा नरः सरुक् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो वह बड़ा प्रतापवान् तथा शत्रुओं को जीतने वाला होता है। उसके आगे उसके शत्रु प्रभावहीन होते हैं और वह मनुष्य अपनी माता में भक्ति नहीं रखने वाला होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो जातक सुख भोगनेवाला नहीं होता, रोग से पीड़ित, कुरुप दुर्बल शरीरवाला और रोगयुक्त होता है ॥१–३॥

रिपुहन्त्री रिपौ चन्द्रे बाल्ये रोगभयान्विता।
तत्र पूर्णे स्वभोच्चादौ जाता सर्वसुखान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो वह स्त्री अपने शत्रुओं को जीतने वाली और बाल्यावस्था में रोगिणी होती है। यदि चन्द्रमा पूर्ण बली होकर कर्क या वृष में हो तो अत्यन्त सुख भागिनी होती है ॥४॥

अरिस्थानगो रात्रिनाथो रिपूणां विवादो विरोधो भवेन्नेत्रपीडा।
व्ययं व्यग्रतां गुप्तचिन्तां तनोति कलत्राङ्गपीडां करोतीह वर्षे ॥५॥

भावार्थः—यदि चन्द्रमा षष्ठभाव में हो तो उस वर्ष शत्रु से विवाद और विरोध होता है और नेत्र में पीड़ा होती है। अपव्यय, व्यग्रता, गुप्तचिन्ता, स्त्री के अङ्ग में पीड़ा इत्यादि अशुभ फलदायक होते हैं ॥५॥

सप्तम भावस्थ चन्द्रफल—

वदेद् दारशं सप्तमे शीतरश्मिर्धनित्वं भवेद्ध्ववाणिज्यतोऽपि
रतिं स्त्रीजने मिष्टभुग्लुब्धचेताः कृशः कृष्णपक्षे विपक्षाभिभूतः ॥१॥

विमलवपुषि चन्द्रे सप्तमस्थे मनुष्यो
रुचिरयुवतिनाथः काञ्चनाढ्यः सुदेही ।
शशिनि कृशशरीरे पापगे पापदृष्टे
न भवति सुखभागी रोगिपत्नीपतिः स्यात् ॥२॥

जन्मकामगः क्षमयेदा भवेन्नरो भृशम् ।
गुल्फरूयसी गनी यशः करोत्यहर्निशम् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो उसको सुख पूर्ण होता है। स्थल के व्यापार से धनवान् होता है। कृष्णपक्ष में स्त्रियों आसक्ति का बढ़ जाना, मिष्ट भोजन करनेवाला तथा चित्त अति लोभी रहता। वह दुर्बल रहता है और शत्रुओं से पराजित होता है। यदि पूर्ण चन्द्रमा हो मनुष्य सुन्दरी स्त्री का पति रूपवान, धनवान होता है। क्षीण चन्द्रमा हो पाप राशि में पाप से दृष्ट हो तो सुखहीन और रोगिणी स्त्री का पति होता है।

सवीर्येन्दौ मदे जाता सुधवा च सुखान्विता ।
सुशीला, सुन्दरी, क्षीणे चन्द्रे पतिसुखोज्झिता ॥४॥

भावार्थः—सबल पूर्णचन्द्र सप्तम भाव में हो तो सुन्दर और गुण पतिवाली, सब सुखों से युक्ता, सुन्दरी होती है। क्षीण चन्द्रमा हो तो पति से हीना होती है ॥४॥

कलत्रे शशाङ्को यदा पापदृष्टः क्षुतं वातपीडाभयं दारुणञ्च ।
कलत्राङ्गकष्टं कफोत्पत्तिबाधां स-सौम्यान्वितश्चार्थलाभं करोति ॥५॥

भावार्थः—यदि चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो धन लाभकारक होते हैं। पाप ग्रह से दृष्ट हो तो खाँसी, वातपीड़ा, कठिनभय, स्त्री को पीड़ा इत्यादि दस वर्ष रहता है ॥५॥

अष्टम भावस्थ चन्द्रफल—

सभा विद्यते भेषजी तस्य गेहे पचेत्कर्हिचित् क्वाथमुद्गोदकानि ।
महाव्याधयो भीतयो वारिभूताः शशीक्लेशकृत्सङ्कटान्यष्टमस्थः ॥१॥

नैधनभवनसंस्थे शीतरश्मौ नराणां निधनमचिरकाले पापगेहे ददाति ।
निजभृगुगुरुगेही सौम्यगेही च पूर्णो जनयति बहुदुःखं श्वासकासादिरोगैः

उग्रगृहे कर्मयेदा नरो भवेत्सदाऽऽमयी ।
बहिर्जुगुर्द गुरुसवर्वे देशमुक् च नीर्दयी ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से अष्टम भाव में चन्द्रमा हो तो वह सर्वदा रोगी रहता है । शत्रुओं से नयी व्याधियों, भय और आपत्ति हमेशा बनी रहती है । वह अत्यन्त क्रोधी, निर्दयी तथा स्वदेशत्यागी होता है । पाप राशी युक्त हो तो शीघ्र मरणकारक होता है । यदि अपनी घर या (शुक्र-बुध-गुरु) राशि में हो तो श्वासकासादि रोग से दुःखी होता है ॥१—३॥

मृत्यौ च म्रियते बाला चन्द्रे पापयुतेक्षिते ।
गुरौ केन्द्रगते दृष्टे शुभैर्वा चिरजीविनी ॥४॥

भावार्थः—अष्टमभाव में चन्द्रमा यदि पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बाला बाल्यकाल में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है यदि गुरु केन्द्र वा शुभग्रह से देखा जाता हो तो बहुत दिनों तक जीनेवाली होती है ॥४॥

रन्ध्रगतशशाङ्कः कष्टवन्तं करोति क्षर-वमनविकारी चोदरे गुप्तपीडा ।
भवति कफविकारो नेत्ररोगोऽङ्गभङ्गो जलभयपरिवादो द्रव्यनाशोऽब्दमध्ये

भावार्थः—चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष उस मनुष्य को कष्ट प्रपञ्च रोग, पेट में गुप्त पीड़ा, कफविकार, नेत्ररोग, अङ्गभङ्ग, जल से भय, विवाद और धन की हानि होती है ॥५॥

नवम भावस्थ चन्द्रफल—

तपोभावगस्तारकेशो जनस्य प्रजाश्च द्विजा वन्दिनस्तं स्तुवन्ति।
भवत्येव भाग्याधिको यौवनादेः शरीरे सुखं चन्द्रवत्साहसं च ॥१॥

नवमभवनसंस्थे शीतरश्मौ प्रपूर्णे
बहुतरसुखभुक्त्या कामिनीप्रीतिकारी।
न भवति धनभागीक्षीणगे नीचगे वा
विमलपथविरोधी निर्गुणी मूढ़चेताः ॥२॥

नशीवखानगः कमर्मुईश संज्ञकं नरम्।
मुतम्मविल्च आमिलसिकम्युकं करोति वै ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से नवम भाव में चन्द्रमा हो वह अत्यन्त धर्मनिष्ठ, शरीर से सुखी और उसका पराक्रम चन्द्रमा के समान होता है। पूर्ण चन्द्रमा हो तो सभी सुखों से युक्त, धनवान्, तेजस्वी और स्त्री का प्रिय होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो या नीच का हो तो धनहीन, निर्गुण, मूर्ख और धर्म विरुद्ध (नास्तिक) कहलाता है ॥१–३॥

पूर्णेन्दौ धर्मगे जाता सुखसौभाग्यसंयुता।
क्षीणे वा रिपुनीचर्क्षे ज्ञेया धर्मसुखोज्झिता ॥४॥

भावार्थः—पूर्ण चन्द्रमा यदि नवमभाव में स्थित हो तो स्त्री सुखी और सौभाग्य वाली तथा धर्मात्मा होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण या शत्रु ग्रह नीच राशि में हो तो वह धर्म और सुख रहित होती है ॥४॥

पुण्योदयं धर्मगतः शशाङ्को भाग्योदयं चाऽर्थसमागमञ्च ॥
स्वगेहसौख्यं च रिपोर्विनाशं व्यायामसौख्यं च करोति वर्षे ॥५॥

भावार्थः—चन्द्रमा नवमभाव में हो तो उस वर्ष से भाग्योदय, धन लाभ, शत्रु का नाश, गृह में सौख्य और यात्रा में सुख होता है ॥५॥

दशम भावस्थ चन्द्रफल—

सुखं बान्धवेभ्यः खगे धर्मकर्मा समुद्राङ्कजेशं नरेशादितोऽपि।
नवीनांगनावैभवे सुप्रियत्वं पुरा जातके सौख्यमल्पं करोति ॥१॥

बहुतरसुखभागी कर्मसंस्थे हिमांशौ
विविधधननिधानं पुत्रदारादिपूर्णः।
रिपुकुटिलग्रहस्थे कासरोगी कृशांगः
पितृयुवतिधनाढ्यः कर्महीनो मनुष्यः ॥२॥

कमर्यदा ग्रहाश्रितो हि हम्जवारकं नरम्।
तवङ्गरं च कामिलं करोति वै च साविरम् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से दशम भाव में चन्द्रमा हो तो उसे बान्धवों का सुख होता है। वह धर्मात्मा और पिता का आज्ञाकारी होता है। उसे धनी लोगों से सुख प्राप्त होता है और नवीन स्त्री के ऐश्वर्य से प्रसन्नता होती है। बाल्यावस्था में सुख थोड़ा होता है। परिवार का भरण-पोषण करने वाला, लक्ष्मीवान, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, सुशील तथा सन्तोषी भी होता है। यदि शत्रु या पापग्रह की राशि में हो तो कास रोग से पीड़ित, दुर्बल देह, माता से धन पाने वाला और स्वयं कर्महीन होता है ॥१–३॥

कर्मगे सबले चन्द्रे सर्वसम्पत्तिसंयुता।
क्षीणे नीचारिभे जाता कृशाङ्गी कासरोगिणी ॥४॥

भावार्थः—सबल चन्द्रमा दशम भाव में हो तो पति, पुत्र और धन से युक्त होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण या शत्रु नीच राशि में हो तो दुबली पतली तथा कास रोग वाली होती है ॥४॥

कर्मोदयं प्रकुरुते गगने शशांको द्रव्यागमं रिपुकुलाद्रिपुनाशनश्च।
व्यायामतो बहु सुखं महती प्रतिष्ठा कीर्तिप्रवर्धनसुताम्बरलाभमाशु ॥५॥

भावार्थः—यदि वर्षलग्न से चन्द्रमा दशम भाव में हो तो भाग्योदय, शत्रु से द्रव्यलाभ और शत्रु का नाश होता है। उसे प्रतिष्ठा, कीर्ति की वृद्धि तथा सुत और वस्त्र का लाभ होता है ॥५॥

एकादश भावस्थ सूर्यफल—

लभेद् भूमिपादिन्दुना लाभगेन प्रतिष्ठाधिकाराम्बराणि क्रमेण।
श्रियोऽथ स्त्रियोन्तःपूरे विश्रमन्ति क्रिया वैकृती कन्यका वस्तुलाभः ॥१॥

बहुतरधनभोगी चायसंस्थे शशाङ्के प्रचुरसुखसमेतो दारभृत्यादियुक्तः।
शशिनि कृशशरीरे नीचपापारिगेहे न भवति सुखभागी व्याधितो मूढचेताः॥

धनाधिपश्चखूबरू सखी सुबुद्धिपुंगरः।
शिरीसखुन विदूषको भवेद्यदा कमर्भवे ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से एकादश भाव में चन्द्रमा हो तो उसे क्रम से प्रतिष्ठा, अधिकार और उत्तम उत्तम वस्त्र का लाभ होता है। उसके घर में लक्ष्मी और उत्तम स्त्रियाँ निवास करती हैं। कन्या सन्तति अधिक होती है। उत्तम वस्तु उसे मिलती है किन्तु कभी-कभी बना बनाया काम भी बिगड़ जाया करता है। यदि चन्द्रमा क्षीण हो शत्रु या नीच राशि का हो तो सुख हीन और रोग पीड़ित रहता है ॥१—३॥

क्षीणे पूर्णेऽथवा चन्द्रे लाभे लाभ समन्विता।
सुन्दरी, सुभगा नारी, धन-पुत्रादिसंयुता ॥४॥

भावार्थः—यदि एकादश भाव में क्षीण चाहे पूर्ण चन्द्रमा हो तो वह स्त्री सब कार्य में लाभ करनेवाली, सुन्दरी, सौभाग्यवती, धन, पुत्र आदि सर्व सुखों से युक्ता होती है ॥४॥

रिपोर्नाशनं लाभसंस्थे शशाङ्के बहुद्रव्यलाभः क्रये विक्रयेऽपि।
नृपात्सौख्यलाभः सुतस्याऽऽगमश्च प्रति ।विवृद्धिर्भवेद्धायनेऽस्मिन् ॥५॥

भावार्थः—चन्द्रमा यदि एकादश स्थान में होतो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, क्रय विक्रय द्वारा लाभ, राजा से सुख, पुत्र सुख और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है ॥४॥

द्वादश भावस्थ चन्द्रफल—

शशी द्वादशे शत्रुनेत्रादिचिन्ता विचिन्त्या सदा सद्व्ययो मंगलेन।
पितृव्यादिमात्रादितोऽन्तर्विषादो न चाप्नोति कामं प्रियाल्पप्रियत्वम् ॥
व्ययनिलयनिवेशे रात्रिनाथे कृशांगः
सततहिमसरोगी क्रोधनो निर्धनश्च।
निजबुधगुरुगेहे दान्तिकस्त्यागशीलः
कृशतनुसुखभोगी नीचसंगी सदैव ॥१॥
व्ययालये कर्मयदा भवेत्किरीह चश्मखन्।
विरोधनश्च खिश्मनाप्यकीर्तिमान् हि उष्टूधः ॥२॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वादश भाव में चन्द्रमा हो उसे शत्रु पीड़ा, नेत्र पीड़ा रहती है उसका द्रव्य सदा अच्छे कार्यों में खर्च होता है। स्वजनों से मन मलिन तथा स्त्रियों में कम आसक्ति रखता है प्रायः उसका मनोरथ पूर्ण नहीं होता। वह अति दुर्बल, कफरोग से पीड़ित, क्रोधी, कुकर्म करने वाला तथा निर्धन होता है। यदि (कर्क, मिथुन, कन्या, धनु या मीन) में हो तो कर्मनिष्ठ ज्ञानी, कृशशरीर, सुख-भोगी किन्तु नीच का सेवक होता है ॥१—३॥

बाला व्ययाधिका बाल्ये व्यये व्याधियुता विधौ।
क्षीणाक्षी दुश्चरित्रा च विचित्राकृतिसंयुता ॥४॥

भावार्थः—यदि द्वादश भाव में चन्द्रमा हो तो वह स्त्री बहुत खर्च करने वाली, बाल्यावस्था में रोगिणी, क्षीण नेत्र वाली, कुचरित्रा और विकृट रूपवाली होती है ॥४॥

शशांको व्ययस्थो रिपूणां प्रपीडां तथा सद्व्ययं नेत्ररोगं करोति।
विवादं जनानां महाकष्टसाध्यं कफार्तिश्च गुल्मोदरं तत्र वर्षे ॥५॥

भावार्थः—यदि चन्द्रमा द्वादश भाव में हो तो उस वर्ष शत्रुओं द्वारा पीड़ा तथा सत्कार्य में व्यय हो, नेत्र में रोग, मनुष्यों से विवाद, कष्ट, कफ से पीड़ा और पेट में दर्द इत्यादि कष्ट होता है ॥५॥

प्रथम भावस्थ मंगलफल—

विलग्ने-कुजे दण्डलोहाग्निभीतिस्तपेन्मानसं केसरी किं द्वीतीयः।
कलत्रादिघातः शिरोनेत्रपीडा विपाके फलानां सदैवोपसर्गः ॥१॥

उदरदशनरोगौ शैशवे लग्नभौमे
पिशुनमतिकृशांगः पापकृत्कृष्णारूपः।
भवति चपलचित्तो नीचसेवी कुचैली
सकलसुखविहिनः सर्वदा पापशीलः ॥२॥

यदि भवति मिरोखो लग्नगः खिश्मनाक्स्या-
द्रुधिरप्रभवरोगैः पीडितो मुफ्लिसश्च।
सकलजनविरोधी हासिलो लागरौ ना
जनुषि खलु वियोगी दारपुत्रैर्हमेशाः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न में मङ्गल हो तो उसे लाठी, लोहा व अग्नी से भय रहता है। उसका मन दुःखी रहता है। स्त्री को घात, शिर व नेत्र में पीड़ा, बाल्यावस्था में पेट और दाँत में रोग वाला, चुगुलखोर, कृश, पापी, कृष्णवर्ण, चञ्चल, विरोध करने वाला तथा रक्तविकार से होने वाले रोग से पीड़ित रहता है। उसे फल प्राप्ति के समय सर्वदा बाधा ही होती है ॥१-३॥

कृशाङ्गी रोगिणी बाल्ये तनौ भौमे सुखोज्झिता।
सरोगदसना जाता कृष्णा पापपरायणा ॥४॥

भावार्थः—लग्न में मङ्गल हो तो दुबली, बाल्यावस्था में रोगिणी, सुखों से रहिता, दाँत में रोग वाली, कृष्णवर्णा और पापकर्म में रत रहती है ॥४॥

धरणितनयलग्नेऽसं[illegible]व्यवातप्रपीडा भवतिरिपु विवादोनेत्रशीर्षे च रोग
क्षरवमनविकारी चाङ्गनानां च कष्टं नृपभयमथ लोहादग्नितो भीर्नराणाम् ॥५॥

भावार्थः—यदि वर्षलग्न में मङ्गल हो तो कठिन वात रोग, शत्रु से विवाद, नेत्र तथा मस्तक में रोग, स्त्री को कष्ट, राजा और लोहा तथा अग्नि से उस वर्ष विशेष सावधान रहना चाहिये ॥५॥

द्वितीय भावस्थ मंगलफल—

भवेत्तस्य किं विद्यमाने कुटुम्बे धनेऽङ्गारके यस्य लब्धे धने किम् ।
यथा त्रायते मर्कटः कण्ठहारं पुनः संमुखं को भवेद्वादभग्नः ॥१॥

धनगतपृथिवीजे धातुवादी प्रवासी ऋणधनकृचित्तो द्यूतकर्त्ता सहिष्णुः ।
कृषिकरणसमर्थो विक्रमे लग्नचित्तः कृशतनुसुखभागी मानवः सर्वदैव ॥

यदि भवति मिरीखश्चश्मखाने बहोशः
सुतधनसुखदारैर्वर्जितः शूरगः स्यात् ।
नसनयमुतफक्किर्हीनशक्तिर्वदर्दः
खलजनसमबुद्धिर्मानवः कर्जदारः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वितीय भाव में मङ्गल हो तो वह कुटुम्ब, धन रहते हुए भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। वह धातुओं का व्यवहार करने वाला, ऋण लेने में बहादुर, जुआरी, क्षमाशील, खेती करने में पटु, पराक्रमी होता है, उसे सदा चिन्ता बनी रहती है ॥ १–३ ॥

धने स्वल्पधना भौमे गृहकार्यपरायणा ।
कृशाङ्गी द्यूतकृत्पत्नी सुखेन क्षमया युता ॥४॥

भावार्थः—द्वितीय भाव में मङ्गल हो तो अल्प धन वाली, घर के कार्यों में कुशल, दुबली, जुआरी की स्त्री, सुखभागिनी तथा क्षमाशीला होती है ॥४॥

धनस्थो धरण्यात्मजो द्रव्यनाशं शिरोऽर्ति-जनानां विरोधं प्रचक्षे ।
तथा सर्प-वह्न्योर्भयं शोक-मोहौ कलत्राक्षिरोगं करोतीह वर्षे ॥५॥

भावार्थः—यदि मङ्गल द्वितीय भाव में हो तो उस वर्ष मनुष्य को द्रव्यनाश शिर में पीड़ा परिजनों में विवाद, विरोध, सर्पभय, अग्निभय, शोक, मोह और स्त्री की आँख में रोग होता है ॥५॥

तृतीय भावस्थ मंगलफल—

कुतो वाहुवीर्यं कुतो बाहुलक्ष्मीस्तृतीयो न चेन्मङ्गलो मानवानाम्।
सहोत्थन्यथा भण्यते केन तेषां तपश्चर्यया चोपहास्यः कथं स्यात् ॥१॥

सहजभवनसंस्थे भूमिजे भ्रातृहर्त्ता कृशतनुसुखभागी तुङ्गभागेविलासी।
जनधनुसुखहीनो नीचशत्रूग्रगेहे वसति सकलपूर्णो मन्दिरे कुत्सिते च ॥

जरशुतुरजवाहिर्रत्नतम्बूकनातैः
सहजविमतिरोगैः संयुतोऽसंयुतश्च ।
यदि भवति मिरीखः खूबरो वा मुखेइल्
वजरफिक्सरसंज्ञः स्याद्विरादर्गृहे ना ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से तृतीय भाव में मङ्गल हो तो वह बड़ा प्रभावशाली, धन उपार्जन करने वाला, ऊँट, जवाहरात, रत्न, तम्बू, कनात आदि रखने वाला तथा सर्व प्रकार से रोग मुक्त रहता है और नीच या शत्रु घर का हो तो जन, धन, से हीन रहता है ॥१-३॥

सहजे मङ्गले जाता तन्वी भ्रातृसुखोज्झिता ।
धनहीनारिनीचस्थे स्वमोच्चे सुखभागिनी ॥४॥

भावार्थः—यदि मङ्गल तृतीय भाव में हो तो भाइयों के सुख से हीन, यदि मित्र या शत्रु राशि का मङ्गल हो तो धनहीना और उच्च या स्वराशि का हो तो सब सुखों से युक्ता होती है ॥४॥

तृतीयस्थिते भूसुते बान्धवानां भवेदङ्गकष्टं सुखं वाहनानाम् ।
रिपूणां विनाशस्तथा द्रव्यलाभो नृपान्मित्रपक्षाज्जयो हायनेऽस्मिन् ॥५॥

भावार्थः—यदि तृतीय भाव में मङ्गल हो तो उस वर्ष बन्धुओं के अङ्ग में कष्ट, वाहनों का सुख, शत्रु का विनाश, द्रव्यलाभ, राजा अथवा मित्र के पक्ष में जय होती है ॥४॥

चतुर्थ भावस्थ मंगलफल—

यदा भूसुतः संभवेत्तुर्यभावे तदा किं ग्रहाः सानुकूला जनानाम्।
सुहृद्वर्गसौख्यं न किंचिद्विचिन्त्या कृपावस्त्रभूमीर्लभेद् भूमिपालात् ॥१॥

जडमतिरतिदीनो बन्धुसंस्थे च भौमे
न भवति कुलभार्ये बन्धुदैन्येन दुःखी।
भ्रमति सकलदेशे नीचसेवानुरक्तः
परवशरयोषित् लुब्धचित्तः सदैव ॥२॥

पदकरजविराड्वै नो तनूत्थं सुखं च
समरघरधरायां धैर्ययुग्धी धनीनः।
खरयुशनक वेदर्द् कर्जमन्दो हमेशः
प्रभवति च मिरीखो दोस्तखाने नरश्चेत् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में मङ्गल हो तो अन्य ग्रह अनुकूल रहते हुए भी व्यर्थ होते हैं उसे मित्र वर्गों से सुख बिल्कुल नहीं रहता उसकी बुद्धि हीन, दीन, पर्यटन करने वाला, नीच का सेवक, पर स्त्री से प्रेम करने वाला राजा से वस्त्र तथा भूमि लाभ करता है। वह लम्बी कद का बलिष्ठ, कठोर हृदय वाला और सर्वदा कर्ज लेनेवाला होता है ॥१-३॥

बन्धुहीना कुजे बन्धौ जाता गृहसुखोज्झिता।
लुब्धचित्ता पराशक्ता दुर्मती रोगभागिनी ॥४॥

भावार्थः—मङ्गल चतुर्थ भाव में हो तो बन्धुओं तथा घर के सुखों से रहिता लोभ करने वाली, पर पुरुष में आशक्त, कुबुद्धि और रोगिणी होती है ॥४॥

चतुर्थे कुजे वह्निपीडा व्रणार्तिः पशोः पीडनं व्यग्रता क्लेशकष्टम्।
कृषेः कर्मणो हानिरप्यत्र वर्षे भवत्यर्थहानिः क्रये विक्रयेऽपि ॥५॥

भावार्थः—चतुर्थ भाव में मङ्गल हो तो उस वर्ष अग्नि भय, मस्तक में पीडा, पशुओं को पीडा, व्यग्रता, क्लेश, कष्ट, खेती में हानि और क्रय-विक्रय में भी हानि होती है ॥५॥

पंचम भावस्थ मंगलफल—

कुजे पंचमे जाठराग्निर्बलीयान् न जातं तु जातं निहन्त्येक एव।
तदानीमनल्पा मतिः किल्विपेऽपि स्वयं दुग्धवत्तप्यतेऽन्तः सदैव ॥१॥

तनयभवनसंस्थे भूमिपुत्रे मनुष्यो भवति तनयहीनः पापशीलोऽविदुःखी।
यदि निजगृहतुङ्गे वर्तते भूमिपुत्रः कृशमलयुतगात्रं पुत्रमेकं ददाति ॥२॥

कमफहमतदाना अक्लखाने मिरीखः
पिशरजरवजीर-शेस्तदरखानयेस्यात् ।
अनिलकफजरोगैर्व्याकुलो बेमुरौवत्
गुसवर वद-अक्लश्चोदरव्याधियुक्स्यात् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से पञ्चम भाव में मङ्गल हो तो वह मनुष्य अधिक भोजन करने वाला, उसके पेट की अग्नि बहुत प्रबल रहती है। तथा बुद्धि पाप कर्मों में बढ़ी रहती है। वह मन ही मन जलता रहता है। उस मनुष्य के उत्पन्न हुए तथा गर्भ में रहने वाले सन्तान को भी नष्ट कर देता है। वह अत्यन्त क्रोधी, बुद्धिहीन, धन तथा सुख रहित जीवन यापन करने वाला होता है। यदि अपने गृह या उच्च का हो तो दुर्बल और कुरूप एक पुत्र होता है ॥१-३॥

सुतहीना सुते भौमे पापशीला च दुःखिनी ।
स्वभे स्वोच्चे स्थिते तत्र भवेदेकसुतान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि मंगल पञ्चम भाव में हो तो स्त्री सन्तान हीना, पापाचरण वाली, दुःख भागिनी होती है। उच्च या स्वराशि का मंगल हो तो एक पुत्र वाली होती है ॥४॥

कुजे पंचमस्थे सुतानां प्रपीडा रिपुणां विवादो भवेद् गुप्तचिन्ता।
स्वबुद्धेश्च नाशो भवेच्चाऽग्निघातः सकोशोदरे गुप्तपीडाऽब्दमध्ये ॥५॥

भावार्थः—वर्ष लग्न से मङ्गल पञ्चम भाव में हो तो पुत्र को पीड़ा, शत्रुओं से विवाद, गुप्तचिन्ता, बुद्धि का नाश, अग्निभय तथा उदर पीड़ा होती है ॥५॥

षष्ठ भावस्थ मंगलफल—

न तिष्ठन्ति षष्ठेऽरयोऽङ्गारके वै तदङ्गेरिताः सङ्गरे शक्तिमन्तः।
मनीषा सुखी मातुलेयो न तद्वत् विलीयेत वित्तं लभेतापि भूरि ॥

रिपुगृहगतभौमे सङ्गरे मृत्युभागी सुतधनपरिपूर्णस्तुङ्गगो सौख्यभागी।
रिपुगणपरिदृष्टे नीचगेक्षोणिपुत्रे भवति विकलमूर्तिः कुत्सितः क्रूरकर्मा ॥

रिपुजनपरिहन्ता खूवरो हुम्जवान् स्या-
ज्जशनजरज लालैर्युङ् नहैवानजातः।
यदि भवति मिरीखो मर्जखाने कदर्दान्
कृतकुलजननोखो मातृपक्षे कुठारः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से षष्ठभाव में मङ्गल हो तो वह बलवान और शत्रु को भी पराजित करता है। वह मनुष्य बुद्धिमान होता है उसे माता के भाइयों से सुख नहीं होता। उसका धन बार-बार नष्ट होता है किन्तु फिर भी बहुत द्रव्य लाभ करता है। यदि मङ्गल नीच राशिस्थ हो या अपने शत्रु से दृष्ट हो तो वह रोग युक्त और निन्द्य कर्म करने वाला होता है ॥१–३॥

कुजे धनवती षष्ठे रिपुरोगविवर्जिता।
पतिपुत्रसुखोपेता निर्बले च रुजान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि मङ्गल षष्ठभाव में हो तो स्त्री को शत्रु और रोग भय नहीं होता वह धन, पुत्र और पति सुख से युक्ता होती है। यदि मङ्गल निर्बल हो तो कुछ रोग भय होता है ॥४॥

कुजः षष्ठगः शत्रुःनाशं करोति स्वभूपाज्जयो मित्रपक्षाच्च लाभः।
झ्यानाञ्च सौख्यं भवेदङ्गनानां सुखं हायनेऽस्मिन् दशायांच तस्य ॥

भावार्थः—षष्ठभाव में मङ्गल हो तो उस वर्ष विशेष करके मङ्गल की दशा शत्रु का नाश मित्र से लाभ, राजा से जय और स्त्री से सुख होता है ॥५॥

सप्तम भावस्थ मंगलफल—

अनुद्धारभूतेन पाणिग्रहेण प्रयाणेन वाणिज्यतो नो निवृत्तिः।
मुहुर्मुञ्जदः स्पर्धिनां मेदिनीजः प्रहारार्दनैः सप्तमे दम्पतिघ्नः ॥१

मुनिगृहगतभौमे नीचसंस्थेऽरिगेहे
युवतिमरणदुःखं जायते मानवानाम्।
मकरगृहनिजस्थे नाऽन्यपत्निश्च धत्ते
चपलमतिविशालां दुष्टचित्तां विरूपाम् ॥२

कमशहवत किरयांवश्चवेरो नहि स्या-
ज्जिहिल जुलुमजंगैर्युञ्जन चाल्पः खमाणे।
तनुधनगमबेश्म स्त्रीसुखैर्वर्जिताङ्गो
भवति यदि जलादुल्कल्को जन्मकाले ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से सप्तमभाव में मंगल हो तो वह नि[illegible]
ही विवाह के कारण अथवा व्यापार हेतु धन संचय की लालसा से परदेशवा[illegible]
होता है। शत्रुओं द्वारा पराजित तथा अल्प स्त्री सम्भोग करने वाला होता है
अन्याय से युद्ध करने वाला तथा शरीर, धन, गृह और स्त्री सुख से वञ्चित रहता
सप्तम मङ्गल स्त्री को हो तो पुरुष का नाश और पुरुष को हो तो स्त्री का ना[illegible]
होता है। यदि उच्च का हो तो धन आदि से युक्त, सुखी होता है। नीच का
अपने शत्रु से दृष्ट हों तो रोग युक्त और निन्द्य कर्म करने वाला होता है ॥१-[illegible]

विधवा सप्तमे भौमे शुभेक्षणविवर्जिते।
दुश्चित्ताऽन्यजनाशक्ता चञ्चला दुःखभागिनी ॥४॥

भावार्थः—सप्तम भाव में मङ्गल शुभ दृष्ट न हो तो वह स्त्री विधवा हो[illegible]
है यदि शुभग्रह की दृष्टि भी हो तो वह दुष्ट स्वभाव वाली अन्य पुरुषों
आसक्ता चञ्चला और दुःख भागिनी होती है ॥४॥

कलत्रे कुजे स्त्रीषु रोगस्तथा च स्वचित्तात्मनोरध्वनि क्लेशकष्ट[illegible]
भयं वै रिपूणां विवादो जनानां दशा नेष्टदात्री भवेद्धायनेऽस्मिन्[illegible]

भावार्थः—यदि मङ्गल सप्तम भाव में हो तो उस वर्ष उसकी स्त्री को [illegible]
हो अपने चित्त में क्लेश, शत्रु से भय, मनुष्यों से विवाद तथा मङ्गल की द[illegible]
अनिष्ट कारिणी होती है ॥५॥

अष्टम भावस्थ मंगलफल—

शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये विधानेऽपि चेदष्टमे भूमिसूनुः।
सखा किं न शत्रूयते सत्कृतोऽपि प्रयत्ने कृते भूयते चोपसर्गैः ॥१॥
प्रलयभवनसंस्थे मंगले क्षीणनीचे व्रजतिनिधनभावं नीरमध्ये मनुष्यः।
धनु निकटचरेऽजे सर्वदा चैव भोगी करपदगसुनीलो मृत्युलोकं प्रयाति ॥

यदि भवति जलादुल्कूल्कको मौतखाने।
सततमहितभाषी गुह्यरुक्स्त्रीसुखोनः।
मुतफक्रिखदामे जौहरी सोथ जख्मी
कमफहमनः स्याल्लागरोऽसृग्विकारैः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से अष्टम भाव में मंगल हो तो शुभ फलदायक नहीं रहते। सत्कार करते रहने पर भी उसके मित्र शत्रु ही बने रहते हैं। कार्यों के अनुकूल उद्योग करने पर भी वह विघ्नों से पीड़ित होता रहता है। अप्रिय बोलनेवाला, गुप्त रोग से युक्त, स्त्री सुख से विहीन, चिन्तित रहने वाला और रक्त दोष से दुःख भोगने वाला होता है। यदि नीच या शत्रु राशि का हो तो जल में डूब कर मरता है। उच्च का हो तो सुख भोगकर मृत्यु को प्राप्त होता है।

कुजे मृत्यौ जले मृत्युः पत्युर्वा निधनं स्त्रियाः।
कृशाङ्गी कृष्णवर्णा च धन-धान्य-सुखोज्झिता ॥३॥

भावार्थः—अष्टम भाव में मङ्गल हो तो उस स्त्री का मरण जल में डूब कर होता है। या उसके पति का मरण होता है तथा दुबली, कृष्णवर्णा और धन धान्यादि सुख से वर्जित होती है ॥४॥

कुजे चाऽष्टमे शत्रुपीडाङ्गकष्टं व्रणस्यमोदयश्चाऽङ्गनानां च रोगः।
धनानां विनाशो भवेच्छस्त्रजातस्तथा व्यग्रता गुप्तचिन्ता नरस्य ॥५॥

भावार्थः—यदि मङ्गल अष्टम भाव में हो तो उसवर्ष मनुष्य को शत्रु से पीड़ा, अङ्ग में पीड़ा, व्रण की उत्पत्ति, स्त्री को रोग, धन का नाश शस्त्राघात, व्यग्रता, और मानसिक चिन्ता होती है।

नवम भावस्थ मंगलफल—

महोग्रा मतिर्भाग्यवित्तं महोग्रम् तपो भाग्यगो मङ्गलस्तं करोति।
भवेन्नादिमः श्यालकः सोदरो वा कुतो विक्रमस्तुच्छलाभे विपाके ॥१॥

नवमभवनसंस्थे क्षोणिपुत्रेऽतिरोगी नयनकरशरीरैः पिङ्गलः सर्वदैव।
बहुजनपरिपूर्णो भाग्यहीनः कुचैलो विकृतिजनसुवेषः शीलविद्यानुरक्तः॥

नरपतिकुलमान्यः संलभो बन्दनादौ
भवति यदि जलादुल्कल्कको बख्तखाने।
परयुवतिरतः स्यान्मानवो भाग्यवान्वै
पुरजसुखसुसिद्धो हिर्जगर्दश्च लेखः ॥२॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से नवमभाव में मङ्गल हो वह बड़ा बुद्धिमान् और तेजस्वी होता है। उसे जेठा साला वा सगे भाइयों का सुख नहीं होता है। फल प्राप्ति की इच्छा से किये गये कार्य में उसे बहुत कम सफलता मिलती है। पर स्त्री से प्रेम करनेवाला, धनवान्, भाग्यवान् किन्तु रोगी, पिङ्गलवर्णगात्र, कुवस्त्रधारी, बहुत परिवारवाला, पुण्यहीन तथा व्यर्थ घूमकर समय बितानेवाला होता है ॥१–२॥

धर्मभागवते भौमे जाता धर्मधनोज्झिता।
गीत-शिल्पकलाभिज्ञा ख्याता भूरिकुटिम्बिना ॥४॥

भावार्थः—नवमभाव में मंगल हो तो जाता धर्म और धन से हीना, गीत और कला जाननेवाली, लोक में ख्यात और बहुत परिवारवाली होती है ॥४॥

धर्मे गते भूमिसुते च वर्षे पुण्योदयो वित्तसमागमश्च।
भाग्योदये मानविवर्धनञ्च महाप्रतिष्ठाऽम्बरलब्धिरत्र ॥५॥

भावार्थः—यदि वर्षलग्न से नवमभाव में मंगल रहे तो उस वर्ष में पुण्य उदयधन का लाभ, मान की वृद्धि तथा प्रतिष्ठा और वस्त्र का लाभ होता है ॥५॥

दशम भावस्थ मंगलफल—

कुलेतस्य किं मङ्गलं मङ्गलो नो जनैर्मूयते मध्यभावे यदि स्यात्।
स्वतः सिद्धएवावतंसीयतेऽसौ वराकोऽपि कण्ठोरवः किं द्वितीयः ॥१॥
दशमगतमहीजे दान्तिकः कोशहीनो निजकुल जयकारी कामिनीचित्तहारी
तरठसमशरीरो भूमिजोऽथोपकोपो द्विजगुरुजनभक्तो नाऽतिदीर्घो न ह्रस्वः

पुरफितरितसंज्ञः काबिलो नेककिर्दा-
नयसमोरह लोके पूजितः साहसी च।
मिहिरजरजलालञ्जारजेवर्युतो ना
भवति यदि मिरीखो शाहखाने सखो स्यात् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से दशमभाव में मङ्गल हो उसके कुल में ङ्गलकार्य विवाह आदि नहीं होते। वह लोगों के साथ सुख पाता है। नीच ल का भी हो तो भी अपने प्रभाव से सर्वश्रेष्ठ और सिंह के समान रहता है। ध्यम शरीरवाला, स्त्रियों का प्रिय, नाशकरनेवाला, कंजूस तथा नीतिज्ञ होता है। ह खेती करनेवाला, ब्राह्मण और गुरु का भक्त, न अधिक लम्बा न अधिक टा, लज्जावान् भूपगप्रिय और धन आदि से युक्त होकर दानी होता ॥१–३॥

कुजे राज्ये कुलश्रेष्ठा कार्यदक्षा नृपप्रिया।
परोपकारिणी तुष्टा वस्त्राभरणभूषिता ॥४॥

भावार्थः—दशमभाव में मङ्गल हो तो वह स्त्री अपने कुल में सबसे श्रेष्ठा र्यों में निपुण, राजा की पत्नी परोपकारिणी, सन्तुष्टा और वस्त्र-भूषण से भूषिता होती है ॥४॥

कर्माश्रितो भूतनयोऽब्दमध्ये कर्मोदयं चार्थसमागमञ्च।
स्वगेहसौख्यं च रिपोर्विनाशं व्यायामसौख्यं प्रकरोति वर्षे ॥५॥

भावार्थः—दशमभाव में मङ्गल हो तो उस वर्ष में कर्म का उदय, धन-म, अपने घर में सुख, शत्रु का नाश और व्यायाम में कौशल होता है ॥५॥

एकादश भावस्थ मंगलफल—

कुजः पीडयेल्लाभगोऽपत्यशत्रून् भवेत्संमुखो दुर्मुखोऽपि प्रतापात्।
धनं वर्धते गोधनैर्वाहनैर्वा सकृच्छन्यतार्थे च पैशून्यभावात्॥
सुरजनहितकारी चायसंस्थे च भौमे नृप इव गृहमेधी पीडितः कोपपूर्णः
भवति च यदि तुङ्गे लोकसौभाग्ययुक्तो धनकिरणनियुक्तः पुण्यकामार्थलो
जरमखमलमर्या जर्कशीसाहिवोभि-
स्तुरगरथपदात्यैर्युग्जनश्चारिहीनः।
यदिभवति जलादुल्कल्कको याप्तिखाने
मदनसमरदक्षः पण्डितः सत्यगन्ता ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से एकादश भाव में मङ्गल हो उसके
और शत्रुओं को पीड़ा होती है। वह मनुष्य भाग्यहीन हो तो भी अपने प्रता
चमकता है। चौपायों के व्यापार से उसका धन बढ़ता है। वाहनों के सु
युक्त, दुश्मनों से रहित, कामक्रीड़ा में समर्थ तथा बुद्धिमान और सत्यवादी
है। वह देवों का भक्त, पुत्रादि सन्तान से युक्त किन्तु पीड़ासहित और
होता है। यदि उच्च (मकर) का मङ्गल हो तो अत्यन्त भाग्यशाली, ते
पुण्यवान् और धन का लोभी होता है ॥१–३॥

लाभे धनवती भौमे सदा लाभसमन्विता।
पति-पुत्रसुखोपेता निपुणा सर्वकर्मसु ॥४॥

भावार्थः—यदि एकादशभाव में मङ्गल हो तो बहुत धनवाली, स
में लाभ करनेवाली, पति, पुत्रादि के सुख से युक्ता और सब कार्य में
होती है।४॥

अवनितनयलाभे राज्यलाभोऽर्थलाभोभवति रिपुविनाशो मित्रपक्षा
द्धयभवनहिरण्यं प्राप्यते चाऽम्बराणि तनयसुखविवृद्धिर्जायते हायनेऽ

भावार्थः—जिस मनुष्य के वर्षप्रवेशकालिक लग्न से एकादशभाव में
हो तो उस वर्ष में राज्यलाभ, धनलाभ, शत्रु का नाश, मित्र पक्ष से
पुत्रसुख की वृद्धि होती है।५॥

द्वादश भावस्थ मंगलफल—

शताक्षोपि तत्सक्षतो लोहघातैः कुजो द्वादशाऽर्थस्य नाशं करोति ।
मृषा किंवदन्ती भयं दस्युतो वा कलिंपारधीहेतुदुःखं विचिन्त्यम् ॥१॥

परधनहरणेच्छुः सर्वदा चञ्चलाक्षश्चपलमतिविहारी हास्ययुक्तः प्रचण्डः ।
भवति च सुखभागी द्वादशस्थे च भौमे परयुवतिविलासो साक्षिकः कर्मपूरः॥

यदि भवति मिरीखः खर्चखाने गतश्च
स्वजनहृदयभेत्ता कर्कशैर्वा वचोभिः ।
महमहवजजुल्मी साहिदोवेजनः प्राग्
जठरदहनदर्पो नुर्हमेशः परेशान् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से बारहवें स्थान में मंगल हो उसके द्रव्य का नाश होता है । सर्वदा दूसरे के धन का लोभी, चञ्चलनेत्र, चञ्चलबुद्धि, हास्य-प्रिय, उग्रस्वभाव, परस्त्रीगामी, अपने बन्धुओं को कटुवचन कहकर कष्ट देनेवाला और सर्वदा व्यर्थ परेशान रहनेवाला होता है । उसे चोरी आदि का झूठा कलंक लगता है । वह बहुत ही बलवान् किन्तु परतन्त्र रहता है ॥१–३॥

व्ययशीला व्यये भौमे पतिहीना च निर्बला ।
निर्धना क्रोधसंयुक्ता ज्ञाता जनविरोधिनी ॥४॥

भावार्थः—यदि द्वादश भाव में मङ्गल हो तो स्त्री अधिक खर्च करनेवाली, पतिसुख से हीना, निर्बला, धनहीना, क्रोधिनी और बन्धुओंसे विरोध करनेवाली होती है ॥४॥

व्ययश्चापदो भूमिपुत्रे व्ययस्थे भवेन्नेत्रपीडा चकर्णे विकारः ।
शिरोऽर्तिर्जनानां विरोधस्तथा स्यात् कलत्राङ्गपीडा भवेत्तत्र वर्षे ॥५॥

भावार्थः—जिस मनुष्य के वर्षलग्न से द्वादश भाव में मंगल हो तो व्यय, विपत्ति, अंग में पीड़ा, परिजनों से विरोध तथा स्त्री के शरीर में रोग होता है । विशेष करके उस वर्ष में मंगल की दशा में उक्त फल होता है ॥५॥

प्रथम भावस्थ बुधफल—

बुधो मूर्तिगो मार्जयेदन्यरिष्टं वरिष्ठा धियो वैखरीवृत्तिभाजः।
जनादिव्यचामीकरीभूतदेहाश्चिकित्साविदोदुश्चिकित्स्या भवन्ति ॥१॥

तनुगतशशिपुत्रे कान्तिमांश्चातिहृष्टो
विमलमतिविशालः पण्डितस्त्यागशीलः।
मितमृदुशुचिभोगी सत्यवादी विलासी
बहुतरसुखभागी सर्वकालप्रवासी ॥ २ ॥

साहब् सवारो जितखूबरोमा वुतारहः साहबहिम्मतश्च।
ताले भवेच्चेत्सततं विनीतो दानी चिरं चात्मजसौख्ययुक्स्यात् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न में बुध हो उसके अन्यग्रहों से उत्पन्न अरिष्टों का नाश होता है। वह मनुष्य बुद्धिमान, लेखक वृत्ति से निर्वाह करनेवाला और तपे हुए सोने की तरह कान्तिवाला होता है। न्यायकर्ता, दानी, विलास प्रिय, सुन्दर रूपवाला और बहुत काल तक पुत्र पौत्रादि के सुख से सुखी रहता है और सदा परदेश में रहने वाला होता है ।१—३॥

बुधेऽङ्गे विदुषी धीरा सुशीला विपुलात्मजा।
दक्षा शिल्पकलाभिज्ञा विनीता त्यागसंयुता ॥४॥

भावार्थः—यदि जन्मलग्न में बुध हो तो वह स्त्री पण्डिता, धैर्यवती, सुशीला और अधिक सन्तानवाली, गृहकार्य में कुशला, शिल्पकला जाननेवाली, प्रियवादिनी और दानादि सत्कार्य करनेवाली होती ॥४॥

रजनिकरसुतः स्याल्लग्नगो हायनेऽस्मिन्
बहुबलविवृद्धिर्योषितश्चापि सौख्यम्।
भवति रिपुविनाशो भूपपक्षाच्च लाभो
धनजयसुखकारी मित्रलाभं करोति ॥५॥

भावार्थः—जिसके वर्षलग्न में बुध हो उसको उस वर्ष में बल की बहुत वृद्धि होती है। और स्त्री को सुख होता है। तथा शत्रु का नाश, राजा से लाभ, धन, जय, मित्र का लाभ होता है ॥५॥

द्वितीय भावस्थ बुधफल—

धने बुद्धिमान् बोधने वाहुतेजाः सभासङ्गतो भासते व्यास एव।
पृथूदारताकल्पवृक्षस्य तद्वत् बुधैर्भण्यते भोगतः षट्पदोऽयम् ॥१॥
भवति च पितृभक्तः सुस्थिरेः पापभीरुर्मृदुतनुखररोमा दीर्घकेशोऽतिगौरः।
वनगतशशिसूनौ सत्यवादी विहारी बहुतर वसुभागी सर्वकालप्रवासी ॥२॥

शीरींसखून् दानिशवर्गनीच-तवङ्गरः स्याद्यदि चश्मखाने।
उतारदो ना स्वजनानुरक्ते भवेद्विनीतः शुभकृत्यमेति ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वितीय भाव में बुध हो तो बुद्धिमान और भुजबल से प्रतापी होता है। वह पिता का भक्त, सत्यवादी, विहारप्रिय अति गौरवर्ण, कुटुम्बों में प्रीति रखने वाला होता है। अत्यन्त उदार तथा विद्वानों में श्रेष्ठ और परदेशी होता हैं। वह दानी होते हुए भी बहुत कम दान करनेवाला होता है। उसका हृदय कोमल, पवित्र भोजन करनेवाला और भ्रमर के समान उपभोगी होता है ॥१—३ ॥

धने धनवती सौम्ये सुन्दरी गुरुवत्सला।
सदोद्यमरता दक्षा सुख-सन्ततिसंयुता ॥४॥

भावार्थः—यदि द्वितीय भाव में बुध हो तो वह स्त्री धनवती, कोमल हृदय वाली, सुन्दरी, गुरुजनों की भक्तिवाली, कार्य कुशला और सन्तान सुख से युक्ता होती है ॥४॥

धनस्थो यदि स्यात्सुतः शीतरश्मेर्भवेद्द्रव्यलाभः कुटुम्बाज्जयश्च।
रिपोर्नाशनं मानकीर्तिप्रवृद्धिः प्रतिष्ठाधिका हायनेऽस्मिन् सुखं च ॥५॥

भावार्थः—जिस मनुष्य के द्वितीय भाव में बुध हो तो उस वर्ष में द्रव्यलाभ, कुटुम्बों में आदर, शत्रु का नाश, यश तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है ॥५॥

तृतीय भावस्थ बुधफल—

वणिङ्मित्रता पण्यकृद्वृत्तिशीलो वशित्वं धियो दुर्वशानामुपैति।
विनीतोऽतिभोगं भजेत्संन्यसेद्वा तृतीयेऽनुजैराश्रितो ज्ञे लतावान् ॥१॥

साहसी निजजनैः परियुक्तश्चित्तशुद्धिरहितो हृतसौख्यः।
मानवः कुशलतेप्सितकर्त्ता शीतभानुतनयेऽनुजसंस्थे ॥२॥

मुरौवती साहवदर्दसंज्ञः प्रभूतिमित्रप्रमदाप्रियश्च।
उतारवश्चेन्नशरोयशीयुंखोनो भवेन्नाखुशरो हमेशः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से तृतीय भाव में बुध हों वह वैश्य लोगों से मित्रता करके व्यापार से लाभ करता है। वह अज्ञानीजनों की बुद्धि में आकर उनके वश हो जाता है। विषयों का अधिक उपभोग करने से आगे चलकर सन्यासी (त्यागी) होता है। छोटे भाइयों का आश्रित और नम्र रहता है। चतुर, परिवारवाला, अशुद्ध हृदय वाला किन्तु कुशलतापूर्वक अपने अभिष्ट को सिद्ध करने वाला होता है। सर्व प्रकार के रोग से मुक्त एवं प्रभावशाली, रूपवान और वाहनों के सुख से युक्त रहता है ॥१–३॥

सहजे ज्ञे जनैर्युक्ता दुश्चित्ता दुःखभागिनी।
स्वल्पसोदरसंयुक्ता दक्षाभीष्टप्रसाधने ॥४॥

भावार्थः—यदि तृतीय स्थान में बुध हो तो परिजनों से युक्ता, कुटिलहृदय, दुःख भोगनेवाली, थोड़े सहोदर वाली, अपने कार्य को करने वाली होती है ॥ ४ ॥

शशिसुतः सहजे यदि संस्थितः सकलतापविनाशकरस्तदा।
भवति मानविवृद्धिरथो यशः सुतसुखं च तथैव धनागमः ॥५॥

भावार्थः—जिस मनुष्य के वर्षलग्न से तृतीय भाव में बुध हो तो वह वर्ष सब प्रकार के ताप को नष्ट करता है तथा मान और यश की वृद्धि, पुत्रसुख और धन का आगमन होता है ॥५॥

चतुर्थ भावस्थ बुधफल—

बहुतरधनपूर्णो भ्रातृहर्ता च पापे बहुतरबहुपत्नो पूर्णगेहे स्वतुङ्गे।
चपलमतिरलज्जः क्षीणजङ्घः कृशाङ्गः शिशुवयसि च रोगी बन्धुसंस्थे कुमारे॥

पुष्टोऽनपत्योथ स वैयशेच्छो दानीश्वरो गीतप्रियः खसी च।
उतारदः स्याद्यदि दोस्तखाने शीरींसखुन्कार्यगते मृषी च॥२॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थभाव में बुध हो तो मनुष्य हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थशरीरवाला, स्वतन्त्र, दानी, नाच-गान का प्रेमी, मधुर भाषी किन्तु झूठ बोलनेवाला और सन्तान सुख से हीन होता है। यदि पापी बुध होतो धनों से युक्त, बन्धुहीन होता है। यदि अपने उच्च या गृह में हो तो बहुत स्त्रीवाला, चञ्चल, निर्लज, कृशजाँघवाला, दुर्बलदेह और बाल्यावस्था में रोगी होता है॥१–२॥

धनपूर्णा सुखे सौम्ये वामा कामाधिका सरुक्।
कृशांगी चञ्चला हास्यप्रिया च सहजोज्झिता॥३॥

भावार्थः—यदि चतुर्थ भाव में बुध हो तो स्त्री अधिक कामवाली, रोगिणी, दुबली, चञ्चला, हास्य में प्रेम रखनेवाली और सहोदर सुख से रहिता होती है॥३॥

बुधश्चतुर्थः प्रकरोति सौख्यं द्रव्यागमं मित्रशमागमं च।
गो-भू-हिरण्यादिसमागमं च महत्सुखं वाहनमत्र वर्षे॥४॥

भावार्थः—वर्षलग्न से चतुर्थभाव में बुध हो तो उस वर्ष में द्रव्यलाभ, मित्रों की वृद्धि, गो, पृथ्वी, सुवर्ण तथा अनेक प्रकार के सुख और वाहनों का लाभ होता है॥४॥

पंचम भावस्थ बुधफल—

वयस्याद्विमे पुत्रगर्भो न तिष्ठेद् भवेत्तस्य मेधार्थसंपादयित्री।
बुधैर्भण्यते पञ्चमे रौहिणेये कियद्विद्यते कैतवस्याभिचारम् ॥१॥

तनयमन्दिरगे शशिनन्दने सुतकलत्रयुतः सुखभाजनम्।
विकचपङ्कजचारुमुखः सुखी सुरगुरुद्विजभक्तियुतः शुचिः ॥२॥

सुतान्वितः सुर्रफितद्भवेन्ना युतारदः स्याद्यदि अक्लखाने।
दानाग्रणीः साविरसंज्ञकश्च शिगूफुरुसाह्वहिम्मतश्च ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से पञ्चमभाव में बुध हो तो उसे प्रथम कन्या संतती होती है वह अत्यन्त कपटी, चतुर और कार्यकुशल होता है। वह स्त्री-पुत्र आदि के सुख से युक्त, धनवान, सुन्दर मुखवाला शौकीन तथा देव, ब्राह्मण और गुरु का भक्त होता है ॥१–३॥

बुधे पुत्रवती पुत्रे सुधवा धनसंयुता।
सुरूपा सुखसम्पन्ना गुरुभक्तिपरायणा ॥४॥

भावार्थ—यदि पञ्चमभाव में बुध हो तो स्त्री पुत्रवती, पति सुख से युक्त, धन, सुन्दरता और सुखसे युक्ता तथा गुरुजनोंमें भक्ति रखने वाली होती है ॥४॥

सुतभवनगतश्चेत् सोमपुत्रः सतानां प्रशवसुखकरः स्यादर्थलाभं प्रदद्यात्
स्वजनसुखकारी हेमसस्याम्बराणिसुखमपि नृपपक्षान्मित्रपक्षाज्जयश्च

भावार्थः—वर्षलग्न से पञ्चमभाव में बुध हो तो पुत्रोत्पत्ति और धन लाभ होता है। नौकरों को सुख तथा सुवर्ण, धान्य, वस्त्र और राजा से सुख तथा मित्रपक्ष में जय होती है ॥५॥

षष्ठ भावस्थ बुधफल—

विरोधो जनानां निरोधो रिपूणां प्रबोधोयतीनां च रोधोऽनिलानाम् ।
बुधे सद्व्यये व्यावहारो निधीनां बलादर्थकृत्संभवेच्छत्रुभावे ॥१॥

अरिनिकेतनवर्तिशशाङ्कजो रिपुकुलाद्भयदो यदि वक्रगः ।
यदि च पुण्यगृहे शुभवीक्षितो रिपुकुलं विनिहन्ति शुभप्रदः ॥२॥

बेरो नर स्यान्नसिआ विधानो बद्खुल्कक: काहिलजाहिलोपि ।
बंदूमकाने हि भवेद्वीरुल्करक्रो यदा मांधविपक्षयुक्चेत् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से षष्ठ भाव में बुध हो तो वह लोगों से विरोध करने वाला और शत्रुओं से अजय रहता है। संन्यासी के साथ ज्ञान की वार्ता करता है। प्राणायाम का शौख रखता है और अपना द्रव्य सत्कार्य में खर्चे तथा भुजबल (अनाश्रित) से धन संचय करता है। बुध यदि वक्र हो तो सदा दुःख भोगने वाला, शत्रु से भय खाने वाला और मददगार से हीन होता है। यदि शुभग्रह की राशि में शुभग्रह से दृष्ट हो तो शत्रु को जीतनेवाला और सुखी होता है ॥१–३॥

रिपौ बुधे शुभैर्दृष्टे रिपुरोगभयाकुला ।
सपापे रिपुहन्त्री सा नैरुज्यसुखसंयुता ॥४॥

भावार्थः—यदि षष्ठभाव में बुध शुभग्रह से युत अथवा दृष्ट हो तो रोग और शत्रु से भय रखती है। पापग्रह से युत, दृष्ट हो तो रोग और शत्रुभय से रहित तथा सुख से युक्ता होती है ॥४॥

रिपुस्थानसंस्थे रिपूणां विवादो भवेदङ्गनानां च कष्टं तथैव ।
व्ययो व्यग्रता स्वे शरीरे च कष्टं कफार्तिर्महादुःखमप्यत्र वर्षे ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से षष्ठभाव में बुध हो तो शत्रु से विवाद, स्त्री कष्ट, अपव्यय, व्यग्रता, अपने शरीर में पीड़ा और कफरोग का विशेष प्रकोप उस वर्ष रहता है ॥५॥

सप्तम भावस्थ बुधफल—

सुतः शीतगोः सप्तमे शं युवत्या विधत्ते तथा तुच्छवीर्यं च भोगे।
अनस्तंगतो हेमवद्देहशोभां न शक्नोति तत्संपदो वानुकर्तुम् ॥१॥

तुरगभावगते हरिणाङ्कजे भवति चञ्चलमध्यनिरीक्षणः।
विपुलवंशभवप्रमदापतिः स च भवेच्छुभगो शशिवंशजे ॥२॥

तालेवरः सत्यवचा मुसाहिब् परोपकारी जनखूबरो च।
उतारदः स्याद्यपि सप्तमे च भवेन्नरः काबिल वा मुरौवतः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से सप्तमभाव में बुध हो पर अस्तंगत न हो (उदित) हो तो स्त्री सुख से युक्त और उत्तम कुलोत्पन्न स्त्री का पति होता है। किन्तु स्त्री संयोग में उसका वीर्य निर्बल हो जाता है। उसके शरीर की शोभा सुवर्ण के समान चमकनेवाली होती है। यह बहुत धनवाला, सत्यवादी, सुशील और प्रभावशाली किन्तु मध्यम दृष्टिवाला (नेत्रों से कमजोर) रहता है ॥१-३॥

सुधवा सप्तमे सौम्ये सुखसन्ततिसंयुता।
चञ्चला चारुवक्त्रा च कुशला गृहकर्मसु ॥४॥

भावार्थः—यदि सप्तमभाव में बुध हो तो सुन्दर पतिवाली, सुख और सन्तान-वाली, चञ्चल प्रकृति, रूपवती और घर के कार्यों में निपुणा होती है ॥४॥

शशाङ्कात्मजे सप्तमस्थेऽङ्गनानां विलासादि सौख्यं भवेत्तत्र वर्षे।
प्रतिष्ठाधिकारी हिरण्याम्बराप्तिर्जयः सर्वदा तद्दशायां तथैव ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से सप्तमभाव में बुध हो तो उस वर्ष स्त्रियों में आनन्द, प्रतिष्ठा और अधिकार, सुवर्ण और जय प्राप्त हो, विशेष कर बुध की दशा अन्तरदशा में उपरोक्त फल समझें ॥५॥

अष्टम भावस्थ बुधफल—

शतंजीविनो रन्ध्रगे राजपुत्रे भवन्तीह देशान्तरे विश्रुतास्ते।
निधानं नृपाद्विक्रयाद्वा लभन्ते युवत्युद्भवं क्रीडनं प्रीतिमन्तः ॥१॥
निधनवेश्मनि सत्ययुतो बुधे शुभगृहेऽतिथिमण्डन एव च।
यदि च पापयुते रिपुगेहगे मदनकाम्यजवेन पतत्यघः ॥२॥
उमर्दराजाः सुतरां सगर्वमेकंपुरं पार्थिवलब्धवित्तम्।
वेरो विधानं हि नरं प्रकुर्यादुतारदो मार्गमकानगश्चेत् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से अष्टमभाव में बुध हो वह दीर्घायु, अभिमानी, बान्धवों से विरोध करने वाला, पैदल चलने में आलसी तथा व्यापार से बहुत धन कमाता है। बुध पापग्रह से युत हो तो कामदेव के वस होकर पतित होता है यदि शुभग्रह की राशि में हो तो सत्यवक्ता, अतिथि का सत्कार करनेवाला, स्वदेश तथा परदेश में प्रसिद्ध होता है ॥४॥

बुधेऽष्टमगते जाता स्वल्पायुः सत्यवादिनी।
दानशीला धनैर्हीना सपापे शुभवर्जिता ॥४॥

भावार्थः—यदि अष्टमभाव में बुध हो तो स्त्री थोड़ी आयुवाली, सत्य-बोलनेवाली, दानकरनेवाली, सत्यकार्य में पैसे का मोह नहीं रखती अतः सदा खजाने से हीना होती है। यदि पापयुक्त बुध हो तो सुखहीना होती है ॥४॥

निशानाथपुत्रो यदा रन्ध्रसंस्थो नरं मृत्युतुल्यं कफार्तिं करोति।
ज्वराणां प्रकोपो भवेन्नेत्रपीडा भयं व्यग्रता हायने तद्दशायाम् ॥५॥

भावार्थः—अष्टम स्थान में बुध हो तो उस वर्ष विशेष करके बुध की दशा अन्तरदशा में मनुष्य को मरणतुल्य कष्ट, कफ और ज्वर का भय, नेत्र में पीड़ा और व्यग्रता होती है ॥५॥

नवम भावस्थ बुधफल—

बुधे धर्मगे धर्मशीलोऽतिधीमान् भवेद्दीक्षितः स्वधुनीष्णातको वा।
कुलोद्योगकृद्भ्रातुवद्भूमिपालात् प्रतापाधिको बाधको दुर्मुखानाम् ॥१॥

नवमसौम्यगृहे शशिनन्दने धनकलत्रसुतेन समन्वितः।
भवति पापयुते विपथस्थितः श्रुतिविमन्दकरः शशिजेऽधमः ॥२॥

दानीश्वरः सत्यगुणैरुपेतःशुभ्रो गर्नी धर्मपरस्तबङ्गरः।
यदा दृष्टीरुल्कल्को नशीबखाने भवेत्स प्रथितः शुभङ्करः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से नवमभाव में बुध हो और शुभग्रह से युक्त हो तो वह धर्मपरायण, बुद्धिमान्, गुणी वैदिक अथवा तान्त्रिक, कुल में विख्यात, धन, स्त्री और पुत्रों से युक्त होता है। यदि पापग्रह से युत हो तो जातक कुमार्गगामी तथा वेद शास्त्रों को नहीं माननेवाला होता है ॥१—३॥

धर्मे धर्मवती सौम्ये, पतिपुत्रधनान्विता।
सुरूपा शुभशीला च पापयुक्तेऽन्यथा फलम् ॥४॥

भावार्थः—यदि नवमभाव में बुध हो तो जाता धर्मपरायणा, पति, पुत्र और धन से युक्ता, सुन्दरी और सुशीला होती है। बुध पापग्रह से युक्त हो तो सब फल विपरीत समझना चाहिये ॥४॥

धर्मस्थितः शशिसुतः सुतलाभसौख्यमर्थागमं सततमाशु शुभं प्रकुर्यात्।
भूपाज्जयो भवति कीर्तिविवर्धनं च भाग्योदयो रिपुविनाशनमत्र वर्षे ॥

भावार्थः—वर्षलग्न से नवमभाव में बुध हो तो उस वर्ष में पुत्रोत्पत्ति, धन का लाभ और शुभकारक होते हैं, तथा राजा से जय, कीर्ति की वृद्धि, भाग्योदय और शत्रु का नाश होता है ॥५॥

दशम भावस्थ बुधफल—

भितं संवेदेन्नो भितं संलभेत प्रसादादिवैकारिसौराजवृत्तिः ।
बुधे कर्मगे पूजनीया विशेषात् पितुःसंपदो नीतिदण्डाधिकारात् ॥१॥

गुरुजनस्य हिते निरतो जनो बहुधनो दशमे शशिनन्दने ।
निजभुजार्जितवित्ततुरङ्गमो बहुधनैर्नियतो मितभाषणः ॥२॥

साहब् जलालो मुतमौवलस्यान्नरेन्द्रमुख्यः शुभकर्म कुन्ना ।
शीरींसखुन्साहबदर्दसंज्ञश्चोत्तारदश्चेत्खलु शाहखाने ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से दशमभाव में बुध हो उसे पिता की सम्पत्ति प्राप्त होती है। वह बहुत प्रभावशाली, अपने भुजबल से धन और वाहनों के सुख प्राप्त करता है। लोगों पर अनुग्रह, और मधुर वचन बोलने से सबों का प्रिय, सुन्दर स्वरूपवाला, न्यायकर्त्ता और अपने इर्द-गिर्द राजा के समान शोभा पाता है ॥१-३॥

सधना कर्मगे सौम्ये गुरुभक्तिपरायणा ।
कुशला सर्वकार्येषु सुन्दरी मितभाषिणी ॥४॥

भावार्थः—यदि दशमभाव में बुध हो तो धनवती, गुरुजनों की सेविका सब कार्य में कुशला, रूपवती और कम बोलनेवाली होती है ॥४॥

गगनगः शशिजो यदि हायने भवति वाहनसौख्यकरस्तदा ।
सुतविवृद्धिरथापि धनागमो विलसनं च तथा नृपतेर्जयः ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से दशमभाव में बुध हो तो उस वर्ष में वाहन के लिए सुखकारक होते हैं तथा पुत्र की वृद्धि, धनलाभ, विलास और राजा से जय होती है ॥५॥

एकादश भावस्थ बुधफल—

विना लाभभावे स्थितं भेशजातं न लाभो न लावण्यमानृण्यमस्ति।
कुतः कन्यकोद्वाहदानं च देयं कथं भूसुरास्त्यक्ततृष्णा भवन्ति ॥१॥

श्रुतमतिर्निजवंशहितः कृशो बहुधनप्रमदाजनवल्लभः
रुचिरनीलवपुः शुभलोचनो भवति चायगते शशिजे नरः ॥२॥

तवङ्गरश्चात्मजसौख्ययुक्स्याद्दानाग्रणीर्भूपप्रियस्सिपाही ।
सर्दारकः पाकदिलो दवीरुल्कल्कोयदायाफ्तमकानगः स्यात् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से एकादशभाव में बुध हो तो जातक धनाढ्य, सुन्दर स्वरूप वाला, तेजस्वी, पुत्र के सुख से युक्त, अपने कुल का पोषक, दाताओं में श्रेष्ठ, सच्चा दिलवाला और विनीत होता है। उसे स्त्रियों में विशेष आसक्ति रहती है। शास्त्र चिन्तक तथा सर्वदा ऋणमुक्त रहता है। कहने का तात्पर्य है कि जिस मनुष्य के एकादश स्थान में बुध हो वह सब तरह से सुखी जीवन व्यतीत करता है ॥१–३॥

लाभे बुधे कृशा जाता सुखसन्ततिसंयुता ।
सुनेत्रा स्वहिता श्यामा सदा लाभसमन्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि एकादश भाव में बुध हो तो स्त्री कृशवदना किन्तु सन्तान सुख से युक्ता, सुन्दर स्वरूप तथा नेत्रवाली, हित चाहनेवाली, श्यामवर्णा और सब कार्य में लाभ करनेवाली होती है ॥४॥

लाभाश्रितो शशिसुतो जयसम्पदश्च धान्याम्बराणि बहुलानि करोत्यवश्यं।
कीर्तेर्विवर्धनकथार्तिविनाशनं च स्याद्धायने पशुविवर्धनमत्र लाभः ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से एकादश भाव में बुध हो तो जय, सम्पत्ति, धान्य, वस्त्र, कीर्ति की वृद्धि, दुःख का नाश, पशुओं की वृद्धि तथा सब प्रकार से लाभ होता है ॥५॥

द्वादश भावस्थ बुधफल—

नचेद् द्वादशे यस्य शीतांशुजातः कथं तद्गृहं भूमिदेवा भजन्ति ।
रणे वैरिणो भीतिमायान्ति कस्मात् हिरण्यादिकोशं शठः कोऽनुभूयात् ॥

भवति च व्ययगे शशिनन्दने विकलमूर्तिधरो धनवर्जितः ।
परकलत्रधनेऽपि च चित्तवान् व्यसनदूररतः कृतकः सदा ॥२॥

नापाकजनैश्चारुगुणैरुपेतो वेतालकः कम्शद्दवर्बेदर्दः ।
उतारदः स्याद्यदि खर्चखाने भवेद्धिरीसोपि च गर्दवर्दः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वादश भाव में बुध हो वह ब्राह्मणों का भक्त, व्यसन से रहित और उपकारी होता है। दूसरे के धन और स्त्री में लोभ करनेवाला, किसी का भी कुछ नहीं सुननेवाला व्यर्थ घूमने वाला नीच जाति के संसर्ग में रहकर नीच गुणों से युक्त होता है। दुष्ट लोग उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते और शत्रु युद्ध में पराजित होते हैं किन्तु सर्वदा चिन्तित, दुःखी रहता है ॥१–३॥

व्यये बुधे सरुग्देहा सदा व्यग्रा धनार्जने।
त्यागशीला परासक्ता दुश्चित्ता धनवर्जिता ॥४॥

भावार्थः—यदि द्वादश भाव में बुध हो तो जाता रोगिणी, कुटिलहृदया, परपुरुष में आसक्त, धन से हीना किन्तु दान करनेवाली होती है ॥४॥

बुधे द्वादशस्थे रिपूणां विवादो व्ययो व्यग्रता चाऽथ कर्णे विकारः।
दशा नेष्टकर्त्री भवेन्नेत्रपीडा कफार्तिश्च कष्टं तथा हायनेऽस्मिन् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से द्वादश भाव में बुध हो तो उस वर्ष में शत्रुओं से विवाद, अधिक खर्च, व्यग्रता, अङ्ग में पीड़ा, कफ विकारादि अनेक कष्ट होते हैं तथा बुध की दशा नेष्टकारिणी होती है।

प्रथम भावस्थ गुरुफल—

गुरुत्वं गुणैर्लग्नगो देवपूज्ये सुवेशी सुखी दिव्यदेहोऽल्पवीर्यः।
गतिर्भाविनी पारलोकी विचिन्त्या वसूनि व्ययं संबलेन व्रजन्ति ॥१॥

विविधवस्त्रविपूर्णकलेवरः कनकरत्नधनः प्रियदर्शनः।
नृपतिवंशजनस्य च वल्लभो भवति देवगुरौ तनुगे नरः ॥२॥

मुश्तरी यदि भवेत्खलु ताले साहिबः खुशदिलो मनुजः स्यात्।
आमिलः पुरुसखुन् सिरदारः फारसो ह्यकविरो महबूबः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न में बृहस्पति हो वह सुन्दर स्वरूपवा तेजस्वी, और गुणों से मान्य होता है। नानाप्रकार के वस्त्र, सुवर्ण और धन पूर्ण, सुखी, प्रसन्न चित्त से रहनेवाला, ईश्वर भक्त होता है। वह अपने द्रव्य उपभोग में लगाता है और उत्तम गति को प्राप्त होता है ॥१—३॥

सुतनुस्तनुगे जीवे सुमतिः सुपतिप्रिया।
राज्ञी वा तत्समा जाता धनपुत्रसुखान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि जन्मलग्न में बृहस्पति हो वह स्त्री अप्सरा के सम सुन्दरी, सुबुद्धि और उत्तम पति की प्यारी, रानी के समान, धन-पुत्रादि सुख युक्ता होती है ॥४॥

जीवे लग्नगतेहयाऽम्बरसुखं, प्राप्नोति ऋद्धिं परां
भूपात् सौख्यसमागमश्च बहुलो व्यापारतश्चोदयः।
कीर्तेश्चापि विवर्धनं रिपुजनो नश्यत्यवश्यं तथा
जायासौख्यमथाति मौक्तिकधनं हेम्नश्च लाभो भवेत् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न में बृहस्पति हो तो उस वर्ष कीर्ति, धन, वस्त्र और सु की वृद्धि, शत्रु का नाश तथा स्त्री से सुख और रत्नादि का लाभ अवश्य हो है। बृहस्पति की दशा, अन्तरदशा में फल विशेष घटता है ॥५॥

द्वितीय भावस्थ गुरुफल—

कवित्वे मतिर्दण्डनेतृत्वशक्तिर्मुखे दोषधृक् शीघ्रभोगार्तं एव ।
कुटुम्बे गुरौ कष्टतो द्रव्यलब्धिः सदा नो धनं विश्रमेत् यत्नतोऽपि ॥१॥

सुरगुरौ धनमन्दिरसंश्रिते प्रमुदितो रुचिरप्रमदापतिः ।
भवति मानधनो बहुमौक्तिकागतवसुर्भविता प्रसवाह्निके ॥२॥

मुस्तरी यदि भवेज्जरखाने बुजुरुगः परमपुण्य-मतिस्स्यात् ।
कामिलः कनकसूनुयुतश्च खूबरो हि मनुजो जरदारः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वितीय भाव में बृहस्पति हो वह कवि, [बु]द्धिमान्, सुन्दर, सुखी, सदा प्रसन्न रहने वाला तथा उत्तम स्त्री का पति होता है [पर]न्तु स्त्री के साथ संयोग में शीघ्रपतन होता है। जवाहरातों का व्यापार करने-[वा]ला, सिद्धि को जाननेवाला, पुण्यकर्म करने में चित्त रखने वाला होता है। वह [ब]हुत परिश्रम करके द्रव्यलाभ करता है परन्तु धन उसके पास स्थिर नहीं रहता ॥१-३॥

धने धनवती जीवे सुधवा सुकुटुम्बिनी ।
मति-मान-गुणोपेता सुरूपा सुखसंयुता ॥४॥

भावार्थः—यदि द्वितीय भाव में बृहस्पति हो तो धन, पति और उत्तम [कुटु]म्बवाली होती है। वह अपने गुण और स्वभाव से आदर प्राप्त करती है, [सुन्द]र रूप और सुख से युक्ता होती है ॥४॥

कुटुम्बराशौ च गते सुरेड्ये धनादिभोगान् लभते मनुष्यः ।
चतुष्पदानाञ्च समागमः स्यात् तद्धायने भूपजनाच्च लाभः ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से द्वितीय भाव में बृहस्पति हो उस वर्ष धनादि का [लाभ], पशु की प्राप्ति और राजा से लाभ होता है ॥५॥

तृतीय भावस्थ गुरुफल—

भवेद्यस्य दुश्चिक्यगो देवमन्त्री लघूनां लघीयान् सुखं सोदराणां गृह
कृतघ्नो भवेन्मित्रसार्थे न मैत्री ललाटोदयेऽप्यर्थलाभो न तद्वत्। भवि

सहजमन्दिरगे च बृहस्पतौ भवति बन्धुगतार्थसमन्वितः।
कृपणतामपि गच्छति कुत्सिते धनयुतोऽपि सदा धनहानिमान्॥

गाफिलोबहुपराक्रमयुक् स्यान्मानवः परुषवाक्च बखीलः।
पालको भवति श्रेष्ठजनानां मुस्तरी यदि बिरादरखाने॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से तृतीय भाव में बृहस्पति हो वह
गाफिल (अनुत्साही) कटुवचन बोलनेवाला और उपकार न माननेवाला
है। उसे मित्र सुख बहुत कम तथा भाग्योदय होने पर भी अधिक धन लाभ
होता है। उसे खर्च भी बराबर लगा रहता है। वह अपने धन को अनुचित
में खर्च नहीं करता तथा सगे भाइयों का सुख होता है॥१–३॥

जाता ससहजा जीवे सहजे कृपणाऽधमा।
अस्थाने व्ययशीला च पतिप्रीतिविवर्जिता॥४॥

भावार्थः—यदि तृतीय भाव में बृहस्पति हो तो जाता सहोदर
युक्ता, कृपणा, नीच बुद्धिवाली, अधिक खर्च करनेवाली और पति-प्रेम से
होती है॥४॥

तृतीयसंस्थः सुरराजमन्त्री भूपाज्जयः कीर्तिविवर्द्धनं च।
सस्याऽम्बराणां च तथा धनानां करोति वृद्धिं सततं च वर्षे॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से तृतीय भाव में बृहस्पति हो तो राजा से
की वृद्धि, धान्य, वस्त्र और धन का लाभ उस वर्ष विशेष होता है॥५॥

चतुर्थ भावस्थ गुरुफल—

गृहद्वारतः श्रूयते वाजिह्रेषा द्विजोच्चारितो वेदघोषोऽपि तद्वत् ।
प्रतिस्पर्धिनः कुर्वते पारिचर्यं चतुर्थे गुरौ तप्तमन्तर्गतं च ॥१॥

सन्माननानाधनवाहनाद्यैः सञ्जातहर्षः पुरुषः सदैव ।
नृपानुकम्पासमुपात्तसम्पद्दम्भोलिभृन्मन्त्रिणि भूतलस्थे ॥२॥

अश्वजजरकशीरथफीलैर्युग्जनः प्रियतमः खलु राज्ञः ।
मुश्तरी यदि भवेद्धि चहारुम्खानये सकलसौख्ययुतःस्यात् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में बृहस्पति हो तो लोक में मान, सर्व सुख सम्पन्न, धनवान् और वाहनों के सुख से युक्त रहता है। वह मधुर वचन बोलनेवाला, सदा प्रसन्न रहनेवाला, ब्राह्मणों का विशेष भक्त और उसके शत्रु लोग भी उसकी सेवा करते रहते हैं तो भी उसका मन सर्वदा दुःखी रहता है ॥१–३॥

सुखे जीवे सुखोपेता यान-मान-धनान्विता ।
भूपाहृता सुरूपा च हृष्टा दक्षा स्वकर्मसु ॥४॥

भावार्थः—यदि चतुर्थ भाव में बृहस्पति हो तो सब सुखों से युक्ता लोक में मान, धन से युक्ता, सुन्दरी, प्रसन्नचित्ता और सभी कार्य में कुशला होती है ॥४॥

सुरेज्यः सुखस्थः सुखं वाहनानां क्रये विक्रये लाभकारी जनस्य ।
भवेद् भूपपक्षाज्जयो हायनेऽस्मिन् महालाभदः स्यात् कृषेः कर्मणश्च ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो तो वाहनों का सुख, व्यापार से लाभ, राजाओं से जय और उस वर्ष कृषि कर्म में अत्यन्त लाभ होता है ॥५॥

पंचम भावस्थ गुरुफल—

विलासे मतिर्बुद्धिगे देवपूज्ये भवेज्जल्पकः कल्पको लेखको वा।
निदाने सुते विद्यमानेऽपि भूतिः फलोपद्रवः पक्वकाले फलस्य ॥१॥

सुहृदयश्च सुहृदज्जनवन्दितः सुरगुरौ सुतगेहगते नरः।
विपुलशास्त्रमतिः सुखभाजनं भवति सर्वजनप्रियदर्शनः ॥२॥

पण्डितः पुरुतरहद आर्यः पुत्रपौत्रसहितो महबूबः।
मुश्तरी यदि भवेत्फरजन्दस्यालये न मनुजो जरदारः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से पञ्चम भाव में बृहस्पति हो वह शास्त्र ज्ञाता, पण्डित, उत्तम वक्ता, कल्पना करनेवाला अथवा उत्तम लेखक होता है। वह पुत्र पौत्र से युक्त, तेजस्वी, प्रतिष्ठित और सामान्य संपत्तिवाला किन्तु आनन्द प्रमोद में रहता है। फलप्राप्ति के समय कुछ विघ्न प्राप्त हो जाता है। उसे मित्र सुख उत्तम रहता है ॥१–३॥

सुबुद्धिश्च सुते जीवे सुपुत्रा प्रियवादिनी।
जाता पतिसुखोपेता शास्त्रार्थप्रतिपादिका ॥४॥

भावार्थः—यदि पञ्चम भाव में बृहस्पति हो तो उत्तम बुद्धि, पुत्रवती, मधुर वचन बोलनेवाली, पति सुख से युक्ता और शास्त्र पुराण को जाननेवाली होती है ॥४॥

सुतस्थानगो देवमन्त्री सुतानां विवृद्धिः स्वबुद्ध्या जयो हायनेऽस्मिन्।
रिपूणां विनाशो लभेतेष्टभोगान् मही-गो-सुवर्णाऽम्बराप्तिं करोति ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से पञ्चम भाव में बृहस्पति हो तो उस वर्ष में सन्तान की वृद्धि अपनी बुद्धि द्वारा जय, शत्रु का नाश तथा सर्व प्रकार से मनोकामना पूर्ण होती है। पृथ्वी, गौ, सुवर्ण, वस्त्र की प्राप्ति होती है ॥५॥

षष्ठ भावस्थ गुरुफल—

रुजार्तो जनन्या रुजः सम्भवेयू रिपौ वाक्पतौ शत्रुहन्तृत्वमेति ।
बलादुद्धतः को रणे तस्य जेता महिष्यादिसम्पन्न तन्मातुलानाम् ॥१॥

करिहयैश्च कृशाङ्गतनुर्भवेज्जयति शत्रुकुलं रिपुगे गुरौ ।
रिपुगृहे यदि वक्रगते गुरौ रिपुकुलाद्भयमातनुते विभुः ॥२॥

काहिलश्च बहुरोगयुतश्च मानवो वदसखुन्वदशिल्कः ।
मुश्तरी यदि भवेद्रिपुखाने मातुलादि भवसौख्यविहीनः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से षष्ठभाव में बृहस्पति हो तो कृश शरीर अथवा सर्वदा रोग से पीड़ित रहता है। वह शत्रु का नाश करनेवाला, अभिमानी, अपवाद से युक्त और ननिहाल के सुख से हीन होता है। यदि गुरु शत्रु गृह में हो अथवा वक्र हो तो शत्रु का भय होता है। अन्यथा युद्ध में उसे कौन जीत सकता है अर्थात् सर्वदा विजयी होता है ॥१—३॥

रिपुहीना रिपौ जीवे सुकीर्तिः सत्यभाषिणी ।
सालस्या गृहकार्येषु नीचे रोगभयान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि षष्ठभाव में बृहस्पति हो तो स्त्री शत्रु से रहिता, सत्य बोलनेवाली, सुकीर्तिवाली, घर के कार्य में आलस्य करनेवाली होती है। नीच का गुरु हो तो रोगिणी होती है ।४॥

कष्टं रिपुभ्यश्च रिपौ सुरेज्ये कफार्ति-दोषान् लभते मनुष्यः ।
भार्याङ्गपीडामथ नेत्ररोगं ज्वरातिसारं च करोति वर्षे ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से षष्ठभाव में बृहस्पति हो तो उस वर्ष कफ पीड़ा आदि दोष, स्त्री के अङ्ग में पीड़ा, नेत्र रोग तथा ज्वर और अतिसार इत्यादि कष्ट बना रहता है ।५॥

सप्तम भावस्थ गुरुफल—

मतिस्तस्य बह्वी विभूतिश्च बह्वी रतिर्वञ्चो भामिनीनामवह्वी।
गुरुर्गौरवं कुलस्य जामित्रभावे सपिण्डाधिकोऽखण्डकन्दर्प एव ॥१॥

युवतिमन्दिरगे सुरयाजके नयति भूपतितुल्यसुखं जनः।
अमृतराशिसमानवचाः सुधीर्भवति चारुवपुः प्रियदर्शनः ॥२॥

फाजिलः सुखयुतः सुविनीतो ह्म्जवाक् च रमणीसुखयुक्तः।
फारसश्च चतुरः किल ना स्यान् मुश्तरी यदि भवेज्जनखाने ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से सप्तमभाव में बृहस्पति हो वह कामदेव के समान सुन्दर, अत्यन्त अभिमानी, बुद्धिमान् संपत्तिवान् होता है। अपने कुटुम्ब में श्रेष्ठ, प्रिय वक्ता, स्त्री सुख से युक्त किन्तु स्त्रियों पर उसकी प्रीति कम होती है। वह शत्रु को जीतनेवाला और नीरोग होता है ॥१–३॥

सुधवा मदने जीवे विद्याविनयसंयुता।
शास्त्रज्ञा सुमतिर्जाता सुशीला च सुखान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि बृहस्पति सप्तमभाव में हो तो स्त्री उत्तम पतिवाली, विद्या विनय से युक्ता, शास्त्र को जाननेवाली, सुशीला और सुख युक्ता होती है ॥४॥

कलत्रे सुरेज्यः कलत्रेषु सौख्यं तथा निर्भयं शत्रुनाशं करोति।
सुखम् वाहनानां विलासादिकं च नृपाल्लब्धलक्ष्मीर्भवेद्धायनेऽस्मिन् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से बृहस्पति सप्तमभाव में हो तो उस वर्ष में उस मनुष्य को स्त्री से सुख, निर्भयता, शत्रु का नाश, वाहनों का सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है ॥५॥

अष्टम भावस्थ गुरुफल—

चिरं नो वसेत्पैतृके चैव गेहे चिरस्थायि नो तद्गृहं तस्य देहम् ।
चिरं नो भवेत्तस्य नीरोगमङ्गं गुरुर्मृत्युगो यस्य वैकुण्ठगन्ता ॥१॥

विमलतीर्थकरश्च बृहस्पतौ निधनगे न मनःस्थिरता यदा ।
धनकलत्रविहीनकृशः सदा भवति योगपथे निरतः परम् ॥२॥

वेदिलश्च परदेशरतश्च जाहिलः खलु नरः सगदश्च ।
मुस्तरी यदि हि हश्तमखाने गुरुवरः स किल भवेज्जनमस्तः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से अष्टमभाव में बृहस्पति हो वह मनुष्य चञ्चल चित्तवाला, परदेश में रहनेवाला और रोगयुक्त रहता है। उसकी बुद्धि-हीन, निर्दयी, क्रोधी और व्यर्थ विवाद करनेवाला तथा धन और स्त्री से रहित, कृशदेह और योग क्रिया में तत्पर रहता है। शरीर छूटने पर वह वैकुण्ठ में जाता है ॥१–३॥

चञ्चला मृत्युगे जीवे जाता तीर्थाटनप्रिया ।
दीना क्लेशपरा नित्यं पतिपुत्रसुखोज्झिता ॥४॥

भावार्थः—यदि बृहस्पति अष्टमभाव में रहें तो वह स्त्री चञ्चला, तीर्थ में घूमनेवाली, पति और पुत्र के सुख से वञ्चिता तथा धन वस्त्रादि के अभाव से कष्ट सहनेवाली होती है ॥४॥

ज्वरवमन-कफार्तिर्निधनस्थे सुरेज्ये बहुलविविधरोगाः कर्णयोर्नेत्रयोश्च ।
भवति भयमरीणामङ्गनानां च कष्टं व्रणकृतबहुपीडा हायनेऽस्मिन्नराणाम् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से अष्टमभाव में बृहस्पति हो तो उस वर्ष में ज्वर, वमन, कफ तथा कान और आँख में अनेक प्रकार का रोग, शत्रु का भय, स्त्री को कष्ट इत्यादि उपद्रव होता है ॥५॥

नवम भावस्थ गुरुफल—

चतुर्भूमिकं तद्गृहं तस्य भूमिपतेर्वल्लभो वल्लभा भमिदेवाः।
गुरौ धर्मगे बान्धवाः स्युर्विनीताः सदालस्यतो धर्मवैगुण्यकारी ॥१॥

सरगुरौ नवमे मनुजोत्तमो भवति भूपतितुल्यधनो शुचिः।
कृपणवुद्धिरतः कृपणः सुखी बहुधनप्रमदाजनवल्लभः ॥२॥

हजूरते च खुशपरिजनवांश्च खूबरो बहुसुखी च सुशीरः।
आमिलश्च यदि यख्तमखाने मुश्तरी प्रविभवेत्खलु यस्य ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से नवमभाव में बृहस्पति हो तो मनुष्य कुलीन, भाग्यवान्, सुन्दर मुखवाला, राजा के समान सुख भोगनेवाला, कृपण तथा स्त्रियों का प्रिय होता है। कुटुम्ब मे आदर, ईश्वर भक्त और ब्राह्मणों पर उसका प्रेम विशेष रहता है। तथापि धर्म, नित्यकर्मादि में उदासीनता रखता है ॥१–३॥

धर्मे धर्मवती जीवे धनधान्यसमन्विता।
सौभाग्य-सुख-सम्पन्ना सुधवा भूपतिप्रिया ॥४॥

भावार्थः—यदि बृहस्पति नवमभाव में हो तो स्त्री धन, धान्य, सौभाग्य और सुख से युक्त होती है तथा रानी के समान, उत्तम पति की पत्नी होती है ॥४॥

वाचस्पतिर्धर्मगतो नराणां करोति धर्मं बहुलं सुखं च।
भाग्योदयं चाऽथसमागमं च तीर्थाऽटनात् पुण्यमतीव कुर्यात् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से नवमभाव में बृहस्पति हो तो धर्म तथा सुख, भाग्योदय, धन का आगमन् तथा तीर्थाटन से अत्यन्त पुण्य होता है ॥५॥

दशम भावस्थ गुरुफल—

ध्वजामण्डपे मन्दिरे चित्रशाला पितुः पूर्वजेभ्योऽपि तेजोऽधिकत्वम् ।
न तुष्टो भवेच्छर्मणा पुत्रकाणां पचेत्प्रयहं प्रस्थसामुद्रमन्नम् ॥१॥

दशममन्दिरगे च बृहस्पतौ तुरगरत्नविभूषितमन्दिरः ।
भवति नीतिगुणैर्बुधसम्मतः परधनाङ्गनवर्जितधार्मिकः ॥२॥

पाल्की जळजवाहिरफीलः संयुतो विविधवस्त्रविशालैः ।
मुस्तरी भवति शाहमकाने साहबः खलु नरो नसरः स्यात् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से दशमभाव में बृहस्पति हो तो वाहनों के सुख से युक्त, रत्नादि से पूर्ण, न्यायकारी तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है। वह परधन और परस्त्री के लोभ से हीन, धर्मात्मा और बहुत लोगों का पालन करनेवाला होता है। उसको पुत्र रहते हुए भी पुत्र सुख से विहीन रहता है। अर्थात् उसे दुष्ट पुत्र भी होते हैं ॥१–३॥

राज्ये गुरौ धनैर्युक्ता वस्त्राभरणभूषिता ।
पतिपुत्रसुखोपेता गृहकार्यपरायणा ॥४॥

भावार्थः—यदि बृहस्पति दशमभाव में हो तो बहुत धन, वस्त्र, जेवरात पति और पुत्र के सुख से युक्ता तथा घर के कार्य में निपुणा होती है ।४॥

व्योम्नि स्थितश्चेत् सुरराजमन्त्री भूपाज्जयं मङ्गलमाशु कुर्यात् ।
लाभो भवेद् गज-रथा-ऽश्व-चतुष्पदानां भाग्योदयं प्रकुरुते स्वदशां गतश्च ।५।

भावार्थः—वर्षलग्न से दशमभाव में बृहस्पति हो तो राजा से जय और मङ्गल तथा वाहनों का लाभ, पशुओं का भी लाभ, भाग्योदय होता है। बृहस्पति की दशा में उपरोक्त फल विशेष होता है ॥५॥

एकादश भावस्थ गुरुफल—

अकुप्यं च लाभे गुरौ किं न लभ्यं वदन्त्यष्टधोमन्तमन्ये मुनीन्द्राः।
पितुर्भारभृत्स्वाङ्गजास्तस्य पञ्च परार्थस्तदर्थो न चेद्वै भवाय ॥१॥

व्रजति भूमिपतेः समतां धनैर्निजकुलस्य विकारकरः सदा।
सकलधर्मरतोऽर्थसमन्वितो भवति चायगते सुरयाजके ॥२॥

साबिरः शुभतनुर्जरदारः फारशो बहुपराक्रमयुक् स्यात्।
काबिलश्च यदि याक्तिमकाने मुश्तरी प्रविभवेत्खुशरो स्यात् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से एकादशभाव में बृहस्पति हो तो मनुष्य धन में राजा के तुल्य, विद्वानों में श्रेष्ठ, धर्म में रत तथा अपने कुल का उपकार करनेवाला, पिता के भार को संभालनेवाला और स्वयं पाँच पुत्रों का पिता होता है। वह अपने द्रव्य को परोपकार में लगाता है तथा अपने निमित्त उपभोग में नहीं रखता और सदा खुश रहनेवाला और उत्साही होता है ।१—३॥

लाभे लाभवती जीवे राज्ञी वा तत्समा भवेत्।
धर्मबुद्धिः सुखोपेता कलाज्ञा पतिवल्लभा ॥४॥

भावार्थः—यदि एकादशभाव में बृहस्पति हो तो वह रानी के समान संपत्तिवाली, धर्मात्मा, सुख से युक्ता, कलाओं को जाननेवाली और पति को प्यारी होती है ।४॥

जयो मानवानां सुरेज्ये च लाभे भवेद् वै गजानां हयानां च लाभः।
सुतस्योदयो जायते शत्रुनाशः प्रतिष्ठाधिका हायनेऽस्मिन् सुखं च ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से एकादशभाव में बृहस्पति हो तो उस वर्ष में वाहनों का सुख, पुत्रोत्पत्ति, शत्रु का नाश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है तथा सर्वथा सुख कारक होते हैं ।५॥

द्वादश भावस्थ गुरुफल—

यशः कीदृशं सद्व्यये साभिमाने मतिः कीदृशी वञ्चनाचेत्परेषाम्।
विधिः कीदृशोऽर्थस्य नाशो हि येन त्रयस्ते भवेयुर्व्यये यस्य जीवः ॥१॥

शिशुदशाभवने हृदि रोगवान्नुचितदानपराङ्मुख एव च।
कुलधनेन युतः कुलदाम्भिको भवति पापगृहे च बृहस्पतौ ॥२॥

मुफ्लिसः कमफहम गतलज्जोबदसखुंश्च रणभृतलचिन्तः।
काहिलश्च यदि खर्चमकाने मुश्तरी भवति ना बदफैलः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वादशभाव में बृहस्पति हो तो मनुष्य व्यर्थ दिन काटनेवाला, बाल्यावस्था में हृदय रोगी, कुलोचित सम्पत्तिवाला, अभिमान के साथ अच्छे कामों में भी द्रव्य खर्च करता है तो भी यश का भागी नहीं होता। उसकी बुद्धि दूसरों को ठगने की, तथा कुकर्म करने में रत होता है। यदि पापग्रह की राशि में हो तो अत्यन्त दम्भी होता है।१-३॥

व्यये व्ययाधिका जीवे दुश्चित्ता दुःखभागिनी।
मतिमानधनैर्हीना लज्जाहीनाऽटनप्रिया ॥४॥

भावार्थः—यदि द्वादशभाव में बृहस्पति हो तो स्त्री अधिक खर्च करनेवाली कुटिलहृदया, बुद्धि, मान, धन और लज्जा से रहिता घूमनेवाली होती है।४॥

रिष्फेस्थितः सुरगुरुर्बहुला व्यथा च शत्रुप्रसादनृपभीतिकरश्च वर्षे।
नेत्राङ्गपीडनकफार्तिजनापवादो हानिर्भयं भवति शोकविकारकारी ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से द्वादशभाव में बृहस्पति हो तो उस वर्ष में बहुत कष्ट, शत्रु भय, राजा से भय, नेत्र तथा अङ्ग में पीड़ा, कफ रोग, लोगों में अपवाद, हानि और शोक होता है।५॥

प्रथम भावस्थ शुक्रफल—

समीचीनमङ्ग समीचीनसङ्गः समीचीनवहङ्गनाभोगयुक्तः।
समीचीनकर्मा समीचीनशर्मा समीचीनशुक्रो यदा लग्नवर्ती ॥१॥

जनुषि लग्नगते भृगुनन्दने भवति कार्य्यरतः परपण्डितः।
विमल शिल्पयुते सदने रतो भवति कौतुकहा विधिचेष्टितः ॥२॥

अव्वलखाने जोहरा महबूबं मुकरबं नृपति।
दानिश्मन्दं मनुजं जरदारं जनखूबरो प्रकुरुते ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न में शुक्र हो वह तेजस्वी, प्रतापशाली, कार्य में तत्पर, परम पण्डित तथा प्रारब्धवादी होता है। वह शौकीन, सुन्दर स्वरूपवाला, उत्तम २ स्त्रियों का उपभोग करने वाला तथा सदा सुखी रहता है।१—३॥

लग्ने शुक्रे कलाभिज्ञा सुरूपा प्रियवादिनी।
सुशीला सुभगा जाता धनपुत्रादिसंयुता ॥४॥

भावार्थः—यदि जन्मलग्न में शुक्र हो तो स्त्री कला को जाननेवाली, रूपवती, मधुर-वचन बोलनेवाली, सुशीला तथा धन-पुत्रादि सुख से युक्ता होती है।४॥.

तनुस्थानगो भार्गवो हायनेऽस्मिन् प्रतिष्ठाविशेषं समृद्ध्यागमश्च।
रिपूणां विनाशं तथा भूपमानं जयं भूषणं मानवानां करोति ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न में शुक्र हो तो उस वर्ष में मनुष्य को विशेष प्रतिष्ठा, द्रव्यलाभ, राजसम्मान, अनेक प्रकार के भूषण का लाभ और शत्रु का नाश होता है।५॥

द्वितीय भावस्थ शुक्र फल—

मुखं चासुभाषं मनीषापि चार्वी मुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य ।
कुटुम्बे स्थितः पूर्वदेवस्य पूज्यः कुटुम्बे न किं चारु चार्वङ्गिक्रामः ॥१॥

परधनेन धनी धनगे भृगौ भवति योषिति वित्तपरा नरः ।
रजतसीसधनी गुणशैशवः कृशतनुः सुवचा बहुपालकः ॥२॥

शीरींसुखुन् मनुष्यं जरजेवर्जकंशीशालैः ।
यकूमिहरोजरखाने जोहरा कुरुते च सद्भजं दक्षम् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वितीयभाव में शुक्र हो वो बुद्धिमान्, प्रियवक्ता, सर्वदा प्रसन्न चित्त रहनेवाला, रत्न तथा भूषणों से युक्त और सत्कार्य परायण होता है। वह दूसरों के धन से धनवान्, सुन्दर स्त्रियों को चाहनेवाला, दुर्बलदेह और बहुतों को पालन करनेवाला, चाँदी, सीसा आदि के व्यापार से धनवान् होता है ।१-३॥

धने शुक्रे धनैर्युक्ता वस्त्राभरणभूषिता ।
सुरूपा विदुषी जाता कुशला सर्वकर्मसु ॥४॥

भावार्थः—यदि द्वितीय भाव में शुक्र हो तो स्त्री सब प्रकार के धन, वस्त्र भूषण से युक्ता, सुन्दरी, पण्डिता तथा सब कार्य में निपुण होती है ।४॥

धनस्थे कवौ धान्यलाभो धनाप्तिर्भवेन्म्लेच्छजातेः सुखं सम्पदश्च ।
नरो राजतुल्यो भवेत्तत्र वर्षे पशूनां हयानां गृहे स्यात् सुखं च ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से द्वितीयभाव में शुक्र हो तो धान्य और धन का लाभ, वाहनों तथा पशुओं का सुख होता है। नीच कुल का भी हो तो उस वर्ष राजा के समान हो जाता है और म्लेच्छ जाति से सुख तथा संपत्ति मिलती है ।५॥

तृतीय भावस्थ शुक्रफल—

रतिः स्त्रीजने तस्य नो बन्धुनाशो गुरुर्यस्य दुश्चिक्यगो दानवानाम्।
न पूर्णो भवेत्पुत्रसौख्येऽपि सेनापतिः कातरो दानसङ्ग्रामकाले ॥१॥

सहजमन्दिरवर्तिनि भार्गवे प्रचुरमोहयुतो भगिनीसुते।
भवति लोचनरोगसमन्वितो धनयुतः प्रियवाक्चसदम्बरः ॥२॥

जोहरा भवति बिरादरखाने चेन्मानवो जातः।
जोरावरो हरीशः साळस्य सानुजस्साश्वः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से तृतीयभाव में शुक्र हो वह स्त्रियों से प्रीति नहीं करता है। वह सगे भाइयों से युक्त, धनवान्, मधुर वक्ता तथा स्वच्छ वस्त्र धारण करनेवाला होता है। उसको पुत्र सुख रहते हुए भी सन्तुष्ट नहीं होता। आलसी, नेत्र रोगवाला तथा दानियों में नीच अर्थात् कम दान करनेवाला होता है ।१–३॥

कृशांगी सहजे शुक्रे दुश्चित्ता मदनातुरा।
कृपणा धनहीना च सुजनानिष्टकारिणी ॥४॥

भावार्थः—यदि शुक्र तृतीयभाव में हो तो शरीर से दुबली, कुटिल हृदया, कामातुरा, कृपणा, धनहीना और साधुजनों के अनिष्ट करनेवाली होती है ।४॥

भृगुस्तृतीयश्च सहोदराणां सुखं प्रकुर्याद्विविधैर्विलासैः।
अर्थागमं कीर्तिविवर्धनं च जनोपकारं च करोति वर्षे ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से तृतीयभाव में शुक्र हो तो उस वर्ष में परस्पर सहोदर भाई में अनेक प्रकार का सुख, धन का लाभ, कीर्ति की वृद्धि और दूसरों से उपकार होता है तथा दूसरे का उपकार करता है ॥५॥

चतुर्थ भावस्थ शुक्रफल—

महित्वेऽधिको यस्य तुर्येऽसुरेज्यो जनैः किं जनैश्चापरै रुष्टतुष्टैः।
कियत्पोषयेज्जन्मतः संजनन्या अधीनार्पितोपायनैरेव पूर्णः ॥१॥

भवति बन्धुगते भृगुजे नरो बहुकलत्रसुतेन समावृतः।
सुरमते सुषमाढ्यवरे गृहे वसनपानविलाससमावृतः ॥२॥

ऐयाशो मालदारो नेकीकारश्च फारसश्चेत्स्यात्।
जोहरा दोस्तमकाने भवति मनुष्यः प्रियंवदश्चाढ्यः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थभाव में शुक्र हो वह लोगों द्वारा अधिक सम्मान पाता है। तथा बहुत स्त्री और सन्तान से युक्त, धनवान्, परोपकारी, विलासों से सम्पन्न होता है। वह मनुष्य जन्म से ही अपनी माता का पालन पोषण करता है ॥१–३॥

सुखे शुक्रे सुखोपेता जाता गुरुजनप्रिया।
सुशीला सुभगा रामा दानशीला पतिव्रता ॥४॥

भावार्थः—यदि चतुर्थभाव में शुक्र हो तो वह स्त्री सब सुखों से युक्ता, माता-पिता आदि गुरुजनों में भक्ति रखनेवाली, सुशीला, सुन्दरी तथा दान करनेवाली और पतिव्रता होती है ॥४॥

भवति दैत्यगुरुः सुखगो यदा सुखकरः कृषिवाहनयोस्तदा ॥
धरणिधान्यसुवर्णसमागमो भवति भूपसमो मनुजस्तदा ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से शुक्र यदि चतुर्थ स्थान में पड़े तो कृषि और वाहन का सुख, पृथ्वी, धान्य और सुवर्ण का लाभ होता है। उस वर्ष में मनुष्य राजा के समान सुख भोगता है ॥५॥

पंचम भावस्थ शुक्रफल—

सपुत्रेऽपि किं यस्य शुक्रो न पुत्रे प्रयासेन किं यत्नसंपादितोऽर्थः।
न्यदुर्क विना मन्त्रनिष्ठाशनाभ्यामधीतेन किं चेत्कवित्वे न शक्तिः ॥१॥

तनयमन्दिरगे भृगुनन्दने बहुसुतो वरबुद्धियुतो भवेत्।
बहुधनो गुणवान् वरनायको भवति चापि विलासवतीप्रियः ॥२॥

दानीश्वरो मनुष्यः सुतधनधान्यैश्च संकुलो यस्य।
जोहरा पञ्चमखाने भवति यदा हि महीपतेः प्रीतिः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से पञ्चम भाव में शुक्र हो तो पुत्र सुख धन का लाभ, गुणवान् और उत्तम कवित्वशक्ति उसे प्राप्त होती है। कवि दाताओं में श्रेष्ठ, उत्तम बुद्धि, लक्ष्मीवान् राजा का प्रिय, श्रेष्ठ नेत्र, और सुवेश स्त्री का पति होता है ॥१–३॥

सुते सुतवती शुक्रे पतिभक्ता विलासिनी।
धन-विद्यासुखोपेता सुन्दरी चारुहासिनी ॥४॥

भावार्थः—यदि शुक्र पञ्चम भाव में हो तो स्त्री बहुत सन्तान वाली पतिव्रता, विलासिनी, धन, विद्या सुख से युक्ता, सुन्दरी, और हास्ययुक्त होती है ॥४॥

सुतानां विशुद्धिर्भृगौ पञ्चमस्थे भयक्लेशचिन्तापदां स्याद्विनाशः।
रिपूणां विनाशस्तथा वर्षमध्ये महाभाग्ययुक्तो धनाढ्यो नरः स्यात् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से पञ्चम भाव में शुक्र हो तो उस वर्ष में सन्तान की वृद्धि, भाग्य और धन से युक्त होता है। तथा भय, क्लेश, चिन्ता और विपत्तियों का नाश होता है ॥५॥

षष्ठ भावस्थ शुक्र-फल—

सदा दानवेज्ये सुधासिक्तशत्रुर्व्ययः शत्रुगे चोत्तमौ तौ भवेताम् ।
विपद्येत संपादितं चापि कृत्यं तपेन्मन्त्रतः पूज्यसौख्यं न धत्ते ॥१॥

भवति वै कुशलोऽद्भुतपण्डितो रिपुगृहे भृगुजेऽस्तगते नरः ।
जयति वैरिबलं निजतुङ्गगे भृगुसुते शुभभे किल षष्ठगे ॥२॥

यारोनः कम्सहवद् वेददों जाहिलो जातः ।
खलु जोहरा हि दुश्मनखाने वै वेदिलो भवति ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से षष्ठभाव में शुक्र हो तो वह मनुष्य माता-पिता आदि पुज्य लोगों के सुख से विहीन, मित्रों से विरोध करने वाला, बेवकूफ तथा इच्छानुसार व्यवहार करने वाला होता है। बहुत सावधानी-पूर्वक किया गया कार्य भी बिगड़ जाता है और उसका द्रव्य भी अधिक खर्च होता है। तथा शत्रु से पराजित होता है।

मानसागरी के मत से यदि शुक्र अपने उच्च में, शुभ राशि में वा शत्रुराशि अथवा अस्त होकर रहे तो सर्वदा शुभफल कारक होता है ॥१–३॥

शत्रौ शत्रुमती शुक्रे पतिप्रेमपराङ्मुखी ।
कफ-वात-भवै रोगैः पीड़िता रिपुमर्दिनी ॥४॥

भावार्थः—यदि षष्ठ भाव में शुक्र हो तो स्त्री बहुत शत्रुवाली, पति के प्रेम से वञ्चिता, कफ तथा वात रोग से कष्टपाने वाली और शत्रु को नाश करने वाली होती है ॥४॥

अरिस्थानगो हायने दैत्यमन्त्री जनानां विवादो रिपोर्भीतिकष्टम् ।
भवेद् गुप्तचिन्ताङ्गरोगोऽथ पीडा शिरोऽर्तिश्च नेत्रोदरे पीडनं च ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से शुक्र यदि षष्ठ भाव में हो तो उस वर्ष में उस मनुष्य को परिजनों से विवाद, शत्रु का भय, कष्ट, गुप्त चिंता अङ्ग में अनेक प्रकार के रोग इत्यादि पीड़ा होती है ॥५॥

सप्तम भावस्थ शुक्रफल—

कलत्रे कलत्रात्सुखं नो कलत्रात् कलत्रं तु शुक्रे भवेद्रत्नगर्भम्।
विलासाधिको गण्यते च प्रवासी प्रयासाल्पकः के नमुञ्चन्ति तस्मात्॥

युवतिमन्दिरगे च सिते नरो बहुसुतेन धनेन समन्वितः।
विमलवंशभवप्रमदापतिर्भवति चारुवपुर्मुदितः सुखी॥२॥

साहबदर्दः कुशलः सकलकलासु फारसो ना स्यात्।
जोहरा हफ्तमखाने स्त्रीजनचिन्ता सुरञ्जको भवति॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से सप्तम भाव में शुक्र हो तो मनुष्य सुन्दर स्वरूपवाला, प्रसन्न रहने वाला, बहुत पुत्र और बहुत धन वाला विलासी, दयालु, न्यायकारी और उत्तम स्त्री का पति होता है। तथा स्त्री विषयक चिन्ता से युक्त, परदेश में रहने वाला थोड़ा उद्योग करनेवाला और क्रोधी होता है। उसकी स्त्री को सुन्दर कन्यारत्न होती है॥१—३॥

मदे कामधिका शुक्रे कलासु कुशलाङ्गना।
सुरूपा सुधवा शुभ्र-वस्त्राभरणभूषिता॥४॥

भावार्थः—यदि सप्तम भाव में शुक्र हो तो स्त्री अधिक कामवाली, कलाओं में निपुणा, रूपवती, उत्तम पति वाली और अनेक प्रकार के सुन्दर वस्त्र-आभूषणों से युक्ता होतीहै॥४॥

कलत्रे कविश्चेत् स्थितो वर्षलग्ने कलत्राङ्गसौख्यं विलासादिकं च।
रिपोर्नाशनं मानवानां च सौख्यं वस्त्रहेमादिलाभं करोति॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से सप्तम भाव में शुक्र हो तो उस मनुष्य को स्त्री-सुख और विलास देते हैं। तथा शत्रु का नाश, सुख, वस्त्र, सुवर्णादि का लाभ होता है॥५॥

अष्टम भावस्थ शुक्रफल—

मानः क्षुद्रवादी चिरं चारु जीवेत् चतुष्पात्सुखं दैत्यपूज्यो ददाति।
चतुष्टष्टमे कष्टसाध्यो जयार्थः पुनर्वर्धते दीयमानं धनर्णम् ॥१॥

निधनसद्मगते भृगुजे जनो विमलधर्मरतो नृपसेवकः।
भवति मांसप्रियः पृथलोचनो निधनमेति चतुर्थवयस्यपि ॥२॥

मगरूरो वदखुल्कः स्त्रीधनसौख्यैश्च वर्जितो मनुजः।
हश्तुमखाने जोहरा भवति वितृप्तं मनो न संग्रामे ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से अष्टम भाव में शुक्र हो तो अभिमानी [illegible]वचन बोलनेवाला, व्यर्थ विवाद करने वाला मत्स्यमांस का प्रिय, विशाल [illegible], राजा का सेवक तथा बहुत समय तक सुख से जीवन व्यतीत करता है। [illegible] द्रव्य तथा जयलाभ कष्ट से सिद्ध होता है और हमेशा ऋणि रहता है। [illegible] कार्य में रुचि रखता है तथा चतुर्थ वयस (८० वर्ष) तक जीता है ॥१–३॥

शुक्रे सुलोचना रन्ध्रे सुगर्वा धर्मतत्परा।
धनचिन्ताकुला जाता सुशीला चिरजीविनी ॥४॥

भावार्थः—यदि शुक्र अष्टमभाव में हो तो स्त्री सुन्दर नेत्रवाली, अभिमान-[illegible]नी, धर्मवती, धन की चिन्ता करनेवाली, सुशीला और दिर्घायुवाली होती [illegible] ॥४॥

मृत्युस्थितो मृत्युसमं च कष्टं शुक्रः करोतीह जनापवादम्।
ज्वरादिपीडामथ भीतिकष्टं नेत्रे च रोगं रिपुभिर्विवादम् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से अष्टमभाव में शुक्र हो तो उस वर्ष में मृत्यु तुल्य [illegible], लोगों में अपवाद, ज्वर, भय, कष्ट, नेत्र में रोग और शत्रु से विवाद [illegible] है ॥५॥

नवम भावस्थ शुक्रफल—

भृगौ त्रित्रिकोणे पुरे के न पौराः कुसीदेन ये वृद्धिमस्मै ददीरन्।
गृहं ज्ञायते तस्य धर्मध्वजादेः सहोत्थादिसौख्यं शरीरे सुखं च ॥१॥
विमलतीर्थपरोऽच्छतनुः सुखी सुरवरद्विजवर्णरतः शुचिः।
निजभुजार्जितभाग्यमहोत्सवो भवति धर्मगते भृगुजे नरः ॥२॥
नेकीकारः सुभगः खुशरो दानी च मानवो जोहरा।
बख्तमकाने मुतांज नशरश्च मज्लिसी भवति स इति ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से नवमभाव में शुक्र हो तो सुन्दर शरीरवाला सुखी, देव ब्राह्मणों का भक्त, पवित्र हृदय और अपने भुजबल से द्रव्य उपार्जन करनेवाला होता है। उसे सगे भाई और बान्धवों का पूर्ण सुख रहता है। ब्याज (ऋण) के व्यापार से धन की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। वह सभा-सोसाइटी में भागलेनेवाला, स्वाधीन और दानी होता है। किन्तु अभिमान और पाखण्ड के साथ धर्म तथा परोपकार में द्रव्य खर्च करते रहने पर भी व्यर्थ होता है। अर्थात् पुण्य का भागी नहीं हो पाता ॥१–३॥

धर्मे तीर्थपरा शुक्रे सुशीला सुरुचिः शुचिः।
निजोपार्जितवित्ता च जाता सौभाग्यसंयुता ॥४॥

भावार्थः—यदि शुक्र नवमभाव में हो तो वह स्त्री तीर्थ करनेवाली, सुशीला सुन्दरी, पवित्रहृदया, अपनी कला से धनोपार्जन करनेवाली, सौभाग्यवती होती है ॥४॥

धर्मस्थितो धर्मकरः कविश्चेन्नरेन्द्रतुल्यं मनुजं करोति।
सुखप्रदो भूषणवाहनानां गोभूहिरण्याम्बरलाभदः स्यात् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से नवमभाव में शुक्र हो तो उस वर्ष धर्म में विशेष प्रवृत्ति रहती है, नीच भी राजा के तुल्य हो जाता है। तथा भूषण और वाहन का सुख और गो, भूमि, सुवर्ण और वस्त्र का लाभ होता है ॥५॥

दशम भावस्थ शुक्रफल—

भृगुः कर्मगो गोत्रवीर्यं रुणद्धि क्षयार्थो भ्रमः किन्तु आत्मीय एव।
तुलामानतो हाटकं विप्रवृत्त्या जनाडम्बरैः प्रत्यहं वा विवादात् ॥१॥

दशमन्दिरगे भृगुवंशजे बधिरबन्धुयुतः स च भोगवान्।
वनगतोऽपि च राज्यफलं लभेत्समरसुन्दरवेषसमन्वितः ॥२॥

दर्राकोजरदारः पितुगुरुभक्तश्च काविलो मनुजः।
जोहराशाहमकाने भवति मुशीरश्च साहबो वा स्यात् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से दशमभाव में शुक्र हो तो मनुष्य दुष्ट स्वभाववाला, बुद्धिमान्, रत्न आदि धातुओं की पहचान करनेवाला, धनवान् और माता-पिता, गुरुजनों का सेवक होता है। वह समान शरीरवाला, वीर पुरुष होते हुए भी भ्रम से उसके कार्य बिगड़ जाते हैं। वह ढोंगी लोगों को साथ रखकर भिक्षा अथवा ब्राह्मण जैसी वृत्ति से धन संचय करता है उसके वंश की वृद्धि नहीं होती अर्थात् सन्तान उत्पन्न करने योग्य उसका वीर्य नहीं होता और भाइयों के सुख से भी विमुख रहता है ॥१—३॥

भार्गवे राज्यगे राज्ञी धन-भोगवती सती।
पतिप्रिया सुखोपेता जाता सन्तानवत्सला ॥४॥

भावार्थः—यदि दशमभाव में शुक्र हो तो स्त्री रानी के समान, धन से युक्ता, साध्वी, पति की प्यारी, सब सुखवाली और सन्तान में प्रेम रखनेवाली होती है ॥४॥

गगनगो भृगुजो मनुजस्य वै भवति चाऽम्बरसौख्यकरस्तदा।
विविधभोगसुखं बहुलं धनं स्वजनसौख्यकरः क्रय-विक्रये ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से दशमभाव में शुक्र हो तो अनेक प्रकार के भोग और सुख, अपने परिजनों से सुख और व्यापार में अत्यन्त धन लाभ होता है ॥५॥

एकादश भावस्थ शुक्रफल—

भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्नात् सुरूपं महीपं च कुर्याच्च सम्यक्।
लसत्कीर्तिसत्यानुरक्तं गुणाढ्यं महाभोगमैश्वर्ययुक्तं सुशीलम् ॥१॥

लभनभावगते भृगुनन्दनो वरगुणावहितोऽप्यनलव्रतः ।
मदनतुल्यवपुः सुखभाजनं भवति हास्यरतिः प्रियदर्शनः ॥२॥

जरदारं महबूबं सिर्दारं वा सुरौवतं मनुजम् ।
याफ्तिमकाने जोहरा मइशं पुरुदतं कुरुते ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से एकादशभाव में शुक्र हो तो उत्तम गुणों से युक्त, कामदेव के समान सुन्दर, बड़ा भोगी, हास्यप्रिय, सुशील और राजा के समान यशस्वी होता है। वह बहुत द्रव्यलाभ करता है और उसकी सम्पत्ति कभी नष्ट नहीं होती और उत्तम कीर्तिवाला तथा सत्य में प्रेम रखनेवाला होता है ॥१-३॥

लाभे शुक्रे सदाचारा सदा लाभसमन्विता ।
नृत्यगीतकलाभिज्ञा सुहास्या प्रियदर्शना ॥४॥

भावार्थः—यदि शुक्र एकादशभाव में हो तो स्त्री सत्कार्य करनेवाली, सर्वदा लाभ करनेवाली, नृत्य-गीत आदि कलाओं को जाननेवाली हास्यप्रिय तथा अप्सरा के समान सुन्दरी होती है ॥४॥

कविर्लाभगो लाभकृत् स्वर्णकस्य जयं मानवानां करोतीह वर्षे ।
सुतानां विवृद्धिं सुखं राजपक्षाद् रिपूणां विनाशं तथा मित्रवृद्धिम् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से एकादशभाव में शुक्र हो तो उस वर्ष सुवर्ण का लाभ लोक में मान, पुत्रकी वृद्धि, मित्र की वृद्धि और शत्रु का नाश होता है ॥५॥

द्वादश भावस्थ शुक्रफल—

कदाप्येति वित्तं विलीयेत पित्तं सितो द्वादशे केलिसत्कर्मशर्मा ।
गुणानां च कीर्तेः क्षयं मित्रवैरं जनानां विरोधं सदाऽसौ करोति ॥१॥

जनुषि वा व्ययवर्तिनि भार्गवे भवति रोगयुतः प्रथमं नरः ।
तदनु दम्भपरायणचेतनः कृशतनो मलिनः सहितः सदा ॥२॥

साहबखर्चो बदकार् कमसहश्च मानवो क्षुदितः ।
बद्अक्लः किल जोहरा खर्चमकाने हि गुस्वरो भवति ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वादशभाव में शुक्र हो तो बाल्यावस्था में रोगी, पश्चात् कृश शरीर और दम्भ से युक्त मलिन पुरुष होता है । उसकी बुद्धिहीन, बहुत क्रोधी, अपनी इच्छा से कार्य करनेवाला, अधिक खर्च करनेवाला, नीच कर्म में रत रहकर मित्रों से तथा परिजन लोगों से वैर करता है । उसे कदाचित् धन प्राप्त हो भी जाय तो उसके गुण और उसका यश नष्ट प्राय ही रहता है ॥१–३॥

व्यये व्ययाधिका शुक्रे बाल्ये रोगभयान्विता ।
कृशांगी मलिना जाता भवेद्दम्भपरायणा ॥४॥

भावार्थः—यदि शुक्र द्वादशभाव में हो तो जाता बहुत खर्च करनेवाली, बाल्यावस्था में रोगिनी, दुबली, मलिन स्वभाववाली और कपट करनेवाली होती है ॥४॥

व्यये यदि स्याद् भृगुजो नराणां नेत्राङ्गपीडां प्रकरोति वर्षे ।
कर्णे विकारं स्वदशां च नेष्टां प्राणार्तिपीडां च करोति वर्षे ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से द्वादशभाव में शुक्र पड़े तो उस वर्ष में उस मनुष्य को मृत्यु तुल्य कष्ट अथवा वर्ष पर्यन्त कुछ न कुछ शारीरिक पीड़ा बनी ही रहती है । अर्थात् शुक्र की दशा नेष्टकारिणी होती है ॥५॥

प्रथम भावस्थ शनिफल—

धनेनातिपूर्णोऽतितृष्णो विवादी तनुस्थेऽर्कजे स्थूलदृष्टिर्नरः स्यात्।
विषं दृष्टिजं त्वाधिकृद्व्याधिवाधाः स्वयं पिडितो मत्सरावेश एव ॥१॥

सततमल्पगतिर्मदपीडितस्तपनजे तनुगे खलु चाऽधमः।
भवति हीनकचः कृशविग्रहो मितसुहृद्रिपुसद्मनि मानवः ॥२॥

ताले यदि स्याज्जुहलो बदअक्लश्च लागरो मनुजः।
शठकम्बुरुं वेदिलः वाममतिपूर्णः प्रभुर्भवति ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न में शनि हो वह मनुष्य दुर्बलशरीर, अल्प केशवाला, नीच प्रकृति, बुद्धिहीन, निर्दयी और अतितृष्णा रखनेवाला होता है। धनवान् और अधिकार पूर्ण होते हुए भी मानसिक चिन्ता तथा व्याधि बराबर बनी रहती है और दूसरों की डाह रखने से स्वतः क्लेश पाता है। उसकी दृष्टि दोषकारक होती है। यदि शनि अपनी शत्रु की राशि में हो तो थोड़े मित्र और अधिक शत्रुवाला होता है ॥१–३॥

शनौ तनौ सरुग् दीना दुश्चरित्रा कुरूपिणी।
तत्र स्वोच्चे स्वभे वापि धनारोग्यसमन्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि जन्मलग्न में शनि हो तो रोगवाली, दरिद्रा, नीच प्रकृति वाली और कुरूपा होती है। यदि शनि अपने गृह या उच्च का हो तो नीरोग और धन से युक्ता होती है ॥४॥

मन्दस्तनुस्थः कुरुते हि मन्दं भयादिवातव्रणजं च कष्टम्।
परापवादं च कलत्रकष्टं ज्वराख्यरोगं खलु वर्षमध्ये ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न में शनि हो तो उस वर्ष में उस मनुष्य की बुद्धि को मन्द करता है और भय, वातरोग तथा व्रण से उत्पन्न कष्ट, दूसरों से अपवाद, स्त्री को कष्ट और ज्वरादि का प्रकोप विशेष रहता है ॥५॥

द्वितीय भावस्थ शनिफल—

सुखापेक्षया वर्जितोऽसौ कुटुम्बात् कुटुम्बे शनौ वस्तु किं किं न भुङ्क्ते ।
समं वक्ति मित्रेण तिक्तं वचोऽपि प्रसक्तिं विना लोहकं को लभेत ॥१॥

धननिकेतनवर्तिनि भानुजे भवति वाक्यसहः स धनान्वितः ।
चपललोचनसंचयने रतो भवति चौरपरो नियतं सदा ॥२॥

यावागो वद्हालः कोतोदत्तश्च गुस्वरो जोहलः ।
जरखाने यदि मनुजो नाढ्यः परदेशगश्चापि ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न के द्वितीय भाव में शनि हो तो वह सुखलाभ की इच्छा से कुटुम्ब को छोड़कर स्वदेश अथवा परदेश में रह कर उत्तम २ वस्तु प्राप्त करता है। चञ्चलनेत्र, क्रोधी, शिघ्रगामी चोरी करने में तत्पर रहता है। सुवर्ण आदि अमुल्य पदार्थ प्राप्त करता है। प्रसङ्ग के विना मित्र के साथ कठोर वचन कहता है और सदैव मानसिक पीड़ा से दुःखी रहने वाला होता है ॥१–३॥

धने शनौ धनैर्हीना व्ययस्याद्ये च दुःखिता ।
किञ्चत् सुखं भवेत् पश्चात् स्वोद्यमेन धनागमः ॥४॥

भावार्थः—यदि शनि द्वितीय भाव में हो तो स्त्री प्रथम अवस्था में निर्धना और दुःखिता होती है। पश्चात् अपने उद्योग से किञ्चित् धन तथा सुख को प्राप्त होती है ॥४॥

धनस्थितः सञ्जनयेन्नराणां शनैश्चरो वातकफादिपीडाम् ।
स्थानान्तरं बान्धवनाशनं च रिपोर्विवृद्धिं तनुपीडनं च ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से द्वितीय भाव में शनि हो तो वात तथा कफ से पीड़ा और अङ्ग में पीड़ा होती है। उसवर्ष में शत्रु की वृद्धि, बन्धु का नाश और अस्थिरता अर्थात् स्थानान्तरगमन होता है ॥५॥

तृतीय भावस्थ शनिफल—

तृतीये शनौ शीतलं नैव चित्तं जनादुग्रमाज्ञायते युक्तभाषी।
अविघ्नं भवेत्कर्हिचिन्नैव भाग्यं दृढाशः सुखी दुर्मुखः सत्कृतोऽपि ॥१॥

सहजमन्दिरगे तपनात्मजे भवति सर्वसहोदरनाशकः।
तदनुकूलनृपेण समो नरः स्वसुतपुत्रकलत्रसमन्वितः ॥२॥

जोरावरो यशोलः खुशदाना च मानवः सभ्यः।
अनुचरवृन्दसमेतो भवति यदा वै बिरादरे जोह्लः ॥३॥

भावार्थः—जिसके तृतीय भाव में शनि हो तो वह मनुष्य पूर्ण बलशाली यशस्वी, सर्वदा प्रसन्नचित्त और दृढ़ आशावादी होता है तथा उत्तम राजा के समान, पुत्र स्त्री सुख से युक्त होता है। उसका भाग्य बिना विघ्न के नहीं रहता और सहोदर भाई से हीन रहता है। उत्तम वक्ता, सभा में चतुर और सम्मान को प्राप्त करता है। उसका आदर करते रहने पर भी वह अप्रसन्न ही रहता है ॥१–३॥

सहजस्थेऽनुजैर्हीना शनौ बुद्धिबलान्विता।
स्वोपार्जितधना जाता कुटुम्बपरिपालिका ॥४॥

भावार्थः—यदि तृतीय भाव में शनि हो तो जाता छोटे सहोदर से हीना बुद्धि और बल से युक्ता, अपने उपार्जित धन से परिवार का पालन करने वाली होती है ॥४॥

तृतीयसंस्थे रविजे मनुष्यो द्रव्यादिभोगान् लभते ह्यवश्यम्।
पराक्रमं राजकृपां च लक्ष्मीं सहोदराङ्गे च रुजोविवृद्धिम् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से तृतीय भाव में शनि हो तो मनुष्य उसवर्ष में अवश्य ही द्रव्यादि भोग लाभ करता है तथा पराक्रम, राजा की कृपा और लक्ष्मी को प्राप्ति करता है। उसके सहोदर के अंग में रोग की वृद्धि होती है ॥५॥

चतुर्थ भावस्थ शनिफल—

चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं धनं मन्दिरं बन्धुवर्गापवादः।
पितुश्चापि मातुश्च संतापकारी गृहे वाहने हानयो वातरोगी ॥१॥

बन्धुस्थितो भानुसुतो नराणां करोति बन्धोर्निधनं च रोगी।
स्त्रीपुत्रभृत्येन विनाकृतश्च ग्रामान्तरे चाऽसुखदः स वक्री ॥२॥

सुतफक्किरो बहोशः परितप्तो मानसो जोहूलः।
मादरखाने यदि स्यात् कमजोरश्च लागरो भवति ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में शनि हो वह सदैव चिन्तायुक्त, व्यवहार से उदासीन, मानसीय व्यथा से व्याकुल, बन्धु स्त्री पुत्र और नौकरों से हीन तथा स्वयं वायुरोग से पीड़ा पाता है। वह माता-पिता को भी कष्ट देनेवाला होता है। उसे भाई बन्धु द्वारा व्यर्थ का कलङ्क लगता है। यदि शनि वक्री हो तो बाप दादों का धन और ग्राम छूट जाता है और दुखी जीवन व्यतीत करता है ॥१–३॥

सुखे शनौ सुखैर्हीना वातपित्तरुजान्विता।
मलिनाऽऽलस्यसंयुक्ता कुशीला कलहप्रिया ॥४॥

भावार्थः—यदि चतुर्थ भाव में शनि हो तो सुख से हीना, वात और पित्तरोगवाली, मलिनहृदया, आलस्यवाली और कलहकारिणी होती है ॥४॥

चतुर्थे शनिर्वर्षलग्नाद् यदि स्यात् तदा गुप्तचिन्ता भवेदङ्गरोगः।
पशोः पीडनं मातृपक्षे च रोगो दशा नेष्टकर्त्री भवेद्धायनेऽस्य ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से चतुर्थ भाव में शनि हो तो उस वर्ष में मनुष्य को गुप्तचिन्ता, अङ्ग में कष्ट, पशुओं को पीड़ा, मातृपक्ष में रोग और शनि की दशा, अन्तरदशा अनिष्टकर्त्री होती है ॥५॥

पंचम भावस्थ शनिफल—

शनौ पञ्चमे च प्रजाहेतुदुःखी विभूतिश्चला यस्य बुद्धिर्न शुद्धा।
रतिर्दैवते शब्दशास्त्रे न तद्वत् कलिर्मित्रतो मन्त्रतः क्रोडपीडा ॥१॥

शनैश्चरे पञ्चमशत्रुगेहे पुत्रार्थहीनो भवतीह दुःखी।
तुङ्गे निजे मित्रगृहे च पञ्चौ पुत्रैकभागी भवतीति कश्चित् ॥२॥

बदअल्को मुत्फक्किरः सुतसुखरहितश्च काहिलो मनुजः।
जोहलः पञ्जुमखाने कोतहदेहश्च जाहिलो भवति ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से पञ्चमभाव में शनि हो तो मनुष्य दुष्टबुद्धिवाला, चिन्तित रहनेवाला, आलसी, नाटे शरीरवाला और विवेक से शून्य होता है। वह सन्तान न होने से दुःखी रहता है। उसकी संपत्ति स्थिर नहीं रहती, मित्र से वैर और सदा कलेजे की बिमारी से व्याकुल रहता है। यदि उच्च या स्वगृह अथवा मित्र राशि का हो तो उसे एक पुत्र होता है ॥१–३॥

सुते रविसुते सूतौ सुतसौख्यविवर्जिता।
कुमतिर्धनहीना च सदा रोगभयान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि पञ्चमभाव में शनि हो तो सन्तान-सुख से हीना, कुबुद्धि तथा धनहीना और रोग वाली होती है ॥४॥

सुतगतः सुतहा च शनैश्चरो भवति चोदरपीडनकष्टदः।
विकलता बहुतापकरो भवेन्नृपभयं च तथैव धनादिषु ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से पञ्चमभाव में शनि हो तो उस वर्ष में पुत्र कष्टकारक होते हैं और उदर में पीड़ा, विकलता, ज्वर और धन में राजा से भय होता है ॥५॥

षष्ठ भावस्थ शनिफल—

अरेर्भूपतेश्चोरतो भीतयः किं यदीनस्य पुत्रो भवेद्यस्य शत्री।
न युद्धे भवेत्संमुखे तस्य योद्धा महिष्यादिकं मातुलानां विनाशः ॥१॥

नीचे रीपोर्भे च कुलक्षयं च षष्ठे शनिर्गच्छति मानवानाम्।
अन्यत्र शत्रून्विनिहन्ति तुङ्गी पूर्णार्थकामार्ज्जनतां ददाति ॥२॥

दानीश्वरं जलीलं जनयति मनुजं मुकर्रमं नृपतिम्।
विजितवैरिसमूहं दुश्मनखाने स्थितो जोहलः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से षष्ठभाव में शनि हो तो वह शत्रु, राजा और चोर का भय नहीं रखता। उसके सामने बड़ा से बड़ा भी योद्धा ठहर नहीं सकता। उसे चौपाये जानवरों का सुख होता है और मातृ पक्ष (ननिहाल) सुख से विमुख रहता है। यदि नीच या शत्रु ग्रह का शनि हो तो उस मनुष्य के कुल का नाश होता है तथा उच्च का हो तो मनोरथ को पूर्ण करता है ॥१-३॥

शत्रुहीना शनौ शत्रौ तुष्टा पुष्टाङ्गयष्टिका।
धनमानगुणोपेता गुरुभक्तिपरायणा ॥४॥

भावार्थः—यदि शनि षष्ठभाव में हो तो स्त्री शत्रु और रोग से हीना, सन्तुष्टा और पुष्ट शरीरवाली, धन, प्रतिष्ठा और गुणों से युक्ता, गुरुजनों की सेविका होती है ॥४॥

ष:स्थितो भूधनकीर्तिलाभः सूर्यात्मजो नृपसमं मनुजं प्रकुर्यात्।
धान्याम्बरादिधनलाभकरोऽत्र वर्षे कीर्तेर्विवर्द्धनमथार्तिविनाशनञ्च ॥

भावार्थः—वर्षलग्न से षष्ठभाव में शनि हो तो उस वर्ष में सुखी, धन और कीर्ति का लाभ होता है। तथा साधारण व्यक्ति भी राजा के तुल्य सुख भोगता है ॥५॥

सप्तम भावस्थ शनिफल—

सुदारा न मित्रं चिरं चारुवित्तं शनौ द्यूनगे दंपति रोगयुक्तौ।
अनुत्साहसन्तप्तकुद्दीनचेताः कुतो वीर्यवान् विह्वलो लोलुपः स्यात् ॥१॥

विश्रामभूतां विनिहन्ति जायां सूर्यात्मजः सप्तमगःसरोगाम्।
धत्ते पुनर्धर्म्मधराङ्गहीनां वित्तप्रणाशामयपीडितश्च ॥२॥

बद्‌रो जनः कृशाङ्गः कम्फहमश्च मानवो हिर्जः।
जानो वा स्याज्जोहो हफ्तुमखाने यदा भवति ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से सप्तमभाव में शनि हो वह दुराचारी, दुर्बलशरीरवाला, अल्पबोलनेवाला, उत्साहहीन, और पराधीन रहनेवाला होता है। उसके पास सुन्दर, स्त्री, सुयोग्य मित्र और अधिक धन बहुत समय तक नहीं रहता है। अर्थात् प्रथम स्त्री मरजाती है या रोगिणी रहती है, फिर दूसरी स्त्री भी रोगिणी होती है और स्वयं धन नाश और रोग से पीड़ित रहता है ॥१—३॥

मदे शनौ रुजाक्रान्ता कान्तादरसमुज्झिता।
निर्धना दुःखसन्तप्ता नीचवृत्तिरता सदा ॥४॥

भावार्थः—यदि सप्तमभाव में शनि हो तो रोगिनी, पति-सुख से हीना निर्धना शोक-सन्ताप से युक्ता, निन्दित-कार्य करनेवाली होती है ॥४॥

जायास्थानगतो दिवाकरसुतः स्यादङ्गनापीडनम्।
मार्गाद् भीतिरथौ पशोश्च मरणं राज्याद्भयं व्यग्रता।
क्लेशानाञ्च विवर्द्धनं हि कुरुते मिथ्यापवादस्तथा।
देहे वातसमुद्भवा च जठरे पीडा भवेद्धायने ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से सप्तमभाव में शनि हो तो मनुष्य को शरीर-पीड़ा, मार्ग में भय, पशु का मरण, राजा से भय, व्यग्रता, क्लेश की वृद्धि, लोगों में मिथ्या अपवाद, देह में वात रोग और उदर पीड़ा होती है ॥५॥

अष्टम भावस्थ शनिफल—

वियोगो जनानां त्वनौपाधिकानां विनाशो धनानां स को यस्य न स्यात् ।
शनौ रन्ध्रगे व्याधितः क्षुद्रदर्शी तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु ॥१॥

शनैश्चरे चाऽष्टमगे मनुष्यो देशान्तरे तिष्ठति दुःखभागी ।
चोर्यापराधेन च नीचहस्तैः पञ्चत्वमाप्नोत्यथ नेत्ररोगी ॥२॥

बीमारश्च हरीशो दगालबाजश्च दोजखी मनुजः ।
जोहल्हस्तुमखाने भवति बखीलः कुपालसो भीरुः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से अष्टम भाव में शनि हो तो वह मनुष्य सदैव रोगयुक्त, आलसी, कपटी और दूसरों को ठगने की बुद्धि रखनेवाला, विश्वासघाती तथा परिजनों से विरोध करनेवाला होता है। उसके धन का नाश होता है और परदेश में जाकर दुःखी होता है। चोरी के अपराध में नीच के द्वारा मारे जाने का भय तथा नेत्र रोगी रहता है। उसे कोई मनुष्य ठग नहीं सकता ॥१–३॥

शनौ रन्ध्रेऽक्षिरुग्जाता पतिपुत्रसुखोज्झिता ।
कृशाङ्गी तोषहीना च रोषयुक्ताङ्गना भवेत् ॥४॥

भावार्थः—यदि अष्टमभाव में शनि हो तो वह स्त्री आँख में रोग वाली, पति और सन्तान सुख से हीना, कृशशरीरवाली, असन्तुष्टा और क्रोधिनी होती है ॥४॥

निधनगो निधनं कुरुते शनिर्ज्वरविमर्दकफार्त्यपवादकान् ।
नृपभयं धनहानिरथापरैर्भवति तापकरः पवनोदयः ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से अष्टम भाव में शनि हो तो मनुष्य को ज्वर और वात रोग उस वर्ष में होता है। जनों से अपवाद, राजा से भय, शत्रु से धन की हानि और निधनकारी होते हैं ॥५॥

नवम भावस्थ शनिफल—

मतिस्तस्य तिक्ता न तिक्तं तु शीलं रतिर्योगशास्त्रे गुणो राजसः स्यात्।
सुहृद्वर्गतो दुःखितो हीनबुद्ध्या शनिर्धर्मगः कर्मकृत्संन्यसेद्वा ॥१॥

धर्मस्थपङ्गुर्बहुदम्भकारी धर्मार्थहीनः पितृवञ्चकश्च।
मदातुरक्तो विधनोऽथ रोगी पापिष्ठभार्योपरहीनवीर्यः ॥२॥
बख्तबुलन्दः श्रीमान् शीरींसखुनश्च मानवो यदि वै।
जोहो बख्तमखाने वेतालश्च हि कृपालुरपि भवति ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से नवम भाव में शनि हो वह दुष्टबुद्धि का होता है परन्तु आत्मबल दुष्ट नहीं होने से मनोवासना दुष्ट होने पर भी दुष्ट कर्म में रत नहीं रहता है। वह मनुष्य राजसी प्रकृति का होता है। उसकी बुद्धि छोटी होने से मित्रों की तरफ से दुःखी रहता है। वह कर्मनिष्ठ होता है अथवा कर्मों को छोड़कर संन्यासी हो जाता है। यदि शनि उच्च का हो तो जीवन में सुख से रहनेवाला, धनवान, सुन्दर स्वरूपवाला, मधुर वचन बोलने वाला होता है यदि नीच का हो तो दम्भ करनेवाला धर्म और धन से हीन, पिता को धोखा देनेवाला, मदमत्त, रोगी, पापिनी पत्नी होने से निर्बल होता है ॥१–३॥

धर्महीना शनौ धर्मे गुरुभक्तिपराङ्मुखी।
कुधवा धनहीना च मदम्भसमन्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि नवम भाव में शनि हो तो स्त्री धर्महीना, गुरुजनों का आदर नहीं करनेवाली, कुत्सित पतिवाली, निर्धना, गर्व और कपट करनेवाली होती है ॥४॥

भाग्योदयो भाग्यगतः शनिश्चेद् भूपार्थदः शत्रुविनाशनश्च।
कीर्तिं श्रियं मानमथापि दद्यात् सहोदराणां च भयार्तिकारी ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से नवम भाव में शनि हो तो उस वर्ष में भाग्य का उदय, राजा से धनलाभ, शत्रु का नाश, कीर्ति तथा सहोदरों को भय और कष्ट होता है ॥५॥

दशम भावस्थ शनिफल—

...जा तस्य माता पिता बाहुरेव वृथा सर्वतो दुष्टकर्माधिपत्यात् ।
शनैरेधते कर्मगः शर्म मन्दो जयो विग्रहे जीविकानां तु तस्य ॥१॥

शनैश्चरे कर्मगृहस्थितेऽपि महाधनो भृत्यजनानुरक्तः ।
प्राप्तप्रवासे नृपसद्मवासी न क्षत्रुवर्गाद्भयमेति मानी ॥२॥

शाहमकाने जोहलच्चेषु दशाफ्ते च मानवो शाहः ।
अथवा भवेन्मुशीरः खुशखुल्कः सुकृती गनी नेही ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से दशमभाव में शनि हो वह बड़ा धनवान्, ...यस्वी, सदैव सुखी रहनेवाला और अधिक प्रेम करनेवाला होता है। उसे ...त्रुओं का भय नहीं रहता और पूर्ण अधिकारी होने से वृथा दुष्कर्म भी अधिक ...ता है। उसे माता-पिता का सुख नहीं होता और अपने बाहुबल का ही ...पार रहता है ॥१–३॥

राजपत्नी शनौ राज्ये धनपुत्रसुखान्विता ।
शत्रुरोगभयैर्हीना कुशला गृहकर्मसु ॥४॥

भावार्थः—यदि शनि दशमभाव में हो तो स्त्री रानी, धन, सन्तान सुख युक्ता, शत्रु और रोग से तथा हीना घर के कार्य में कुशला होती है ॥४॥

गगनगः कृषिहानिकरः शनिः पशुभयं स्वजनोदरपीडनम् ।
नृपसमं मनुजं च धनागमं प्रकुरुते क्रयविक्रयलाभकृत् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से दशमभाव में शनि हो तो उस वर्ष में खेती में ...नि, पशु का भय, स्वजनों को पीड़ा, धन का लाभ और व्यापार से मनुष्य राजा ...के समान होता है। ॥५॥

एकादश भावस्थ शनिफल—

स्थिरं वित्तमायुः स्थिरं मानसं च स्थिरा नैव रोगादयो न स्थिराणि।
अपत्यानि शूरः शतादेक एव प्रपञ्चाधिको लाभगे भानुपुत्रे ॥१॥

सूर्यात्मजे चायगते मनुष्यो धनी विमृश्यो बहुभोग्यभागी।
शीतानुरागी मुदितः सुशीलः स बालभावे भवतीति रोगी ॥२॥

साहबदर्दो नेकः शीरींसखुनस्तवङ्गरो ना स्यात्।
याम्रमकाने जोहल ईशः साबिरो रिपुहन्ता ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से एकादश भाव में शनि हो तो धनवान, भोगी, रूपवान्, विवेकी, प्रसन्न, इमानदार और मीठी बात करनेवाला होता है। ... बहुत भोगी प्रपञ्ची और बाल्यावस्था में रोगी भी होता है। शरीर ... दुर्बल होते हुए भी अधिकारी और शत्रुओं का नाश करनेवाला होता है। ... कोई अन्य शुभग्रह सन्तानभाव (पञ्चमभाव) में युक्त अथवा दृष्ट न हो तो ... सन्ताननाशकारक भी हो जाते हैं ॥१–३॥

लाभे शनौ सदाचारा सुरूपा सुभगा सती।
नानाभरणवस्त्रादि-धन-धान्यसुखान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि एकादश भाव में शनि हो तो जाता सदाचरणी, रूपवती, सौभाग्यवती, और पतिव्रता होती है। तथा अनेक प्रकार के आभूषण, वस्त्र, धन, धान्य आदि के सुख से युक्ता होती है ॥ ४॥

लाभस्थितो भास्करसूनुरत्र हिरण्यगोभूमिरथाश्वलाभम्।
अर्थागमं कीर्तिविवर्द्धनं च सन्तानदेहे च करोति पीडाम् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से एकादश भाव में शनि हो तो उस वर्ष में सुवर्ण, भूमि, गो, वाहन और धन का लाभ होता है, तथा कीर्ती की वृद्धि और सन्तान के शरीर में पीड़ा होती है ॥५॥

द्वादश भावस्थ शनिफल—

व्ययस्थे यदा सूर्यसूनौ नरः स्यादशूरोऽथवा निस्त्रपो मन्दनेत्रः।
प्रसन्नो बहिर्नो गृहे लग्नश्चेयद्वययस्थो रिपुध्वंसकृद्यज्ञभोक्ता ॥१॥

व्यये शनौ पञ्चगणाधिनाथो गदान्वितो हीनवपुः सदुःखी।
जङ्घाव्रणी क्रूरमतिर्मनुष्यो वधे रतः पक्षिगणस्य नित्यम् ॥२॥

तङ्गहालो बदफेलः पापासक्तश्च मुफ्लिसो मनुजः।
जोह्लः खर्चमकाने भवति हरीशः कृपालुरेव स्यात् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वादश भाव में शनि हो तो वह दुर्बलगात रोगी, कुकर्म में रत, क्रूरबुद्धि और डरपोक होता है। अपव्ययी होने के कारण धनभाव से दुःखी रहता है। घर की बजाय परदेश उसे अच्छा लगता है। वह मनुष्य निर्लज्ज अथवा मन्दहष्टि वाला भी होता है। किन्तु यदि शनि लग्नेश होकर व्यय (द्वादश) भाव में पड़े तो बलवान् और शत्रुओं को जीतने वाला होता है ॥१–३॥

व्यये शनौ दयाहीना सालस्या नीचगामिनी।
निर्धना व्ययशीला च सरोगा कलहप्रिया ॥४॥

भावार्थः—यदि शनि द्वादशभाव में हो तो वह स्त्री निर्दया, आलसी, नीचजनों से संगतिशाली, धनहीना, अधिक खर्च करनेवाली, रोगिनी और कलह करनेवाली होती है ॥४॥

व्ययस्थानगो जायते चाऽर्कपुत्रो व्ययो व्यग्रता क्लेशचिन्तादिकञ्च।
रिपूणां विनाशो भवेदर्थनाशः शिरोऽर्तिश्च पीडा तु कर्णे विकारः ॥५॥

भावार्थः—वर्ष लग्न में शनि यदि द्वादश भाव में पड़े तो उस मनुष्य को अधिक खर्च, क्लेश, चिन्ता, शत्रु का नाश, धन की हानि और अपने अङ्ग में पीडा होती है ॥५॥

प्रथम भावस्थ राहुफल—

स्ववाक्ये समर्थः परेषां प्रतापात्प्रभावात्समाच्छादयेत्स्वान् परार्थान्।
तमो यस्य लग्ने स भग्नारिवीर्यः कलत्रेऽधृतिं भूरिदारोऽपि यायात् ॥१॥

रोगी सदा देवरिपौ तनुस्थे कुले च मुख्यो बहुजल्पशीलः।
रक्तेक्षणः क्रोधपरः कुकर्मरतः सदा साहसकर्मदक्षः ॥२॥

अव्वलखाने यदा रास खिस्मनाकश्च काहिलः।
मनुजः स्वार्थकर्ता स्याद्भवेद्वेरोतु जाहिलः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न में राहु हो तो वह रोगी, आलसी, कुल, स्वार्थी, व्यर्थ बोलनेवाला, लालनेत्र, क्रोधी परञ्च साहसी होता है। वह शत्रुओं के बल का नाश करता है और दूसरे के प्रभाव से अपने अभिष्ट की पूर्ति करता है तथा अपने कुल में मुख्य होता है। उसे बहुत स्त्रियाँ रहने पर भी उनसे व तृप्त नहीं होता अर्थात् अधिक कामी भी होता है ॥१–३॥

लग्ने रोगयुता राहौ पापिनी रक्तलोचना।
चञ्चला दुर्मतिर्जाता गुरुसेवापराङ्मुखी ॥४॥

भावार्थः—यदि लग्न में राहु हो तो वह स्त्री रोगिनी, पापिनी, लालनेत्रवाली, चञ्चलस्वभाव, नीचबुद्धिवाली और गुरुजनों के अनादर करनेवाली होती है ॥४॥

तमो लग्नगः कामिनीनाञ्च पीडा, रिपोर्भीतिरेवं व्ययो व्यग्रता च।
शिरोऽर्तिश्च भूपाद्भयं मानभङ्गस्तथा नेत्ररोगो भवेदत्र वर्षे ॥५॥

भावार्थः—जिसके वर्ष प्रवेशकालिक लग्न में राहु हो तो उस वर्ष में उसकी स्त्री को पीड़ा, शत्रु से भय, व्यर्थ खर्च, व्यग्रता, अपने अङ्ग में पीड़ा, राजा से भय, मानभङ्ग तथा नेत्र में रोग होता है ॥५॥

द्वितीय भावस्थ राहुफल—

कुटुम्बे तमो नष्टभूतं कुटुम्बं मृषा भाषिता निर्भयो वित्तपालः।
स्ववर्गप्रणाशो भयं शस्त्रतश्चेदवश्यं खलेभ्यो लभेत्सारवश्यम् ॥१॥

राहौ धनस्थे कृतचौरवृत्तिः सदावलिप्तो बहुदुःखभागी।
मत्स्येन मांसेन सदा धनी च सदा वसेन्नीचगृहे मनुष्यः ॥२॥

कुजीबाहासिद्रासो मालखाने च मुफ्लिसम्।
करोति मनुजं वान्यदेशे धनसमन्वितम् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वितीयभाव में राहु हो तो वह अभिमानी, दुःख भागी, मिथ्या बोलनेवाला, चोरी करनेवाला तथा नीच जनों के वश में रहनेवाला होता है। मत्स्य-मांस से धनोपार्जन करता है और द्रव्य का रक्षण करता है। वह अपने बान्धवों का नाश देखता है अर्थात् उसका कुटुम्ब नष्ट हो जाता है। अपने धर्म कर्म से विहीन, स्वेच्छा से कष्ट सहनेवाला और अन्य देश में जाकर धन कमा कर सुखी होता है ॥१-३॥

चौरवृत्तिर्धने राहौ परगेहनिवासिनी।
अधना भ्रमणासक्ता कामिनी बहुभाषिणी ॥४॥

भावार्थः—यदि द्वितीय भाव में राहु हो तो चोरनी, दूसरे के घर में निवास करनेवाली, धनहीना, घूमनेवाली, कामाधिका और व्यर्थ अधिक बोलनेवाली होती है ॥४॥

जनापवादं च कुटुम्बगश्चेत्, तमस्तथा भूपभयङ्करोति।
नेत्रोदरव्याधिभयार्त्तिदोषान् धनापहारो भवतीह वर्षे ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से द्वितीयभाव में राहु पड़े तो उस वर्ष में मनुष्य को परिजनों से अपवाद, राजा से भय, शरीर में पीड़ा और धन का नाश होता ।५।

तृतीय भावस्थ राहुफल—

न नागोऽथ सिंहो भुजो विक्रमेण प्रयातीह सिंहीसुते तत्समत्वम्।
तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति प्रयातोऽपि भाग्यं कुतो यत्नहेतुः ॥१॥

भ्रातुर्विनाशं प्रददाति राहुस्तृतीयभावे मनुजस्य गेहे।
सौख्यं धनं पुत्रकलत्रमित्रं ददाति तुङ्गी गजवाजिभृत्यान् ॥२॥

पाकः शाहबलः स्याद्वै नेकनामी गनी सखी।
शीयुम्खाने यदा रासः प्रभवेन्मनुजो धनी ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से तृतीयभाव में राहु हो तो बड़ा यशस्वी, प्रभावशाली, बाहुबल में उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता तथा सब प्रकार के सुख से युक्त होता है। भाग्योदय के समय उसे बहुतद्र व्यलाभ होता है। यदि नीच का राहु हो तो उसके भाई के लिए अनिष्ट होता है अर्थात् जगत ही उसको सगे भाई के समान होता है। उच्च में हो तो अत्यन्त धनाढ्य और वाहन के सुख से युक्त रहता है ॥१–३॥

सहजे चानुजैर्हीना धनकीर्तिसुखान्विता।
वादे विजयिनी जाता सुधवा च सुसन्ततिः ॥४॥

भावार्थः—यदि राहु तृतीय भाव में हो तो जाता अनुज सहोदर से हीना धन, कीर्ति और सर्व सुख सम्पन्ना, वादविवाद में जीतनेवाली, उत्तम पति और उत्तम सन्तान वाली होती है ॥४॥

शशिविमर्दकरस्तु तृतीयगो धनयुतं नरदेवसमं नरम्।
प्रकुरुते पशुवाहनजं सुखं स्वजनपीडनमत्र करोत्यसौ ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से तृतीयभाव में राहु हो तो उस वर्ष में राजा के समान धनी कर देता है और पशु तथा वाहनों का सुख तथा स्वजन को पीड़ादायक होता है ॥५॥

चतुर्थ भावस्थ राहुफल--

चतुर्थे कथं मातृनैरुज्यदेहो हृदि ज्वालया शीतलं किं बहिः स्यात् ।
स चेदन्यथा मेषगः कर्कगो वा बुधर्क्षेऽसुरो भूपतेर्बन्धुरेव ॥१॥

राहौ चतुर्थे धनबन्धुहीनो ग्रामैकदेशे वसति प्रकृष्टः ।
नीचानुरक्तः पिशुनश्च पापी पुत्रैकभागी कृशयोषीदाढ्यः ॥२॥

रासश्चेद्दोस्तखाने स्यात् परेशानो मुसाफिरः ।
नादानोऽपि च वादी च सौख्यहीनो विपक्षकः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में राहु हो तो वह धन और बन्धुओं से हीन, नीचजनों के साथ व्यवहार रखनेवाला, मित्र से विमुख व्यर्थ विवाद करने वाला, चुगुलखोर, पापी, और मातृ सुख से हीन होता है। उसे एक पुत्र का सुख रहता है तथा दुर्बल स्त्री वाला होता है। यदि मेष, कर्क, मिथुन और कन्या का राहु हो तो माता का सुख होता है तथा सुखी रहता है ॥१–३॥

बन्धौ नीचानुगा राहौ गृहबन्धुसुखोज्झिता ।
कुधवैकसुता जाता पैशुन्यनिरता खला ॥४॥

भावार्थः—यदि राहु चतुर्थ भाव में हो तो वह स्त्री नीच जनों से सङ्ग करने वाली, घर और बन्धुओं के सुख से हीना तथा अधम पति और एक सन्तानवाली होती है। वह दुष्ट, प्रकृतिवाली और चुगली करनेवाली होती है ॥४॥

हिमांशो रिपुस्तुर्यगो वाहनानां विनाशं तथा भूपपक्षाद्भयं च ।
कफार्तिञ्च कष्टं तथा वायुपीडां विदेशे भ्रमं हायनेऽसौ करोति ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से चतुर्थ भाव में राहु पड़े तो उस वर्ष में वाहनों का नाश, राजा से भय, शारीरिक कष्ट और विदेश में भ्रमण होता है ॥५॥

पंचम भावस्थ राहुफल—

सुते तत्सुतोत्पत्तिकर्त्सिहिकायाः सुतो भामिनीचिन्तया चित्ततापः।
सति क्रोडरोगे क्रिमाहारहेतुः प्रपञ्चेन किं प्रापकादृष्टवर्ज्यम् ॥१॥

राहु सुतस्थः शशिनानुगो हि पुत्रस्य हर्ता कुपितः सदैव।
गेहान्तरे सोऽपि सुतैकमात्रं दत्ते प्रमाणं मलिनं कुचैलम् ॥२॥

पिसरखाने स्थितो रासः पुत्रसौख्यविवर्जितम्।
बहोशं दर्दशिकमं नादानं कुरुते नरम् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से पंचम भाव में राहु हो तो पुत्र सुख से विहीन, परिवार से उदासीन, शरीर से पीड़ा युक्त और निकम्मा होता है। उसे दुष्ट स्त्री की चिन्ता से मन का सन्ताप रहता है और जीवन भर असाध्य रोग का शिकार रहता है तथा व्यापार में विशेष लाभ नहीं होता। यदि चन्द्रमा के साथ राहु हो तो पुत्र का नाश अवश्य होता है अन्यथा एक पुत्र मलिन बुद्धि-वाला होता है ॥१–३॥

सेन्दौ सूतौ सुते राहावसुता सुखवर्जिता।
कुमित्रा कुमतिश्चैव विचन्द्रे चैकपुत्रिणी ॥४॥

भावार्थः—यदि पंचम भाव में राहु हो तथा चन्द्रमा के साथ हो तो सन्तान हीना कुमित्र और कुबुद्धि वाली होती है। यदि चन्द्रमा से युत अथवा दृष्ट न हो तो एक पुत्र वाली होती है ॥४॥

स्वबुद्धेर्विनाशं सुतस्थानगः स्याद् हिमांशो रिपुः सन्ततेः पीडनं च
स्वकीयोदरे वायुभीतिं धनार्तिं तथा सर्वदा क्लेशचिन्तां करोति ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से पंचम भाव में राहु हो तो अपनी बुद्धि का नाश, सन्तान को कष्ट, अपने उदर में वायु-व्यथा, भय, धन का नाश, क्लेश और चिन्ता होती है ॥५॥

षष्ठ भावस्थ राहुफल—

बलं बुद्धिवीर्ये धनं तद्वशेन स्थितो वैरिभावेऽपि येषां जनानाम्।
रिपूणामरण्यं दहेदेव राहुः स्थिरं मानसं तत्तुला नो पृथिव्याम् ॥१॥
षष्ठे स्थितः शत्रुविनाशकारी ददाति पुत्रं च धनानि भोगान्।
स्वर्भानुरुच्चैरखिलाननर्थान् हन्त्यन्ययोषिद्गमनं करोति ॥२॥

म्लेच्छावनीशाद्द्रव्याप्तिर्दिलं च साहवं नरम्।
बद्खानास्थितो रासः करोति रिपुसंक्षयम् ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से षष्ठ भाव में राहु हो तो शत्रु को नाश करनेवाला, धनवान्, पुत्रवान्, पंचायती करनेवाला और दिल का उदार होता है। उसका बल, बुद्धि, पराक्रम, धन और अन्तःकरण स्थिर होता है। उससे पृथिवी में उसके जोड़ का दूसरा नहीं होता है। यदि राहु उच्च का हो तो सब अनर्थ का निवारण करनेवाला, परस्त्रियों के साथ सम्पर्क करनेवाला होता है ॥१-३॥

रिपुरोगविहीना च रिपौ राहौ धनान्विता।
सुकीर्तिः सुमतिः साध्वी कुशला सर्वकर्मसु ॥४॥

भावार्थः—यदि षष्ठ भाव में राहु हो तो जाता शत्रु और रोग से रहिता, धनवाली, उत्तम बुद्धिवाली और सब कार्य में निपुणा होती है ॥४॥

रिपोर्विनाशो यदि सैंहिकेयः षष्ठं गतः स्यान्नृपतुल्यकीर्तिः।
गोभूहिरण्याम्बरलाभकारी धनाप्तिकृद्दुःखविनाशकश्च ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से राहु षष्ठ भाव में पड़े हों तो उस वर्ष में शत्रु का नाश, राजा के समान कीर्ति, गौ, पृथ्वी, सुवर्ण, वस्त्र और धन की प्राप्ति होती है तथा दुःख का निवारण करनेवाले होते हैं ॥५॥

सप्तम भावस्थ राहुफल—

विनाशं लभेयुर्धुने तच्च वत्यो रुजा धातुपाकादिना चन्द्रमर्दौ।
कटाहें यथा लोडयेज्जातवेदा वियोगापवादाः शमं न प्रयान्ति ॥१॥

जायास्थराहुर्धनहानिकर्त्रीं ददाति नारीं विविधांश्च भोगान्।
पापानुरक्तां कुटिलां कुशीलां ददाति शेषैर्बहुभिर्युतश्च ॥२॥

हिर्जंगदंश्च बेताळो गुस्वरो बद्जनो भवेत्।
हफ्तमखाने यदा रासः कलही मनुजस्तदा ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से सप्तम भाव में राहु हो वह क्रोधी, बुरे स्वभाववाला, व्यर्थ लड़ाई तथा विवाद करनेवाला होता है। उसे अधिक धन खर्च करनेवाली स्त्री और अनेक प्रकार के भोग लाभ करनेवाला होता है। उस मनुष्य को बन्धु वियोग तथा लोकनिन्दा सर्वदा बनी रहती है। यदि अनेक ग्रहों से युक्त राहु हो तो उसकी स्त्री धातुपाक आदि रोगों से नष्ट, पापिनी और दुष्ट स्वभाव वाली होती है ॥१–३॥

मन्दभाग्या मदे राहौ विधवा कुधवाऽथ वा।
कोपशीला कुरूपा वा कुचरित्रा प्रजायते ॥४॥

भावार्थः—यदि सप्तम भाव में राहु हो तो स्त्री मध्यम भाग्यवाली, विधवा अथवा अधम पतिवाली होती है। वह क्रोधिनी, कुरूपा और चरित्रहीना होती है ॥४॥

वातप्रमेहादिरथो नराणां गुह्येन्द्रियार्तिश्च तमो मदस्थः।
मन्दाग्निपीडा च तथाङ्गनानामिन्दो रिपुः स्याद्यदि सप्तमस्थः ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से सप्तम भाव में राहु हो तो वात और प्रमेह रोग, गुप्ताङ्गों में पीड़ा तथा स्त्री को मन्दाग्नि और चिन्ता होती है ॥५॥

अष्टम भावस्थ राहुफल—

नृपैः पण्डितैर्वन्दितो निन्दितः स्वैः सकृद्भाग्यलाभोऽरुकृद् भ्रंश एव।
धनं जातकं तं जनाश्च त्यजन्ति श्रमग्रन्थिकृद्रन्ध्रगो ग्रहनशत्रुः ॥१॥

राहुः सदा चाऽष्टममन्दिरस्थो रोगान्वितं पापरतं प्रगल्भम्।
चौरं कृशं कापुरुषं धनाढ्य मायामतीतं पुरुषं करोति ॥२॥

हस्तमूखाने यदा रासः शरीरी स्यान्मुसाफिरः।
वेदीनः खिश्मनाकः स्याद् बदकारश्च मुफ्लिशः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से अष्टम भाव में राहु हो तो रोगी, पापकर्म में रत, ढीठ, मायाजाल में पारङ्गत और दुर्बल शरीर वाला होता है। उसे धन रहते हुए भी धन का सुख मिलता नहीं है। कुटुम्बों से त्याज्य और अपमानित रहने से विदेश में वास करता है। उसका भाग्योदय एक बार ही होता है और हानि अनेक बार होती है ॥१–३॥

रोगिणी रन्ध्रगे राहौ प्रगल्भा पापचारिणी।
कृशाङ्गी धनसंयुक्ता जाता चौर्य-क्रियारता ॥४॥

भावार्थः—यदि अष्टम भाव में राहु हो तो वह स्त्री रोगिनी, पापाचरण-वाली, दुबली, धनवती और चोरी करने वाली होती है ॥४॥

छिद्रस्थितो मृत्युसमं मनुष्यं तमस्तथा भूपभयं करोति।
ज्वरातिसारं च कफार्तिदोषं विशूचिकां वातभयं नराणाम् ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से अष्टम भाव में राहु पड़े तो उस वर्ष में उस मनुष्य को मरण-तुल्य कष्ट, राजा से भय, ज्वर, अतिसार, कफ की वृद्धि-विशूचिका और वात रोग का भय होता है ॥५॥

नवम भावस्थ राहुफल—

मनीषी कृतं न त्यजेद्बन्धुवर्गं सदा पालयेत्पूजितः स्यात् गुणैः स्वैः।
सभाद्योतको यस्य चेत्त्रित्रिकोणे तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ॥१॥

धर्मस्थिते चन्द्ररिपौ मनुष्यश्चाण्डालकर्मा पिशुनः कुचैलः।
ज्ञातिप्रमोदे निरतश्च दीनः शत्रोः कुलाद्भीतिमुपैति नित्यम् ॥२॥

बख्तखाने यदाः रासः प्रभवेन्मनुजस्तदा।
जवाहिर्जर्कशीयुक्तः साहवः सौख्यवान्नरः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से नवमभाव में राहु हो तो वह विद्वान् सर्वगुण सम्पन्न और माननीय होता है तथा सभाचतुर, रसिक, बहुत रत्नों से युक्त और सुखी होता है। वह किये हुए उपकार को भूलता नहीं है। यदि पाप ग्रह से युक्त राहु हो तो निन्द्य कर्म करने वाला चुगलखोर, मलिनवस्त्रधारी, धनहीन और शत्रुओं से युक्त होता है ॥१–३॥

मलिना धर्मगे राहौ कुलाचारविवर्जिता।
रिपुरोगभयत्रस्ता निजबन्धूपकारिणी ॥४॥

भावार्थः—यदि नवम भाव में राहु हो तो वह स्त्री मलिना, अपने कुलाचार से विपरीत चलनेवाली, शत्रु और रोग से पीड़िता और अपने बन्धुओं की उपकारिणी होती है ॥४॥

धर्मस्थितो धर्मविनाशनं स्याज्जयो नृपाच्छत्रुविनाशनञ्च
भाग्योदयं धान्यधनागमं च करोति पीडां पशुबान्धवेषु ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से नवम भाव में राहु हो तो धर्म का नाश, राजा से जय, शत्रु का नाश, भाग्योदय, धन-धान्य का लाभ और पशु तथा बन्धुओं को पीड़ा होती है ॥५॥

दशम भावस्थ राहुफल—

सदा म्लेच्छसंसर्गतोऽतीव गर्वं लभेन्मानिनीकामिनीभोगमुच्चैः।
जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नाधिशेते मदार्थव्ययी क्रूरकर्मा खगेऽगौ ॥१॥

कामातुरः कर्मगते च राहौ परार्थलोभी मुखरश्च दीनः।
म्लानो विरक्तः सुखवर्जितश्च विहारशीलश्चपलोऽतिदुष्टः ॥२॥

रासो बादशाहखाने भवेज्जोरावरो गनी।
विपक्षपक्षरहितो मुईशः पुर्तरुद्दतः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से दसमभाव में राहु हो तो वह म्लेच्छों की सङ्गती में रहकर बड़ा घमंडी होता है। परधन का लोभी, व्यर्थ विवाद करने वाला, दीन, मलिन और चिन्तायुक्त रहता है। मदपान में द्रव्य का खर्च और दुष्टकार्य करते रहने से लोगों द्वारा अपमानित होता है और आगे चलकर वैराग्य को प्राप्त होता है। वह बहुत बलवान् और शत्रु से रहित, धनवान् विहार करने वाला तथा चञ्चल स्वभाव का होता है। उसे उत्तम स्त्री का भोग प्राप्त होता है ॥१-३॥

सकामा कर्मगे राहौ परद्रव्यापहारिणी।
चञ्चला दुश्चरित्रा च प्रगल्भा सुखवर्जिता ॥४॥

भावार्थः—यदि दशमभाव में राहु हो तो जाता अधिक कामवासनावाली, दूसरे के द्रव्य को ठगने वाली, चञ्चला, दुराचारिणी, ढीठ और सुख से रहिता होती है ॥४॥

सिंहीसुतो दशमगः क्रय-विक्रयेषु लाभं नरं नृपसमं प्रकरोति वर्षे।
भूपाज्जयं सततमङ्गलमाशु कुर्यात्कीर्तिं धनं भवति वाहनहानिकारी ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से दशमभाव में राहु हो तो क्रय-विक्रय के व्यापार में लाभ, राजा से जय, सर्वदा मङ्गल कीर्ति और धन का लाभ होता है अर्थात् उस वर्ष में मनुष्य राजा के तुल्य होता है, किन्तु वाहन की हानि होती है ॥५॥

एकादश भावस्थ राहुफल—

सदा म्लेच्छतोऽर्थं लभेत्साभिमानश्चरेत् किंकरेण व्रजेत् किं विदेशम्।
परार्थानन्थीं हरेत् धूर्तबन्धुः सुतोत्पत्तिसौख्यं तमो लाभगश्चेत् ॥१॥

आयस्थिते सोमरिपौ मनुष्यो दान्तो भवेन्नीलवपुः सुमूर्तिः।
वाचाल्ययुक्तः परदेशवासी शास्त्रार्थवेत्ता चपलो विलज्जः ॥२॥

याफ्तखाने भवेद्रासो जायते नहि साहवः।
वेकारश्च कर्जमन्दः कलही मनुजस्तदा ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से एकादशभाव में राहु हो वह पुरुष जितेन्द्रिय, श्यामवर्ण, सुन्दरशरीरवाला, चञ्चल और निर्लज्ज होता है व्यर्थ कार्य में समय व्यतीत करनेवाला, कर्जलेनेवाला, धूर्तों का मित्र और अनर्थ करने वाला होता है तथा दूसरे के धन को ठग कर ले लेता है। वह म्लेच्छों से धन पाता है। अत्यन्त घमंडी होने से अपने बन्धुओं से भी कलह रखता है। उसे पुत्रजन्म का सुख अवश्य मिलता है ॥१-३॥

लाभे राहौ सदाचारा सुरूपा सत्यवादिनी।
कुशला सर्वकार्येषु धनवस्त्रसुखान्विता ॥४॥

भावार्थः—यदि एकादश भाव में राहु हो तो स्त्री सदाचारिणी, सुन्दरी और सत्यबोलने वाली होती है। वह सब कार्य में निपुणा, धन तथा वस्त्रादि सुख से युक्ता होती है ॥४॥

लाभस्थितश्चेत्खलुसैंहिकेयो नरं नरेन्द्रेण समं करोति।
हिरण्य-गोभूधनसञ्चयं च शत्रुक्षयं पुत्रभयं तथैव ॥५॥

भावार्थः—वर्षलग्न से एकादशभाव में राहु हो तो उस वर्ष में मनुष्य राजा के समान सुख भोगनेवाला होता है। और गो, पृथ्वी तथा धन का सञ्चय, शत्रु का क्षय और पुत्र का भय रहता है ॥५॥

द्वादश भावस्थ राहुफल—

तमो द्वादशे दीनतां पार्श्वशूलं प्रयत्ने कृतेऽनर्थतामातनोति ।
खलैर्मित्रतां साधुलोके रिपुत्वं चिरामे मनोवाञ्छितार्थस्य सिद्धिम् ॥१॥
व्यये स्थिते सोमरिपौ मनुष्यो धर्मार्थहीनो बहुदुःखतप्तः ।
कान्ताविमुक्तश्च विदेशवासी सुखैश्च हीनः कुनखी कुवेषः ॥२॥
रासः स्थितो यदा यस्य खर्चखाने भवेत्तदा ।
कलहप्रियबेकारः कर्जमन्दश्च मुफ्लसः ॥३॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वादशभाव में राहु हो तो वह मनुष्य धर्म और धन से हीन, कलहप्रिय, व्यर्थ घूमकर समय नष्ट करनेवाला, अनेक प्रकार से पीड़ित, स्त्री सुख से वञ्चित, तथा ऋण से बोझिल रहता है। उद्योग करते रहने पर भी उसको सिद्धि प्राप्त होती नहीं है। सज्जनों से द्वेष और दुर्जनों से मित्रता रखता है ॥१–३॥

व्यये व्ययाधिका राहौ धनधर्मविवर्जिता ।
परदर्शितमार्गाढ्या जाना पतिसुखोज्झिता ॥४॥

भावार्थः—यदि द्वादशभाव में राहु हो तो वह स्त्री धन, धर्म से हीन, दूसरे के बात पर चलनेवाली अर्थात् अति मन्द बुद्धि वाली, व्यर्थ खर्च करनेवाली पति सुख से रहित होती है ॥४॥

स्थानभ्रंशो भवति पवनस्योदयो द्वादशस्थः
सिंहीपुत्रौ रिपुभयमथो मर्त्यमृत्युं विधत्ते ।
शीर्षे कर्णे व्यथनमुदरे नेत्ररोगो नराणां
लक्ष्मीहानिः स्वजनकलहः कामिनीनां च पीडा ॥५॥

भावार्थः—वर्ष प्रवेशकालिक लग्न से द्वादशभाव में राहु हो तो उस वर्ष में उस मनुष्य को अस्थिरता, वात रोग का उदय, शत्रु का भय, तथा समस्त अंग में पीड़ा अर्थात् मरण तुल्य कष्ट, द्रव्य की हानि, परिजनों में कलह और स्त्री को पीड़ा होती है ॥५॥

प्रथम भावस्थ केतुफल—

यदा केतुर्लग्ने जननसमये बान्धवजनै-
र्महाक्लेशः शश्वद् भयमपि सदा दुर्जनकुलात्।
मनश्चिन्ताधिक्यं प्रभवति कलत्रार्तिरधिका
जनानां वैकल्यं सततमुदरे कष्टमधिकम् ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न में केतु हो तो वह मनुष्य बन्धुओं को क्लेश देनेवाला, दुर्जनों से भय, स्त्री, पुत्रादिकी चिन्ता, व्याकुलता, उदर में कष्ट तथा शरीर में अनेक प्रकार के रोग से पीड़ा होती है ॥१॥

रोगयुक्ता तनौ केतौ पतिक्लेशप्रदायिनी।
शुभदृष्टयुते तत्र पतिपुत्रसुखान्विता ॥२॥

भावार्थः—यदि लग्न में केतु हो तो वह स्त्री रोगिनी और पति को क्लेश से कष्ट देनेवाली होती है। यदि शुभग्रह की दृष्टि से युत हो तो पति पुत्रादि के सुख से युक्ता होती है ॥२॥

प्रथम भावस्थ मुथहाफल—

शत्रुक्षयं मानसतुष्टिलाभं प्रतापवृद्धिं नृपतेः प्रसादम्।
शरीरपुष्टिं विविधोद्यमांश्च ददाति सौख्यं मुथहा तनुस्था ॥३॥

भावार्थः—जिसके वर्ष प्रवेशकालिक लग्न में मुथहा हो तो शत्रु का भय, मन में सन्तोष, पराक्रम की वृद्धि, भूप की कृपा, शरीर में पुष्टि अनेक प्रकार के व्यापार तथा सुख को देने वाली होती है ॥३॥

द्वितीय भावस्थ केतुफल—

मतिर्व्यग्रा नित्यं भवति नृपतेरर्थभवने
तमः पुच्छे धान्यक्षतिरपि कलिर्बान्धवजनैः।
तथा रुक्षा वाणी सदसि निजपक्षार्तिरभितः
स्वभे सद्धे तस्मिन्नमितसुखमर्थश्च भविनाम् ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वितीय भाव में केतु हो उस मनुष्य की बुद्धि व्यग्र होती है, राजा के द्वारा धन-धान्य का नाश तथा कुटुम्बों से विरोध होता है। अपने बन्धुओं को भी कटु वचन बोलकर पीड़ा पहुँचाता है। यदि अपना गृह अथवा शुभग्रह का गृह हो तो सर्वथा सुख और धन का लाभ होता है ॥१॥

धनहीना धने केतौ जाता बन्धुविरोधिनी।
शुभदृष्टयुते तस्मिन् धनबन्धुसुखान्विता ॥२॥

भावार्थः—यदि केतु द्वितीय भाव में हो तो वह स्त्री खजाने से हीना और बन्धुओं से विरोध करने वाली होती है। यदि शुभग्रह से दृष्ट अथवा युत हो तो धनवाली और कुटुम्बसुख से युक्ता होती है ॥२॥

द्वितीय भावस्थ मुथहाफल—

उत्साहतीर्थागमनं यशश्च स्वबुद्धिसम्माननृपाश्रयश्च।
मिष्टान्नभोगी तनुपुष्टिकान्ति स्यादर्थभावे मुथहा यदि स्यात् ॥

भावार्थः—वर्ष लग्न से द्वितीय भाव में मुथहा पड़े तो उस वर्ष में उत्साह, तीर्थगमन और कीर्ति प्रदान करने वाली होती है तथा अपनी बुद्धि से राजदरबार में सम्मान, मिष्टान्न भोजन रुचि, शरीर में पुष्टि और सौन्दर्य होता है ॥३॥

तृतीय भावस्थ केतुफल—

तृतीये चेत् केतुर्भवति सुखहेतुस्तनुभृतां
धनानां भोगानां परममहसां चापि जनने।
विनाशः शत्रूणां प्रवरसमरे बाहुयुगले
व्यथाभीतिश्चिन्ता निजसुहृदि पीडा च परितः ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से तृतीयभाव में केतु हो तो सुख, धन [illegible] काम, भोग और बल को बढ़ाने वाला होता है। तथा शत्रुओं का नाश कर[illegible] और अपने भुज में पीड़ा, भय, उद्वेग एवं परिजन को कष्ट रहता है ॥१॥

सधना सहजे केतौ रिपुर्गवविनाशिनी।
सुख-सन्तानसंयुक्ता जाताऽनुजसुखोज्झिता ॥२॥

भावार्थः—यदि तृतीय भाव में केतु हो तो वह स्त्री धनवाली, शत्रु को न[illegible] करने वाली, सुख और सन्तान से संयुक्ता किन्तु छोटे भाई से हीना होती है॥[illegible]

तृतीय भावस्थ मुथहाफल—

पराक्रमाप्तिस्तयशः सुखानि सौन्दर्यगोब्राह्मणदेवभक्तिः।
सर्वोपकारस्तनुपुष्टिकान्तिनृपाश्रयश्चेन्मुथहा तृतीया ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से तृतीयभाव में मुथहा हो तो पराक्रम से धन, [illegible] और सुख मिलता है, तथा सुन्दरता, गौ ब्राह्मण और ईश्वर में भक्ति होती [illegible] उस वर्ष में परोपकार की भावना, शरीर में पुष्टि और कान्ति रहती है, [illegible] राजा के आश्रय से धन का लाभ होता है ॥३॥

चतुर्थ भावस्थ केतुफल—

सुखे केतुः पुंसां भवति नहि मातुः सुखमलं
सुहृद्वर्गादेव व्रजति विलयं पैतृकधनम्।
स्वगेहे नो वासः सपदि च निवासेन कलहो
निजोच्चे स्वक्षेत्रे स तु भवति बन्धोः सुखमलम् ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से चतुर्थभाव में केतु हो तो उसको माता से विशेष सुख नहीं होता है। तथा मित्रों के द्वारा पैतृक धन का नाश होता है। यदि अपने गृह या उच्च में केतु हो तो बन्धुओं से सुख होता है और अधिक समय व्यग्रता से युक्त हो कर परोसियों से सर्वदा कलह करता है तथा अपने घर में वास नहीं होता है ॥१॥

सुखे केतौ प्रजातायाः नहि मातृसुखं भवेत्।
यौवने जायते कष्टं पितृवित्तं विनश्यति ॥२॥

भावार्थः—यदि केतु चतुर्थ भाव में हो तो उस स्त्री को माता से सुख नहीं होता। तथा यौवनावस्था में कष्ट और पिता का उपार्जित धन नष्ट होता है ॥२॥

चतुर्थ भावस्थ मुथहाफल—

शरीरपीडा रिपुभीः स्ववर्गे—वैरं मनस्तापविरोधिता च।
स्यान्मुन्थहायां सुखभावगायां जनापवादो भयदुःखवृद्धिः ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से चतुर्थभाव में मुथहा हो तो अङ्ग में पीड़ा, शत्रु से भय, अपने जनों में शत्रुता, मानसिक व्यथा और विरोध की उत्पत्ति होती है। तथा उस वर्ष में लोगों में अपवाद और भय तथा दुःख की वृद्धि होती है ॥३॥

पंचम भावस्थ केतुफल—

यदा राहोः पुच्छे भवति किल सन्तानभवने
सहोत्थानां शस्त्रक्षतजनितकष्टं हि बहुधा।
स्वबुद्ध्या पीडापि प्रभवति जनानामतितरां
तथाऽपत्यादल्पं सुखमनुदिनं तत्कलहतः ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से पञ्चमभाव में केतु हो उसके सहोदरों को शस्त्राघात से कष्ट, अपनी बुद्धि पर खेद, पुत्रों के साथ कलह अतएव पुत्र से अल्प सुख होता है अथवा अधिक पुत्र नहीं होता है ॥१॥

सुते स्वल्पसुता केतौ सोदरक्लेशदायिनी।
कुशला गृहकार्येषु कुबुद्धिः कलहप्रिया ॥२॥

भावार्थः—यदि पञ्चम भाव में केतु हो तो वह स्त्री थोड़े पुत्रवाली, सहोदर को कष्टदेने वाली और गृहकार्य में कुशला तथा मलिन बुद्धि और झगड़ालू होती है ॥२॥

पंचम भावस्थ मुथहाफल—

यदीन्थिहा पञ्चमगाब्दवेशे स्वबुद्धितोऽर्थात्मजधर्मलाभः।
प्रतापवृद्धिर्विविधो विलासो देवद्विजार्चा नृपतेः प्रसादः ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से पञ्चमभाव में मुथहा हो तो अपनी बुद्धि से धन, पुत्र और धर्म का लाभ, पराक्रम की वृद्धि, अनेक प्रकार के विलास, देवता और ब्राह्मण में भक्ति तथा राजा की कृपा होती है ॥३॥

षष्ठ भावस्थ केतुफल—

तमःपुच्छे षष्ठे जननसमये मातुलकुलात्
सदा मानाल्पत्वं प्रभवति चतुष्पात्सुखमलम् ।
तथाऽऽरोग्यं व्याधिक्षय उत धनानामपचयः
प्रचण्डारेर्नाशः सपदि समरे वादकरणात् ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से षष्ठभाव में केतु हो तो मातृकुल से अल्प सम्मान, चौपायों से सुख, स्वल्पधन, व्याधि का नाश और सदा निरोग रहता है, तथा विवाद करने में शत्रुओं का नाश होता है ॥१॥

रिपुभावगते केतौ रिपुरोगविवर्जिता ।
भूमि-गोधनसम्पन्ना तुच्छचित्ता प्रजायते ॥२॥

भावार्थः—यदि षष्ठभाव में केतु हो तो वह स्त्री शत्रु और रोग के भय से हीना होती है। और भूमि, गो आदि धन से सम्पन्न तथा मलिन हृदया होती है ॥२॥

षष्ठ भावस्थ मुथहाफल—

कृशत्वमङ्गेषु रिपूदयश्च रुजो भयं तस्करतो नृपाच्च ।
कार्यार्थनाशो मुथहारिगा चेद् बुद्धेर्विवृद्धिः सुकृतेऽनुतापः ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से षष्ठभाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में दुर्बलता शत्रु का उदय, रोग भय, राजा और चोर का भय, कार्य और द्रव्य की हानि, बुद्धि की वृद्धि और शुभ कार्य में भी पश्चात्ताप होता है ॥३॥

सप्तम भावस्थ केतुफल—

तमःपुच्छे नारीभवनमुपयाते जनिमतां
भवेन्मार्गाद्भीतिर्जलजनितभीतिश्च परमा।
परावृत्तार्थानां प्रभवति विरामोऽलिभवने
सदा कान्ताकष्टं व्ययचय वृतार्थामलसुखम् ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से सप्तम भाव में केतु हो तो मार्ग और जल से भय, वृश्चिक राशि में हो तो धन का नाश, स्त्री को कष्ट, व्यर्थ खर्च और धन से शरीर सुख उत्तम रहता है ॥१॥

मदे केतौ प्रजाताया मार्गचिन्ता रिपोर्भयम्।
पतिकष्टं स्वनाशो वा व्यग्रता हृदये सदा ॥२॥

भावार्थः—यदि सप्तम भाव में केतु हो तो उस स्त्री को मार्ग में शत्रु का भय, पति को पीड़ा अथवा धन का नाश और सर्वदा व्यग्र रहती है ॥२॥

सप्तम भावस्थ मुथहाफल

कलत्रबन्धु-व्यसनारिभीतिरुत्साहभङ्गो धन-धर्मनाशः।
द्यूनोपगा चेन्मुथहा तनोः स्याद् रुजो मनामोहविरुद्धनष्टाः ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से सप्तम भाव में मुथहा हो तो उस मनुष्य को स्त्री कष्ट, शत्रु का भय, उत्साहभङ्ग, धन और धर्म की हानि, रोग और मनोमोह विरुद्ध होता है ॥३॥

अष्टम भावस्थ केतुफल—

यदा केतौ रन्ध्रे जननसमयेऽर्शोदिजनितं
गुदे कष्टं नित्यं प्रभवति पशूनामपि भयम्।
स्ववित्तानां रोधः खलु मिथुनकन्यालयजवृषे
तदासिद्धिर्द्रव्याणां क्षितिपतिकुलादेव भविनाम् ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से अष्टम भाव में केतु हो उस मनुष्य को बवासीर आदि रोग से पीड़ा, पशुओं का भय, धन की अप्राप्ति होती है। यदि केतु वृश्चिक, कन्या, मेष, वृष या मिथुन में हो तो धन का लाभ होता है ॥१॥

गुह्येरोगभयं रन्ध्रे केतौ कष्टं च भर्तरि।
धनवाहनलाभश्च प्रजातायाः प्रजातये ॥२॥

भावार्थः—यदि केतु अष्टम भाव में स्थित हो तो उस स्त्री को गुप्ताङ्गों में रोग भय, पति को कष्ट, धन और वाहन का लाभ होता है ॥२॥

अष्टम भावस्थ मुथहाफल—

रुजोभयं तस्करतो विनाशो धर्मार्थयोर्दुर्व्यसनामयश्च।
मृत्युस्थिता चेन्मुथहा नराणां बलक्षयं स्याद् गमनं च दूरे ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से अष्टम भाव में मुथहा पड़ी हो तो उस वर्ष में उस मनुष्य को रोग और चोर का भय, धर्म तथा अर्थ का नाश, दुर्व्यसन, बल का क्षय और दूरगमन होता है ॥३॥

नवम भावस्थ केतुफल—

तमःपुच्छे भाग्यं गतवति सुतार्थस्तनुभृतां
सदा म्लेच्छाल्लाभः खलु निखिलकष्टापहरणम् ।
सहोत्थानां कष्टं बहुविधगदो बाहुयुगले
तपश्चर्या-दानप्रभव उपहासश्च सततम् ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से नवम भाव में केतु हो तो पुत्र और धन पूर्ण होता है यवनादि द्वारा भाग्योदय और कष्टों का नाश होता है । तथा सहोदरों को पीड़ा, अपने हाथ कष्ट और तपस्या, दान में उपहास होता है । अर्थात् धर्मकार्य और दानादि से विमुख रहता है ॥१॥

सुपुत्रा धर्मगे केतौ रिपुरोगविवर्जिता ।
नीचाल्लब्धधना जाता तपोदानरता सदा ॥२॥

भावार्थः—यदि नवम भाव में केतु हो तो वह स्त्री उत्तम पुत्रवती, शत्रु और रोग से हीना, नीच जाति के लोगों से धन का लाभ करनेवाली, तपस्या और दानादि सत्कार्य में तत्पर रहती है ॥२॥

नवम भावस्थ मुथहाफल—

स्वामित्वमुच्चोपपदं नृपेभ्यो धर्मोत्सवः पुत्रकलत्रसौख्यम् ।
देव-द्विजार्चा परमं यशश्च भाग्योदयो भाग्यगतेन्थिहा चेत् ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से नवम भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में राजदरबार में उच्च अधिकार, घर में धर्मकार्य निमित्त उत्सव, पुत्र और स्त्री से सुख, देवता और ब्राह्मण में भक्ति तथा सुयश और भाग्योदय होता है ॥३॥

दशम भावस्थ केतुफल—

तमःपुच्छे जन्तोर्दशमभवने यस्य जनने
पितुः कष्टं नित्यं प्रभवति कुरूपत्वमथ वा।
अवश्यं दौर्भाग्यं तुरगगजगोभिर्भयमलौ
वृषे षष्ठे मेषे व्रजति विलयं शत्रुपटली ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से दशमभाव में केतु हो तो वह मनुष्य पिता के सुख से हीन, कुरूप और भाग्यहीन, तथा घोड़ा हाथी और बैलों से भय हो। यदि केतु वृष, मेष, वृश्चिक या कन्या राशि में हो तो शत्रुओं का नाश होता है ॥१॥

सकष्टा कर्मगे केतौ जाता तातसुखोज्झिता।
कन्याराशिगते तत्र धनधान्यसुखान्विता ॥२॥

भावार्थः—यदि दशम भाव में केतु हो तो वह स्त्री कष्टवाली और पिता के सुख से हीना होती है। यदि कन्याराशिगत केतु हो तो धन-धान्यादि सुख से युक्ता होती है ॥२॥

दशम भावस्थ मुथहाफल—

नृपप्रसादं स्वजनोपकारं सत्कर्मसिद्धिं द्विज-देवभक्तिम्।
यशोऽभिवृद्धिं विविधार्थलाभं धत्तेऽम्बरस्था मुथहा पदाप्तिम् ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से दशमभाव में मुथहा हो तो राजा की कृपा, परिजनों में उपकारिता, सत्कर्म की सिद्धि, देवता और ब्राह्मण में भक्ति तथा उस वर्ष में धन और यश की वृद्धि होती है ॥३॥

एकादश भावस्थ केतुफल

शिखी लाभस्थाने जनुषि भविनां भाग्यमधिकं
प्रभाधिक्यं विद्या सततमनवद्या कृतिरपि ।
प्रशस्तं वस्त्रं च प्रभवति गुदे कष्टमनिशं
तथा नानार्थाप्तिः परमविकला सन्ततिततिः ॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से एकादश भाव में केतु हो तो उत्कृष्ट भाग्य प्रतिमा की अधिकता, उत्तम विद्या और यश तथा मूल्यवान् वस्त्रों का लाभ होता है। उसे सब प्रकार से लाभ होता है और सन्ततिवर्ग विकल होता है तथा अपने गुप्ताङ्गों (गुदामार्गादि) में कष्ट होता है ॥१॥

लाभे लाभवती केतौ सुभाग्या प्रियभाषिणी ।
सुवेशा शास्त्रतत्त्वज्ञा निपुणा सर्वकर्मसु ॥२॥

भावार्थः—यदि एकादश भाव में केतु हो तो वह स्त्री सब कार्य में लाभ करनेवाली, सौभाग्यवती, प्रियवचन बोलनेवाली, सुन्दर वेश तथा शास्त्र के मर्म को जाननेवाली और निपुणा होती है ॥२॥

एकादश भावस्थ मुथहाफल—

यदीन्थिहा लाभगता विलासो सौभाग्यमैश्वर्यमनःप्रसादः ।
भवन्ति राजाश्रयतो धनानि सन्मित्रपुत्राभिमताप्तयश्च ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से एकादश भाव में मुथहा हो तो विलास, सौभाग्य, ऐश्वर्य, मन में प्रसन्नता तथा राजा के आश्रय से धन की प्राप्ति और उत्तम मित्र एवं पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है ॥३॥

द्वादश भावस्थ केतुफल—

तथाऽपायागारं जनुषि यदि केतावुपगते
महापीडा गुह्ये पदनयनयोर्नाभिनिकटे ।
जयो वादे नित्यं नरपतिवदेवामलसुखं
नराणां कल्याणं भवति न च मातुः सहजतः॥१॥

भावार्थः—जिसके जन्मलग्न से द्वादश भाव में केतु हो तो गुदमार्ग, आँख आदि शरीर में पीड़ा, मामा से सुख का अभाव होता है। तथा वादविवाद में विजय और राजा के समान सुख भोगनेवाला होता है ॥१॥

व्यये पदाक्षिरुक् केतौ वृथाव्यर्थव्ययकारिणी ।
पत्यरिष्टकरी नारी स्वारिवविनाशिनी ॥२॥

भावार्थः—यदि द्वादश भाव में केतु हो तो वह स्त्री पैर और आँख में रोगवाली, व्यर्थ खर्च करनेवाली, पति को कष्ट देनेवाली, अपने शत्रु को नाश करनेवाली होती है ॥२॥

द्वादश भावस्थ मुथहाफल—

व्ययोऽधिको दुष्टजनस्य सङ्गो रुजस्तनौ विक्रमतस्त्वसिद्धिः ।
धर्मार्थहानिर्मुथहा व्ययस्था यदा भवेत्सज्जनतोऽपि वैरम् ॥३॥

भावार्थः—वर्षलग्न से द्वादश भाव में मुथहा हो तो उस वर्ष में अधिक व्यय, दुर्जनों का साथ, अङ्ग में रोग, पराक्रम करता है फिर भी कार्य सिद्ध नहीं होता और धर्म तथा धन का नाश एवं सज्जनों से भी शत्रुता होती है ॥३॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति—

पराशर उवाचः—

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।
एषां धात्रा वरो दत्तः "पूजिताः पूजयिष्यथ" ॥१॥
मानवानां ग्रहाधीना उच्छ्रायाः पतनानि च ।
भावाऽभावौ च जगतां तस्मात् पूज्यतमा ग्रहाः ॥२॥

भावार्थः—जिस व्यक्ति के जो ग्रह अनिष्ट स्थान में (प्रतिकूल) हो उसे उस ग्रह की पूजा अवश्य करनी चाहिए । क्योंकि विधाता ने ग्रहों को वरदान दिया है कि—पूजा करनेवालों की तुम पूजा करना । मनुष्यों की उन्नति और अवनति एवं संसार की सृष्टि और प्रलय ग्रहों के आधीन रहती है इसलिए सब देवों में विशेषकर ग्रह ही पूजनीय हैं ॥१-२॥

सूर्य के लिये—

दानवस्तुः—माणिक्य, गेहूँ, गुड़, सवत्सागो, कमलपुष्प, कसूँमी वस्त्र, लाल चन्दन, सुवर्ण और ताम्र । मन्त्र—ॐ घृणिः सूर्यायनमः । जप संख्या—७००० । रत्न में—माणिक धारण कराना चाहिए ।

चन्द्र के लिए—

दानवस्तुः—वंशपात्र, चावल, श्वेतवस्त्र, श्वेत चन्दन, चाँदी, चीनी, वृषभ काँस्यपात्र में घृत, दधि, कपूर और मोती । मन्त्र—ॐ सों सोमायनमः । जप संख्या—११००० । रत्न में—मोती धारण ।

मङ्गल के लिये—

दानवस्तुः—मूँगा, मसूर, गेहूँ, रक्तवृषभ, गुड़, लाल चन्दन और लाल कनेर के फूल, सुवर्ण, ताम्र, केसर, कस्तूरी। मन्त्र—ॐ अं अंगारकायनमः॥ जप संख्या—१०००० । रत्न में—मूङ्गा धारण।

बुध के लिये—

दानवस्तुः—कांस्यपात्र, हरितवस्त्र, हस्ती, घृत, मूङ्ग, गौ, सुवर्ण, दासी, पुष्प, कपूर, अनेक फल, षट्रस भोजन, रत्न। मन्त्र—ॐ बुं बुधायनमः॥ जप संख्या—९००० । रत्न में—पन्ना धारण करें।

गुरु के लिये—

दानवस्तुः—पीताधान्य,पीतवस्त्र,सुवर्ण, पुखराज, घृत, पीत पुष्प और फल, हल्दी, अश्व, मधु, शर्करा, लवण, भूमि और छत्र। मन्त्र—ॐ बृं बृहस्पतयेनमः। जप संख्या—१९००० । रत्न में—पुखराज धारण।

शुक्र के लिये—

दानवस्तुः—चावल, श्वेत चन्दन, चित्र, वस्त्र, रजत, हीरा, श्वेताश्व, घृत सुगंध, द्रव्य, शर्करा, गोधूम। मन्त्र—ॐ शुं शुक्रायनमः। जप संख्या—१६००० रत्न में—हीरा धारण करना।

शनि के लिये—

दानवस्तुः—माषान्न, तैल, तिल, काला वस्त्र, कुरथी, लोहा, भैस, वा कृष्ण धेनु, कस्तूरी, सुवर्ण, नीलम, और दक्षिणा। मन्त्र—ॐ शं शनैश्चरायनमः। जप संख्या—२३००० । रत्न में—नीलम धारण करना।

राहु के लिये—

दानवस्तुः—सप्तधान्य, नील वस्त्र, गोमेद, तिल, तैल, लोहा, रत्न, कम्बल, सतिलताम्रपात्र, गेहूँ, अश्व और अभ्रक। मन्त्र—ॐ रां राहवेनमः। जप संख्या १८००० । रत्न में—गोमेद धारण।

केतु के लिए—

दानवस्तुः—कम्बल, कस्तूरी, वैदूर्य्यमणि, तिल, तैल, कृष्ण फल और काला वस्त्र, लोहा, बकरा, और शस्त्र। मन्त्र—ॐ कें केतवेनमः। जप संख्या १७००० । रत्न में—लहसुनियां धारण करना चाहिये।

मुथहा के लिये—

दानवस्तुः—तण्डुलान्न, सुवर्ण, कांस्यपात्र, श्वेत वस्त्र और पुष्प, घृत, और दक्षिणा। जप संख्या—११००० ।

प्रत्येक ग्रह के दान के लिए अलग-अलग समय नियत है। कहा भी है—"अकाले नैव कर्तव्यं दातुर्वैप्राणघातकः।" अर्थात् नियत समय पर दान का महत्त्व विशेष होता है इससे अन्य काल में दान शुभ नहीं है। अतः सूर्य तथा शुक्र का सूर्योदय काल में, चन्द्रमा और बृहस्पति का संध्या काल में, मङ्गल का दान २ घड़ी दिन रहते, बुध का दान ५ घड़ी दिन रहते, शनि का दान मध्याह्न समय में एवं राहु और केतु का दान रात्रि में करना उत्तम है।

अनेक ग्रन्थरत्नानां सारं सङ्गृह्य यत्नतः।
कृतोऽयं वासुदेवेन ग्रहाणां फलदर्पणः॥
रामचन्द्रनखैस्तुल्ये शुभे विक्रमवत्सरे।
भाद्रकृष्णदलेऽष्टम्यां पूर्तिं पुण्यतिथावगात्॥

इति ग्रहफलदर्पण।

मुद्रक : अरुणोदय प्रेस, ईश्वरगंगी, वाराणसी।